

खुद बदलें अपनी किस्मत

अशोक इन्द्र



डायनंद प्रकाश

समर्पण

यह पुस्तक मैं अपने पिता स्वर्गीय श्री एस. एन. पांडे और मेरी माता श्रीमती आर. पांडे को समर्पित करता हूँ क्योंकि आज मैं जिस मुकाम पर पहुँचा हूँ उनके कारण ही पहुँचा हूँ।

ISBN :

©

प्रकाशक : डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.
X-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II
नई दिल्ली-110020

फोन : 011-40712100

फैक्स : 011-41611866

ई-मेल : sales@dpb.in

वेबसाइट : www.dpb.in

संस्करण : 2010

मुद्रक : आदर्श प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली - 32

KHUD BADLEIN APNI KISMAT

By : AshokIndu

पाठकों के लिए

इस धरती पर कोई ऐसी चीज जिसके बारे में पूर्वानुमान करना सबसे मुश्किल है तो वह है “जीवन”, जिसे हम जी रहे हैं। हमारी जिंदगी में एक के बाद एक होने वाली घटनाओं को जब हम नहीं समझ पाते हैं तो हम उसे ‘नियति’ करार देते हैं। लेकिन इसी का दूसरा पहलू यह है कि जब हम असफल होते हैं तभी केवल नियति शब्द का इस्तेमाल करते हैं, उपलब्धियों के लिए हम कभी भी इसका प्रयोग नहीं करते। नियति से हम मुंह नहीं मोड़ सकते, हमें इसके सर्वोत्तम पहलू को देखना चाहिए और अच्छा काम करते हुए सदैव आगे की ओर बढ़ने की प्रवृत्ति रखना चाहिए, जो हमें बेहतर परिणाम और संतुष्टि दे सकता है। बाकी सारी प्रोत्साहक चीजें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तौर पर सामने आती रहती हैं।

जीवन में कोई भी चीज आसानी से नहीं मिलती। चीजों की प्राप्ति के संबंध में जीवन में हमें कुछ संकेत मिलते हैं और उस संकेत को समझकर हम पर्याप्त मेहनत से उसे हासिल करने की चेष्टा करते हैं, जिसमें कुछ जोखिम भी हमें लेना पड़ता है। बाकी सब चीजों को नियति के भरोसे छोड़ दो। नियति ईश्वर का वरदान है और कुछ हद तक हमारे परिश्रम का हिस्सा। मेरे लिए यह अनुपात (नियति और परिश्रम) 50-50 का है। कुछ मामलों में यह 60-40 का हो सकता है तो कुछ में 40-60 का भी हो सकता है। लेकिन इतना तय है कि बिना कठिन परिश्रम के नियति का वरदान हासिल करना बड़ा मुश्किल है।

आप कितने भी भाग्यशाली हों बावजूद इस के कोई भी चीज सीधे तौर पर आपको हासिल नहीं होती है। जब तक जीवन है, तब तक समस्याएं रहेंगी। जिंदगी में समस्याओं को निबटाने के दो तरीके हैं। पहला सरल उपाय है, समस्याओं की ओर से आंख बंद कर लेना और इंतजार करना कि वे खुद-बखुद सुलझ जाएंगी। हालांकि ऐसा होने की दूर-दूर तक संभावना

नहीं रहती फिर भी हम कई बार ऐसा करते हैं। दूसरा तरीका है समस्याओं से दो-दो हाथ करने का, योजनाबद्ध तरीके से, बहादुरी से उसका मुकाबला करने का जिससे उस समस्या को स्थायी तौर पर निबटाया जा सके।

आपको इस बात को याद रखना होगा कि आज तक बिना चाभी का कोई ताला नहीं बनाया गया है। ठीक इसी तरह किसी निश्चित समय में आप एक से ज्यादा काम पूरी गुणवत्ता से नहीं कर सकते। लेकिन कुछ ही लोग ऐसे हैं जो अपने दिमागी संतुलन को भंग नहीं होने देते हैं।

अभी जो किताब आपके हाथ में है वह आपके लिए खुद को जानने-समझने और दूसरों के ध्यानाकर्षण के लिए मददगार साबित होगी। इस किताब में बहुत सारे विचारों को आपके समक्ष प्रकट किया गया है। मैं उम्मीद करता हूँ कि अब आप अपनी जिंदगी एक अलग तरीके से जीने में कामयाब हो सकेंगे। आप कुछ परिवर्तन महसूस करेंगे और मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि निश्चित तौर पर ऐसा होगा। मैं आपके अच्छे और सफल पाठन की कामना करता हूँ। आप मुझ से संपर्क कर सकते हैं।

edustrust@rediffmail.com

-अशोक इन्द्र

लेखकीय...

हम लोग इन भावनाओं के साथ गहरे तौर पर जुड़ चुके हैं कि सफलता कुछ असाधारण व्यक्तियों को ही मिल पाती है, जिससे हम पूरी तरह अछूते हैं और ईश्वर ने हम पर कभी ऐसी दया दिखाई ही नहीं। बचपन से इस विचार की विश्वसनीयता के साथ ही हम बड़े होते हैं और दूसरों से कुछ अलग हट कर करते हैं। हम इस बात को भूल जाते हैं कि ईश्वर हर किसी पर समान रूप से दयाभाव रखता है और उसे बांटता भी समान रूप से ही है। यह हमारी सोच ही है, जो चीजों में भिन्नता पैदा करती है। इस धरती पर कोई भी आदमी इस विशेषता के साथ जन्म नहीं लेता कि सब चीजें उसे जन्मजात तौर पर ही हासिल हो सकें। चीजों पर अधिकार के लिए आदमी में स्वयं उस तरह की गुणवत्ता की जरूरत होती है।

मेरे कथन भले ही आपको रूखे लग रहे हों कि मैं बिना आपको जाने-समझे कैसे इस तरह से बोल सकता हूँ। अपनी भीतरी ताकत को पहचानने के लिए इस किताब का सहारा आप लेते हैं तो मैं गलत नहीं हो सकता हूँ अन्यथा यह एक काल्पनिक किताब साबित हो सकती है, आपकी शक्तियों को उभारने वाली पुस्तक नहीं। वैज्ञानिक सिद्धांत से यह साबित होता है कि गर्म हवाएं ऊपर की ओर उठती हैं, जिसे भरने के लिए आस-पास से ठंडी हवाएं चलती हैं। आपकी विजय यात्रा में कहीं न कहीं गैप जरूर है और इतना तय है कि इस किताब के पृष्ठों को समझकर आप उस गैप को पाट सकेंगे।

आपको यह समझ लेना चाहिए कि यह किताब आपको एकाएक नीचे से ऊपर नहीं उठा देगी लेकिन इतना तय है कि यह किताब आपकी कमजोरियों को दूर करने के साथ आपकी क्षमताओं को बढ़ाकर आपके उद्देश्य को सफल बनाने की दिशा में मददगार साबित होगी। कोई व्यक्ति किसी को सफलता के मुकाम तक नहीं पहुंचा सकता लेकिन उसे

असफल होने में मददगार साबित जरूर हो सकता है। अपनी प्रगति को मापने का सबसे बेहतर तरीका है कि आप अपनी आंतरिक ऊर्जा को पहचानते हुए समस्याओं का निदान किस तरह से कर पाते हो। ऐसी कोई भी समस्या हो ही नहीं सकती जिसका कोई समाधान न हो। ईश्वर भी हमारी मदद तब ही करते हैं जब हम कठिन परिश्रम करते हैं लेकिन हम कठिन परिश्रम तब जाकर शुरू करते हैं जब हमें लगता है कि हम असफल हो रहे हैं और ईश्वर हमारी मदद नहीं कर रहे। अपने सामने आने वाली समस्याओं से कभी भी मुंह मत मोड़ो। हमेशा खुद पर विश्वास बनाए रखो और यह सोचो कि आप जीतने के लिए पैदा हुए हैं और कभी भी असफल नहीं हो सकते। जो भी काम आप करते हैं उसे एक चुनौती की तरह से स्वीकार करते हुए सही तरीके से निभाएं। स्वयं को कभी भी आप कमरे में बंद न रखें। समस्याओं को तुरंत हल करने के उपाय सोचें वरना वे बढ़ती ही जाएंगी, जिसे बाद में मैनेज कर पाना बड़ा मुश्किल हो जाएगा।

हमेशा विश्वास रखो कि जिंदगी ने आपको वो सबकुछ दिया है जिसकी आपको जरूरत है लेकिन आपको जो चाहिए वह आप हासिल नहीं कर पाए। जो लोग ऐसा समझते हैं कि ढेर सारा धन व मर्सिडीज या फरारी कार होना ही जिंदगी का सुख है, तो वह गलत है क्योंकि कई उदराहरण ऐसे हैं, जब लोगों ने इन सब चीजों का बाद में त्याग कर दिया। (इस संबंध में मैं रॉबिन शर्मा और रवि सुब्रह्मण्यम की प्रशंसा व इज्जत करता हूँ)।

जिंदगी में किसी भी उपलब्धि से आपको खुशी मिलनी चाहिए जिससे आपको आगे समस्याओं से निबटने का उत्साह मिल सके। प्रकाश का आनंद जानने के लिए अंधेरे का आनंद लीजिए। इसी तरह असफलता को आप सहज भाव से लेंगे तो सफलता का जश्न मनाने में लोग वाकई में आपका साथ देंगे। इलैक्ट्रिक बल्ब का आविष्कार करने के दौरान आइंस्टीन 16 बार असफल रहे थे। एक बार रिपोर्टों ने जब उनसे पूछा कि आप 16 बार असफल रहे तो आइंस्टीन ने हंसते हुए जवाब दिया था कि इतना तो मैं अब जान गया हूँ कि इन 16 तरीकों से तो बल्ब नहीं बनाया जा सकता है। हर व्यक्ति आइंस्टीन की तरह भाग्यशाली नहीं हो सकता, पर आप ऐसा नहीं कह सकते कि आप नहीं हैं। आपको यह समझना होगा कि असफलता का जश्न जरूरी है। यह जिंदगी की सच्ची प्रेरणा है।

हमें खुद को दूसरों से कमतर नहीं आंकना चाहिए। एक समय था जब स्टील का पर्याय 'टाटा' और जूते का पर्याय 'बाटा' को समझा जाता था। लेकिन आज आप देखिए कि परिस्थितियां कितनी बदल चुकी हैं। सैकड़ों दूसरे ब्रांड भी बाजार में आ चुके हैं जिनसे उन्हें कड़ी चुनौती मिल रही है। कई दशकों से इन चीजों का उत्पादन करने का उनका एकाधिकार अब खत्म हो चुका है। एक बार आप सफल हो गए तो इसका मतलब यह नहीं कि आप हर बार सफल हो ही जाएंगे। इसके लिए लगातार प्रयास करते रहना पड़ता है।

“बार-बार व्यवसाय बदलने वाला कभी धनी नहीं होता।” सामान्यतया इस वाक्य का प्रयोग निगेटिव तौर पर किया जाता है, लेकिन कई बार शब्दों के बदलाव से भी चीजें बदल जाती हैं। एक समय था जब कि संस्था विशेष में कई वर्ष गुजारने पर उसके प्रति दर्शायी गई निष्ठा के लिए लोगों को उसका पुरस्कार मिलता था। हमें यह याद रखना होगा कि बिताए गए वर्षों की संख्या का अनुभव दो तरीकों से हासिल होता है, जहां कोई व्यक्ति अपने पहले वर्ष हासिल किए अनुभवों को कुल वर्षों से गुणा करके प्राप्त करता है। जिंदगी न तो इतनी बड़ी है और न ही इतनी छोटी है कि किसी तरह के प्रयोगों को ज्यादा तवज्जो दी जा सके। दोनों के संयोजन से आशातीत परिणाम मिलते हैं।

भय की आशंका से हम कोई नया काम शुरू करने से हिचकिचाते हैं। हम अपनी आधारभूत गुणवत्ता को भूल जाते हैं, जिसके साथ ही हम पैदा हुए हैं, यहां तक कि हमने जो उम्मीदें पाल रखी थीं उससे बाहर नहीं निकल पाते, यह हमारे लिए असफलता नहीं बल्कि अनुभव की एक सीख है। हममें से ज्यादातर अपने कार्यों का शीघ्र परिणाम चाहते हैं जबकि जिंदगी में शीघ्र परिणाम हासिल कम ही होता है। जीवन की राह ही कुछ ऐसी है जिसमें बार-बार हमें परीक्षा देनी पड़ती है।

केवल एक ही चीज ऐसी है जिस पर आपका पूर्ण नियंत्रण होना चाहिए और वह है आपके विचार। देखने-सुनने में यह भले ही आसान लगे पर वाकई में ऐसा कर पाना बड़ा मुश्किल है। हमारा मस्तिष्क प्रकाश से भी ज्यादा तेजी से भागता है कुछ ही क्षणों में वह जयपुर से अमेरिका के व्हाइट हाउस में मि. ओबामा के पास पहुंच जाता है, जो अपने किसी मित्र से बात कर रहे होते हैं या फिर किसी पत्रकार से बात करने के दौरान व्यवधान

डाल रही मक्खी को मार देते हैं। अगर आपने अपने विचारों को काबू में करना सीख लिया है तो आप भी विजेता बन सकते हैं। विचारों पर नियंत्रण होना किसी भी व्यक्ति के लिए वरदान साबित होता है। यह ठीक उसी तरह से काम करता है जैसे किसी नदी से उछलकर बहने वाली अपार जलराशि पर डैम बनाकर उसका हाइड्रो पावर इलैक्ट्रिसिटी के उत्पादन में उपयोग में लाना।

अपनी संपूर्ण ऊर्जा को किसी खास मकसद से एकधारा में ले जाने पर वह आपको निश्चित ही विजेता बना सकती है। जरूरत है तो इस पर आत्मकेंद्रित होने की। एक तय लक्ष्य की प्राप्ति के बाद आपको ऐसा महसूस होगा कि आपको इससे बड़ा लक्ष्य तय करने में कोई कठिनाई नहीं होगी। यह प्रक्रिया आपके अंतिम सांस तक जारी रहनी चाहिए जो आपके लिए सफल यात्रा साबित हो सकती है पर यह आपका पड़ाव नहीं होना चाहिए।

आप अपने-आप में अलग हैं और इसलिए आपको कुछ अलग करना होगा अन्यथा आप इस धरती के आनंद से वंचित रह जाएंगे। उपलब्धियों का आकलन शुरू करो और इस बात को समझो कि आपको क्या चीज सबसे ज्यादा संतुष्टि प्रदान करती है। जीतना और हारना महज मानसिक अवस्थाएं हैं और एक बार आपने जीतने के लिए अपना माइंड सेट कर लिया तो फिर कोई आपको जीतने से रोक नहीं सकता।

अपने जीवन में विभिन्न यात्राओं के दौरान मैंने देखा है कि हर व्यक्ति के भीतर कुछ विशेष कर पाने की क्षमता होती है लेकिन मन के भीतर बैठा हुआ भय उसे कुछ करने नहीं देता है। मैंने अपनी पूर्व किताब : 'व्हाट इफ यू डाई टुमारो', 'क्रैक द शेल दैट कवर्स यू' और 'सक्सस इज़ नॉट बाइ चान्स' में इस बात का जिक्र किया है कि ज्यादातर लोग सफलता के भ्रमजाल से घबरा जाते हैं जबकि आप कदम आगे बढ़ाएंगे तो सफलता खुद-बखुद आपके पास चलकर आएगी।

आपकी मजबूती यही है कि आप अपनी कमजोरियों को समझते हैं और अगर आपको यह नहीं पता तो शीघ्र ही इसे समझ लीजिए। खुद के लिए एक एक्शन प्लान तैयार करके उसे अमल में लाइए और अपनी कमजोरियों को दूर करना सीखिए। अपनी कमजोरियों को मजबूती में बदलिए और यही आपको उम्मीद से बढ़कर परिणाम दिला सकता है।

इस किताब से आपकी यह यात्रा चमत्कारिक प्रतीत होगी। लेकिन इतना आपको याद रखना होगा कि इस किताब को पढ़ने के बाद आपको इन सब चीजों को अमल में लाना होगा और मैं निश्चित रूप से यह कह सकता हूँ कि आने वाला समय आपका होगा। मैं अपने मेल edustrust@rediffmail.com पर आपकी सफलता की कहानियों की प्रतीक्षा करूंगा।

15 फरवरी, 2010

अशोक इन्द्र

पांडे एजुकेशन ट्रस्ट

(क्वालिटी एजुकेशन कंसल्टेंसी सर्विसेज के क्षेत्र में एक विश्वसनीय नाम)

2, पून बाँडी, मॉडल टाउन सी,

मालवीय नगर, जयपुर-302017

राजस्थान (भारत)

विषय सूची

अध्याय-1

जन्मजात विजेता बनिए	15
1.1 अपनी निपुणता को समझिए	17
1.2 सर्वश्रेष्ठ की चाहत	20
1.3 कार्य का आनन्द लीजिए	22
1.4 अपने कार्य में लीन रहना सीखिए	25
1.5 संकल्पवान बनें	27

अध्याय-2

सफलता की आवश्यकता	30
2.1 वास्तविक बनिए	32
2.2 सहज बनिए	34
2.3 नम्र बनिए	37
2.4 व्यक्तिगत ईमानदारी में विश्वास कीजिए	38
2.5 चुकाने की प्रवृत्ति अपनाएं	41

अध्याय-3

अपने नजरिए को कैसे आकार दें	44
3.1 आशावादी बनिए	46
3.2 सकारात्मक परावर्तक बनिए	48
3.3 अपनी गतिविधियों पर नियंत्रण रखें	50
3.4 अक्षमताओं से सीख लीजिए	52
3.5 आभार प्रकट करने का गुण विकसित कीजिए	56

अध्याय-4

स्वयं निर्णय लें	59
4.1 अपनी क्षमताएं बढ़ाएं	62
4.2 कर सकने की क्षमता के प्रति सजग रहें	64
4.3 अपने कार्य में स्पष्टता रखें	65
4.4 स्पष्ट लक्ष्य हो	68
4.5 अपने आपको कम मत आक	69

अध्याय-5

सफलता का स्तंभ	72
5.1 औसत प्रतिमा	74
5.2 कल्पनाशील बनें	76
5.3 आत्म-विश्वास सफलता की कुंजी	78
5.4 भय का दृढ़ता से मुकाबला करो	80
5.5 व्यक्तिगत अस्तित्व कायम रखें	82

अध्याय-6

सफलता की चाबी के गुण	86
6.1 करने की जिद	89
6.2 स्वामीभक्ति	91
6.3 आपसी सहयोग की भावना	94
6.4 परिवर्तन	96
6.5 क्रियाएं	98

अध्याय 7

सफलता के लक्षण	101
7.1 समय की कीमत	103
7.2 सफलता अध्यवसाय	105
7.3 कार्य का आनन्द	106
7.4 सौम्यता का सम्मान	108
7.5 चरित्र की क्षमता	110
7.6 दयालुता की शक्ति	113



अध्याय-1

जन्मजात विजेता बनिए

इस बात को कोई नकार नहीं सकता कि 'असंभव' शब्द केवल शब्दकोष में पाया जाता है। वास्तविक जीवन में इसका कोई मतलब नहीं होता। कभी-कभी किसी व्यक्ति को ऐसा महसूस होता है कि यह दिया गया कार्य उसके बूते से बाहर की बात है लेकिन वही कार्य वह किसी दूसरे समय में जाकर आसानी से पूरा कर लेता है। यह इस बात की ओर इंगित करता है कि हमारी जरूरत और ईमानदारी से की गई कोशिश ने असंभव को संभव में बदल दिया। जिंदगी में इच्छा का होना ऐसा बल है जो हमें किसी भी चीज को हासिल करने में मदद करता है। केवल उस चीज की इच्छा का होना ही काफी नहीं, उसे पाने का जुनून हमारे भीतर होना चाहिए।

जब हम देखते हैं कि किसी ने कोई चीज हासिल कर ली है और हम भी उसे पाना चाहते थे लेकिन उसने हासिल कर ली और हम भी उसे पाना चाहते हैं लेकिन उसमें सफल नहीं हुए तो असफलता के लिए कई सारे बहाने ढूँढ़ निकालते हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि हम अपनी असफलता का विश्लेषण करने में अक्षम हैं और विजेता की कोशिशों का सम्मान करते हैं। केवल यही नहीं, हम इसके लिए अपने भाग्य को भी कोसने से नहीं चूकते; परन्तु हम यह भूल जाते हैं कि भाग्य और नियति उन्हीं की मदद करते हैं जो कुछ करने की इच्छा हैं।

'मैट्रो मैन' के तौर पर पहचाने जाने वाले प्रसिद्ध व्यक्ति ई. श्रीधरन महज एक दिन, महीना या साल में इतनी बड़ी शिखरियत नहीं बने हैं। बल्कि 'कोंकण रेल परियोजना' के मास्टर माइंड यही हैं और इसके पूरा होने तक वे इसके साथ निष्ठा से जुड़े रहे थे। इसे उन्होंने एक चुनौती के रूप में लिया। उन्हें खुद को साबित करने का एक अवसर मिला था

जिसका उन्होंने बेहतर सदुपयोग किया। आपको यह याद होना चाहिए कि रेलवे के पास लाखों इंजीनियर हैं। लेकिन श्रीधरन ने खुद को औरों से अलग साबित किया। मौका मिलने पर आपको भी कुछ कर दिखाना होगा। श्रीधरन ने कोंकण रेलवे प्रोजेक्ट पर ही अपनी दक्षता नहीं साबित की बल्कि, इससे पहले भी वे जिस पद पर थे उसे भी उन्होंने निष्ठा से निभाया था। आपको किसी चमत्कार घटने का इंतजार करने की बजाए परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाना होगा। अधिकतर लोगों की सोच होती है कि वर्तमान में जो करने के लिए उनके सामने है वह उनकी इच्छा और योग्यताओं के मुताबिक नहीं है और वह कुछ विशेष होने का इंतजार करते हैं लेकिन वह दिन कभी नहीं आता।

हमें बचपन से ही यह बताया गया है कि जीवन गुलाब के फूलों की सेज नहीं है। मुझे आज तक इस मुहावरे का मतलब समझ में नहीं आया क्योंकि मैंने एक प्राइमरी स्कूल के शिक्षक से अपनी शुरुआत की और आज मैं एक नहीं, तकरीबन 15-16 बड़े संगठनों को एक साथ संचालित कर रहा हूँ। जब मैं प्राइमरी शिक्षक था तब भी लोग मुझे जानते थे और आज भी वही बात है, बस फर्क पड़ा है तो महज इतना कि मुझे जानने वाले लोगों की संख्या बढ़ गई है।

मैं जहां भी होता हूँ, सर्वोत्तम करने की चाहत रखता हूँ। दूसरों के संदर्भ में आपको अपनी परिस्थिति में फर्क पैदा करना होगा, तब चीजें बेहतर होंगी। इसके लिए आप इंतजार नहीं कर सकते क्योंकि जिंदगी आपको ज्यादा समय नहीं देगी।

जब आप कुछ पाना शुरू कर देंगे तो आपको महसूस होगा कि आपने जिंदगी का बहुत सारा कीमती वक्त गंवा दिया लेकिन तब पछताने के सिवा कुछ नहीं किया जा सकता।

एक सफल व्यक्ति और सामान्य व्यक्ति के बीच जो फर्क है वह शक्ति और ज्ञान का नहीं, बल्कि इच्छाशक्ति का होता है।

अगर आप विजेता बनना चाहते हैं तो कहीं से भी बस शुरुआत भर करने की जरूरत है। आपको यह नहीं भूलना चाहिए कि जो कुछ नहीं करना चाहते वे ही समयाभाव का बहाना बनाते हैं और जो कुछ करते रहते हैं वे स्वयं क्रियाशीलता से जिंदगी को पूर्ण आनंद के साथ जीते हैं। जहां

से भी आपको उचित लगता हो, शुरू कर दीजिए और किसी इंतजार में मत रहिए कि अवसर मिलेगा तब काम शुरू करेंगे।

एक बार आपने सर्वोत्तम देना शुरू किया तो, सच मानिए कि आपकी चाहत आप से दूर नहीं। जिंदगी में उन्हीं को इनाम मिलता है जो अपना कार्य खुद करते हुए स्वयं पर यकीन करते हैं।

कई बार ऐसा होता है कि आपसे कमतर लोग आपसे आगे बढ़ जाते हैं, इससे दुःखी होने की जरूरत नहीं। बिना योग्यता और पूर्ण दक्षता के वे बहुत आगे तक नहीं जा सकते और अगर वे जाते हैं तो इसका मतलब है कि उनमें योग्यता है। आपको इन सब में नहीं उलझना चाहिए और लोगों से बेहतर तरीके से अपना काम निबटाना चाहिए, जो आपको सफलता की ओर ले जाएगा।

न्यूटन की गति के द्वितीय नियम को याद कीजिए: बिना किसी बाहरी बल के कोई वस्तु इधर-उधर नहीं हो सकती है। बाहरी बल लगाने पर कोई वस्तु क्रियाशील होती है पर वह बल लगाना खत्म होने पर फिर से वापस, ऐसा जड़त्व की वजह से होता है। हमारी जिंदगी में भी जड़त्व समा चुका है जो हमें रोकता है। अपने मूल्य को आप पहचानें, केवल खुद को जानिए और बाकी सब चीजों को भुला दीजिए। जिंदगी वास्तव में फूलों की सेज है लेकिन इसके लिए गुलाब आपको खुद ही चुनने होंगे। संभवतः गुलाब के फूल को तोड़ते वक्त आपको उसका कांटा चुभ सकता है और खून भी निकल सकता है, लेकिन वह अस्थायी होगा और फूलों की सेज पर सोना उससे ज्यादा आनंददायक होगा। जिस तरह फूल चुनने में आप कांटों का सामना करते हैं उसी तरह से जिंदगी में आने वाली मुश्किलों का सामना करने के लिए तैयार रहना होगा। भौतिक सुख देने वाले साधन अस्थायी होते हैं इसलिए हमेशा ऐसे साधनों की तलाश करो जो आपको विजेता बना सकें। मेरा विश्वास है कि अगर आप जिंदगी में आने वाली मुश्किलों से निबटते जाएंगे तो आप मजबूत बनेंगे और विजय की ओर अग्रसर होंगे। ये मुश्किलें आपके जीवन का स्वाद भी बदलेंगी।

1.1 अपनी निपुणता को समझिए

एक चीज जो इस दुनिया में बिल्कुल स्पष्ट है वह यह कि आप जिस चीज की शुरुआत कर रहे हैं उसके प्रति विश्वास पैदा करें। अगर आपका

उस पर विश्वास नहीं है तो यह बेवकूफी है क्योंकि तब आपके लिए उसका अस्तित्व ही नहीं है। विश्वास करना सफल पुरुषों का एक बड़ा गुण है। वे उस चीज को अपनी कसौटी पर परखते हैं और उससे जो नतीजा निकलता है, उसके आधार पर आगे बढ़ते हुए पूरी ऊर्जा के साथ उसे पाते हैं।

हममें से ज्यादातर लोग उस हाथी के समान हैं जिसका मालिक उसे एक पतली सी जंजीर से बांध कर रखता है जो उस विशालकाय जानवर के लिए तोड़ना बहुत ही आसान हो सकता है। लेकिन वह ऐसा करता नहीं क्योंकि उसका बचपन से ही दृढ़ नजरिया है कि उसका मालिक उसे जिस जंजीर से बांध रहा है। वह जंजीर उससे अधिक मजबूत है, यहीं से फर्क पैदा होता है और वह हाथी इस बारे में सोचना ही बंद कर देता है कि मैं इस जंजीर को तोड़ भी सकता हूँ। ज्यादातर लोग इसी सोच का शिकार होते हैं और पूरी जिदगी इसी तरह से गुजार देते हैं कि उपलब्धियों को हासिल कर पाना हमारे बस में नहीं है।

सफलता के लिए सबसे पहले आपको स्वयं पर विश्वास करना होगा कि आप ऐसा कर सकते हैं।

जब मैंने अपने अनुभवों को लिखने के बारे में सोचा तो मेरे दिमाग में आया कि इसके तो लिए बहुत ज्यादा रचनाशीलता की जरूरत होगी। आश्चर्यजनक रूप में मैंने अपना डॉक्टरेट रचनाशीलता में ही किया, जिसका विषय था, 'टोरेंस टेस्ट ऑफ क्रिएटिविटी'। मैं रचनाशीलता के हर मानदंड को जानता था फिर भी मुझे डर था कि कहीं मेरे आकलन के मुताबिक परिणाम नहीं मिला तो क्या होगा और इसी बात से मैं निराश हो जाता था। मैंने अपने पिछले कार्य से इस्तीफा देकर केवल लिखने का फैसला किया। आपको विश्वास नहीं होगा कि मैंने बाजार में उपलब्ध इस विषय पर हर किताब खरीदी और पढ़ने के बाद मुझे लगा कि इस किताब के लेखकों में जो योग्यताएं हैं वह मुझमें नहीं हो सकतीं। लेकिन फिर भी मैंने लिखने का साहस जुटाया।

हालांकि ऐसा एकाएक या रातोंरात मुमकिन नहीं हुआ लेकिन मैंने शुरुआत की और एक लैपटॉप खरीदा और मैं इस किताब को लिखने में व्यस्त हो गया। पहली किताब लिखने में मुझे 6 महीने का वक्त लगा, जिसका नाम है 'व्हाट इफ यू डाइ टुमारो?' फिर प्रश्न उठा कि इसे छापेगा

कौन? मैंने तकरीबन 15 प्रकाशकों को पत्र लिखा। इनमें से ज्यादातर ने अस्वीकार कर दिया लेकिन एक ने कुछ रुचि दिखाई। मुझे स्क्रिप्ट जमा करने के लिए कहा गया। प्रकाशक ने 6 महीने तक इंतजार कराया और हर बार फोन पर यही जवाब मिलता कि इस महीने काम हो जाएगा। इस तरह वह किताब फ्रैंकफर्ट पुस्तक मेला और कोलकाता पुस्तक मेले में नहीं आ पाई और इसी बीच वहां से भी इंकार कर दिया गया। कहा यह गया कि इसमें बहुत-सी व्याकरण की गलतियां हैं।

अगले 6 महीनों के दौरान मैं दूसरी किताब 'क्रैक द शेल दैट कवर्स यू' लिखता रहा। छपने से इंकार कर देना मेरे लिए दुःखद था पर मैं रुका नहीं। इसी दौरान एक प्रकाशक ने मुझे प्रस्ताव भेजा कि मैं आपकी किताब छाप सकता हूँ बशर्ते कि भविष्य में आप जो भी लिखेंगे वह किताब मेरे यहां ही छपवाएंगे। मेरे लिए यह एक बड़ा अवसर साबित हुआ और तब से मैं पीछे नहीं मुड़ा। उपरोक्त दोनों शीर्षक वाली किताबें उसी प्रकाशक ने छपीं और 'सक्सेस इज नॉट बाई चांस' दूसरे प्रकाशन द्वारा छपी गई जो इसे हिन्दी में प्रकाशित कराने के लिए इसका हिन्दी अनुवाद कराना चाहते थे। साथ ही पूर्व की दोनों किताबों का भी अनुवाद छपा।

पिछले तीन सालों के दौरान यह मेरी चौथी किताब है।

कई तरह से मुझे प्रेरणा मिली जिससे मैं आगे बढ़ता रहा। जो लोग प्रशासकीय तरीकों के आलोचक थे वे लोग भी आश्चर्यचकित थे कि मैंने ऐसा कर दिया। मैंने भी आलोचनाओं का मुकाबला किया है। इस विषय पर ढेर सारी किताबें लिखी गई हैं। लेकिन मैं उनके मिश्रित विचारों के आधार पर कुछ नया लिखना चाहता था। विभिन्न विश्वविद्यालयों में मेरे अंग्रेजी के प्रोफेसर मित्रों ने भी अपने कमेंट्स भेजे थे। लेकिन अगर 80 प्रतिशत लोग भी मेरे लेखन की सराहना करते हैं तो मैं अपनी लेखन योग्यता से संतुष्ट हो पाऊंगा और मैं समझूंगा कि मेरा कार्य सफल रहा।

अक्सर ऐसा होता है कि हम अपनी प्रतिभा से वाकिफ नहीं होते लेकिन एक बार वह धरातल पर उतर जाए तो आप विजेता बन जाते हैं, केवल धन अर्जन करना ही सफलता का पैमाना नहीं है। ज्यादातर सफल लोगों ने धन और प्रतिष्ठा दोनों अर्जित की हैं। आपकी प्रतिभा ही आपकी पूंजी है और अपनी प्रतिभा को साबित करके आप खुद में दृढ़ विश्वास पैदा कर सकते हैं। आप सबकुछ कर सकते हैं पर साथ ही आपको यह भी याद

रखना होगा कि आप क्या कर रहे हैं। पहले कुछ चीजों से शुरुआत करें फिर सारी चीजें एकसाथ अपने-आप होना शुरू हो जाएंगी। यह प्रकृति का नियम है जिसे आपको खुद में समझना होगा।

लोग आपके बारे में क्या सोचते हैं, मुद्दा यह नहीं परंतु मुद्दा यह है कि आप अपने बारे में क्या सोचते हैं। आपके विचार ही आपको दूसरों से पृथक करते हैं। एक बार आपका खुद पर यकीन पक्का हो गया तो आप कोई भी चमत्कार कर सकते हैं। कमजोर लोग खुद के किए काम का आकलन दूसरों से करवाते हैं, जिन्होंने खुद कभी उस तरह के काम को करने का प्रयास नहीं किया है।

आप स्वयं की इज्जत करना सीखें। मेरे मामले में ही देखिए कि कोई प्रकाशक नहीं मिल रहा था। यदि मेरी किताब प्रकाशित नहीं होती, तो मेरे पास खोने के लिए क्या था? महज किया हुआ परिश्रम। फिर भी मैं संतुष्ट होता कि मैंने अपने मन के मुताबिक कुछ लिखा। वह संतुष्टि इसके किताब रूप में न छपने से कम नहीं होती। सबसे पहले स्वयं की संतुष्टि का होना जरूरी है। बाकी सारी चीजें द्वितीयक हैं। मैं दृढ़ता से अपने किए कार्य पर आगे बढ़ता रहा और मुझे इसमें सफलता मिली। मैं नहीं चाहता कि आपके साथ भी ऐसा हो, इसलिए अपने समक्ष मिली चुनौतियों का डट कर मुकाबला कीजिए। आप एक जन्मजात विजेता हैं और उसी के अनुरूप अपना व्यवहार रखिए।

एक बार अगर आप दृढ़ हो गए तो फिर कोई आपको रोक नहीं सकता। कमजोर व्यक्तित्व वाले ही अपने विचारों में विभिन्नता लाते हैं और सोचते हैं कि इस कार्य का परिणाम सकारात्मक होगा या नहीं। हमें किसी कार्य में सफलता प्राप्त करने की पूरी प्रक्रिया के दौरान खुद के विश्वास पर दृढ़ रहना होगा।

1.2 सर्वश्रेष्ठ की चाहत

दुनिया में हर आदमी का शरीर एक ही तरह से बना हुआ है, जिसमें एकसमान रक्त और न्यूरोन्स की संख्या है लेकिन हमारी क्षमताएं एक समान नहीं हैं। न केवल क्षमता बल्कि हर व्यक्ति का कार्य करने का तरीका भी अलग-अलग है। ऐसा क्यों होता है? ज्यादातर लोग कैसे भी हो काम को निबटाना चाहते हैं। हम कार्य की गुणवत्ता को भूल जाते हैं, जिससे हम उसे महज सामान्य तरीके से ही कर पाते हैं।

श्रेष्ठता की कोई खास परिभाषा नहीं है और अगर एक बार कोई श्रेष्ठता हो जाती है तो जरूरी नहीं कि वह हमेशा ही कायम रहे। समय के साथ श्रेष्ठता की परिभाषा भी बदल जाती है। प्रचलित शिक्षा पद्धति के साथ सूचना तकनीक ने बहुत-सी चीजों को बदल दिया है। समय आज बदल रहा है। पहले जानकारी हासिल करने का जरिया केवल शिक्षक ही थे पर आज इंटरनेट के जमाने में शिक्षक भी श्रेष्ठता बनाए रखने के लिए रोज जानकारी देने में पिछड़ सकते हैं।

हर क्षेत्र में श्रेष्ठता के मानदंड बदल रहे हैं, यहां तक कि सरकार ने भी धनी लोगों की परिभाषा बदल दी है। नब्बे के दशक में मैनेजमेंट की डिग्री हासिल किए हुए इंजीनियरिंग के छात्रों की बहुत ज्यादा मांग थी लेकिन अब वह बात नहीं रही। इसका मतलब यह नहीं कि उनकी वैल्यू कम हो गई है लेकिन समाज की मांग में परिवर्तन आ गया है।

विजेता बनने के लिए जरूरी है कि जो आप कर रहे हैं उसे पूरी श्रेष्ठता से करें और उसमें अपना विश्वास कायम रखें। सफलता कोई अंतरिम प्रक्रिया नहीं बल्कि इसकी सीमाएं बदलती रहती हैं। सफल लोग श्रेष्ठता से काम करते हैं और वे इस सिद्धांत में विश्वास रखते हैं कि सामान्य लोगों और स्वयं के बीच अन्तर पैदा कर देंगे लेकिन वे अपने काम और स्वयं का संपूर्ण आकलन करके आगे बढ़ते हैं।

भारत में एक बड़े कॉर्पोरेट हाऊस के साथ काम करते हुए मैं अक्सर कहा करता था कि हमें अपनी 90 साल पुरानी शिक्षा पद्धति में ज्यादा फेरबदल करने की जरूरत नहीं। जरूरत इस बात की है कि समाज में हो रहे परिवर्तन के मुताबिक ही हमें उसके नजरिए में बदलाव लाना होगा। यह एक चुनौतीपूर्ण काम है जिसके बहुत सारे आलोचक भी हैं, पर मुझे खुशी है कि इसमें कुछ सुधार हो रहा है। संस्थान के मुखिया मुझसे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने मुझे प्रेरित करते हुए कुछ नए प्रोजेक्ट्स दिए ताकि मैं शिक्षा पद्धति के बारे में अपनी उपयोगिता साबित कर सकूँ। मैं यह नहीं कह सकता कि पूरी तरह से बदलाव आ चुका है लेकिन परिवर्तन महसूस किया जा रहा है। कई बार छोटे बदलाव भी संतुष्टि प्रदान करते हैं लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि कार्य की श्रेष्ठता को किसी भी सूरत में कायम रखना है।

समय के साथ श्रेष्ठता बनाए रखने में कई बार तनाव भी झेलना पड़ता है। लेकिन आपको याद रखना होगा कि विश्वास के सहारे ही आप यहां

तक पहुंचे हैं। अगर यहां कोई दूसरा होता तो असफल हो सकता था। अगर आप श्रेष्ठता को भुला रहे हैं तो समझिए कि आप अपनी पहचान खोने की तैयारी कर रहे हैं।

अपने कार्य की श्रेष्ठता से आप कभी भी समझौता न करें। इसे समझने का बेहतर तरीका है कि आप यह जानें कि किसी कार्य की गुणवत्ता और श्रेष्ठता आपस में एक-दूसरे के पर्यायवाची हैं। अपना काम इस तरह से करें कि वह जगह छोड़ने के बाद भी आप के कार्य की छाप वहां बरकरार रहे। क्योंकि सिस्टम चलता रहता है परन्तु आपके व्यक्तित्व की पहचान कायम रहती है। एकबार आपको एहसास हो गया कि आपने ऐसा कर लिया है तो समझ जाइए कि आप सफल व्यक्तियों की सूची में जुड़ गए।

कार्य करने का आनंद उसकी श्रेष्ठता में ही छिपा होता है।

सफलता की जांच लिटमस पेपर की तरह नहीं हो सकती, जहां रंगों में परिवर्तन के माध्यम से बदलाव महसूस होता है बल्कि यह एक अनुभूति है जो आपमें इसकी गंभीरता की समझ पैदा करती है। श्रेष्ठ कार्य करने के लिए यह जरूरी है कि आपमें श्रेष्ठ विचार पैदा हों और ये श्रेष्ठ विचार ही आपको हमेशा पॉजिटिव रिजल्ट दे सकते हैं। हमेशा पॉजिटिव सोचने की आदत डालें। आप अपनी नियति के मालिक स्वयं हैं इसलिए आपको कभी भी श्रेष्ठता के साथ समझौता नहीं करना चाहिए।

1.3 कार्य का आनंद लीजिए

इस धरती पर हर सजीव अपना कार्य करते हुए अपनी संतति को बरकरार रखता है। चाहे वह पृथ्वी पर पाई जाने वाली सबसे छोटी चिड़िया हर्मिंग बर्ड हो या फिर विशालकाय प्राणी हाथी, ये न केवल वे जिंदा रहते हैं बल्कि अपनी पहचान कायम रखने के लिए भी निरंतर क्रियाशील रहते हैं।

कार्य में लीन रहना मनुष्य का स्वभाव है इसलिए वह बैठे नहीं रह सकता लेकिन देखा जाए तो अधिकतर समय हम कुछ भी करते रहते हैं क्योंकि हम सोचते हैं कि हमारे पास दूसरा विकल्प नहीं है। हम इस बात को भूल जाते हैं कि फर्श को साफ करने वाला सामान्य कार्य हो या फिर नदी पर बांध निर्माण सदृश विशेष कार्य, हरेक की अपनी खासियत होती

है। हम यह मानकर चलते हैं कि समाज में उन लोगों की प्रतिष्ठा ज्यादा है जो समाज को ज्यादा देते हैं। इस सोच को हम नकार नहीं सकते लेकिन समाज में फर्श साफ करने वाले व्यक्ति की भी वही हैसियत या पहचान होती है क्योंकि पर्यावरण को साफ करने में उसका अहम योगदान होता है।

आप ऐसे लाखों लोगों को खोज सकते हैं जो काम तो करते हैं लेकिन वे किसी कार्य को पूरा करने में कोई योगदान दे रहे हैं, ऐसा नहीं लगता। योगदान के लिए उसकी समझ का होना जरूरी है और तब जाकर आप कार्य का सच्चा आनंद उठा सकते हैं। विभिन्न कार्यों की अवधारणा हर किसी की अलग हो सकती है परन्तु जिसे उसकी समझ है वही उससे प्रेम कर सकता है, उसका आनंद ले सकता है।

मैनेजमेंट के कुछ छात्र अपने प्रोफेसर के साथ कहीं दौरे पर गए थे। करियर के संबंध में वार्तालाप करते हुए वे एक ऐसी जगह पहुंच गए जहां कुछ लोग एक मंदिर के निर्माण कार्य में लगे थे। वहां काम कर रहे एक मजदूर से प्रोफेसर ने पूछा, 'क्या कर रहे हो तुम?' उसने तपाक से जवाब दिया, 'मेरे नसीब में पत्थर तोड़ना लिखा है और मैं वही कर रहा हूँ।'

प्रोफेसर ने आगे चलकर दूसरे मजदूर से फिर वही प्रश्न पूछा, उसने जवाब दिया, 'चूंकि अपने परिवार के भरण-पोषण का दायित्व मुझ पर है इसलिए मुझे उनके भोजन का इंतजाम करना है। मुझे कोई दूसरा काम नहीं मिला इसलिए मैं यहां काम कर रहा हूँ।'

वे फिर आगे बढ़े और तीसरे मजदूर से भी यही सवाल किया। उसने कहा, 'मैं इस सुंदर मंदिर के निर्माण में अपना सहयोग कर रहा हूँ और इस तरह से मैं ईश्वर का कर्ज चुकाने का प्रयास करता हूँ।'

प्रोफेसर ने अपने छात्रों को बताया कि पहला व्यक्ति व्यथित हो कर कार्य कर रहा है। दूसरा आदमी अपनी दैनिक जरूरतों को पूरा करने के लिए मशीन की भांति कार्य कर रहा है लेकिन उसे कार्य में कोई रुचि नहीं है। केवल तीसरा व्यक्ति बतौर करियर यहां काम कर रहा है। इसलिए आपको उस तीसरे व्यक्ति की तरह से काम करना चाहिए।

जिस कार्य में आपकी रुचि हो उसमें और अग्रसर होइए, फिर उसका नतीजा देखिए और आपको फर्क महसूस होगा। आपका नजरिया यहां पर

अहम भूमिका निभाता है। हममें से ज्यादातर लोग जवाब की प्रतीक्षा में रहते हैं जो कभी नहीं मिलता। कुछ लोग इसलिए अपने माता-पिता और नियति को ही इसका दोषी ठहराते हैं।

सभी सबकुछ नहीं पा सकते लेकिन अधिकतर पा लेते हैं। जो हमारे पास नहीं है हम उसी की कल्पना करते हैं। हमें उन चीजों का आनंद लेना चाहिए जो हमारे पास हैं। लेकिन जो चीजें हमारे पास नहीं हैं उन्हें हासिल करने की ओर उन्मुख होना ही हमें सफलता की ओर ले जा सकता है।

जो व्यक्ति अपने वर्तमान से खुश नहीं है वह कभी भी खुश नहीं रह सकता क्योंकि उसे भविष्य में भी हर वक्त ऐसा ही लगेगा कि कुछ चीजें उसके पास अभी भी नहीं हैं। वर्तमान में जो आप कर रहे हैं उसके उजले पक्ष को देखें। यह आपके नैतिक स्तर को बढ़ाकर आपके सपने को साकार करने में मददगार हो सकता है। बरगद का पेड़ प्रारंभ से ही वर्तमान आकार में नहीं आ जाता बल्कि एक लंबे समयांतराल में उसे यह विशालता हासिल होती है।

आप विजेता की तरह कार्य करें और यह साबित करें कि आप उस कार्य में आनंद ले रहे हैं। कुछ भी लगातार करते रहने से उत्साह पैदा होता है और वही आनंद दिलाता है। अपनी क्षमताओं का भरपूर उपयोग करते हुए सर्वोत्तम करने की ललक ही आपको आशातीत परिणाम दिला सकती है।

किसी चीज को और बेहतर कैसे किया जाए यही जानना आनंद है।

एक बार अगर आप अपने कार्य में तल्लीन हो जाते हैं तो स्वतः आप अपनी क्षमताओं और दक्षताओं का आनंद उठा पाएंगे और यही बेहतर परिणाम दिलाएगा। तल्लीनता से किया गया कार्य ही उत्पादक साबित होता है। हम अपनी नियति के चलते नहीं बल्कि कार्य को अनुत्साही ढंग से करने के चलते असफल रह जाते हैं।

कार्य में तल्लीनता से शरीर के भीतर कुछ हार्मोनल स्राव होते हैं जो प्रत्यक्ष रूप से आपकी क्रियाशीलता को प्रभावित करते हैं। आनंद से कार्य करने पर शरीर में एड्रेनेलिन का स्तर बढ़ जाता है जो हमें गुणवत्तायुक्त कार्य संपन्न करने की प्रेरणा देता है। कई बार हम तकनीकी या एकेडमिक दक्षता के अभाव की वजह से कार्य को सही तरीके से नहीं कर पाते हैं। लेकिन ये दोनों ही चीजें ऐसी हैं, जिन्हें हम सीख सकते हैं।

अकेडमिक और तकनीकी तौर पर दक्ष कोई व्यक्ति किसी काम को उतने मजे से नहीं कर पाता जितना कि कोई इन सबसे अनभिज्ञ व्यक्ति। कार्य को मजे के साथ करने की भिन्नता के चलते दोनों ही व्यक्तियों द्वारा संपन्न कार्यों में काफी अंतर देखा जाता है।

आप जो भी कार्य कर रहे हैं, वह आपको तब ही ख्याति और प्रतिष्ठा दिला सकता है जब आप उसे पूरे आनन्द और उत्साह के साथ करें। आनन्द और संतुष्टि दोनों ही एक-दूसरे के पर्याय हैं और व्यक्तित्व निर्माण के लिए दोनों ही समान रूप से आवश्यक हैं। ऐसा करने से आपको और बेहतर करने की प्रेरणा मिलेगी जो बेहतर से बेहतर परिणाम की ओर आपको ले जा सकती है।

1.4 अपने कार्य में लीन रहना सीखिए

आपने अक्सर सुना होगा, 'अभ्यास ही व्यक्ति को पूर्ण बनाता है' लेकिन आप इसको दूसरे तरीके से सोचें तो किसी काम को तल्लीनता से करने पर खुद-बखुद उससे प्रेम हो जाता है। एक बार उस कार्य से प्रेम हो जाने पर उसे भुलाना मुश्किल हो जाता है।

लोगों को वही काम करना अच्छा लगता है जो उन्हें पसंद होता है। वह कुछ भी हो सकता है किताब लिखना या लोगों को ठगना। आनंद के साथ किए गए कार्य में आदमी उसके भीतर तक जाता है। कुछ समय के बाद आदमी उस कार्य में खो जाता है और उसे पूर्ण दक्षता से करना सीख जाता है। उसके बाद वह बिना उस कार्य के जीवित नहीं रह पाता। इसे ही कार्य को निष्ठा से करना कहा जाता है।

दीर्घकाल तक आप अगर किसी चीज से जुड़े रहते हैं तो जो पाना चाहेंगे वह हासिल कर सकते हैं।

कई बार किसी कार्य को करने के दौरान बीच में रुचि जगती है जो आपको आनंद देती है लेकिन किसी कारणवश अंत तक जाते हुए कुछ बाधाएं सामने आती हैं और आप उस कार्य को छोड़ देते हैं। किसी कार्य को आनंद से करना आपकी अवधारणा पर निर्भर करता है। नकारात्मक आनंद आपको पीछे की ओर धकेलता है जबकि सकारात्मक आगे की ओर। आपने अक्सर 'वर्कहोलिक' शब्द के बारे में कई बार लोगों के मुंह

से सुना होगा और विश्वास कीजिए कि लोग इसे पॉजिटिव तौर पर नहीं लेते हैं। वर्कहोलिक उसे कहा जाता है जो बिना विराम के अपने कार्य में जुटा रहता हो। सालों-साल बीतने के बावजूद एक ही काम करते हुए वे बोर नहीं होते। लेकिन वास्तविकता यह है कि वे उस काम को मजा लेते हुए करते हैं और बिना उस कार्य के उन्हें कुछ खालीपन-सा महसूस होता है।

विजेता अपना कार्य इसी तरह मजा लेकर निबटाते हैं। वे कोई कार्य किसी बदले की उम्मीद से नहीं बल्कि संतुष्टि की चाहत के लिए करते हैं। इस दौरान जो कुछ भी उन्हें मिलता है उसे ही वह उपलब्धि मानते हैं।

एक दिन एक प्यासा हिरण पानी पीने के लिए नदी किनारे पहुंचा। नदी के साफ पानी में उसे अपना प्रतिबिंब दिखाई दिया उसने अपने सुंदर सींगों को देखा और उन पर उसे बड़ा गर्व हुआ। फिर उसने अपने पैर देखे जो उसे काफी भद्दे लगे और वह दुःखी हो गया।

वह सोचने लगा 'मेरे सींगों में कितनी शाखाएं हैं और ये कितने सुंदर हैं लेकिन काश ये मेरे पैर भी ऐसे होते।'

इस दौरान एक शिकारी उधर से गुजरा और उसे पकड़ने के लिए दौड़ा। हिरण समझ गया कि वह शिकारी उसे पकड़ने आया है तो वह दुम दबाकर वहां से भागा।

बड़ी मजबूती से वह अपने डग भर रहा था। थोड़ी देर के बाद ही वह शिकारी की नजरों से ओझल हो गया। वह कुछ आगे जाकर सुस्ताने के लिए ठहरा और सोचने लगा कि मजबूत पैरों की बदौलत ही आज उसकी जान बच सकी है। इतने में एक पेड़ की शाखाओं में उसका सींग उलझ गया। उसने काफी जोर लगाया पर वह उलझता ही गया। हिरण दर्द से छटपटाते हुए सोच रहा था कि मैं भी कितना मूर्ख हूँ। मैं अपने पैरों से घृणा करता था और सींगों पर गर्व, यही आज मेरे लिए घातक साबित हो गए। मुझे ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिए था। जिसने मुझे ये पैर दिए।

1.5 संकल्पवान बनें

इस जमाने में ख्याति अर्जित करने में वही सक्षम हुए हैं जिन्होंने संकल्प लेकर बिना विचलित हुए, पूरी तत्परता से अपना कार्य किया है। यात्रा पथ पर यह जरूरी नहीं कि आपको सदैव नेशनल हाईवे ही मिले। आपको टूटी

और गंदी सड़कें भी मिलेंगी पर वहां ठहरना नहीं है। इन टूटी सड़कों पर चलने से आप और ज्यादा मजबूत बनेंगे।

इन सड़कों पर चलने के दौरान आपकी लगनशीलता की जांच होती है। दृढ़ मानसिक शक्ति वाले व्यक्ति की तुलना में लगनशील व्यक्ति ज्यादा बेहतर होता है। एक तत्पर आदमी कभी भी बिना मूल्यांकन किए कोई कार्य शुरू नहीं करता है लेकिन एक बार अगर वह शुरू कर देता है तो फिर किसी भी हालत में उसे पूरा करके ही छोड़ता है।

तत्परता एक जन्मजात गुण है लेकिन इसे अभ्यास से भी हासिल किया जा सकता है। हमारी शिक्षा पद्धति कुछ इस तरह की है कि उसमें हर चीज का शॉर्टकट सिखाया जाता है और यही जीवन में हमारी असफलता के कई कारणों में से एक कारण बनता है। हमारी शिक्षा पद्धति में कुछ ऐसी विकृतियां भरी हैं कि हम केवल अंक हासिल करने की ओर ही पूरा ध्यान केंद्रित रखते हैं।

हम अपने छात्रों को यह क्यों नहीं पढ़ाते कि इस संसार में ऐसी किसी चीज का अस्तित्व ही नहीं है जिसे हम पा न सकें? हम क्यों नहीं उन्हें अपने कार्यों में तत्परता लाने की शिक्षा देते हैं? एडीसन और न्यूटन तो कभी भी किसी सलाहकार के पास नहीं गए थे तो फिर कैसे उन्होंने बल्ब का आविष्कार कर लिया और गति के नियम का प्रतिपादन किया, जिसने आज हमारा जीवन कई मायनों में आसान बना दिया है।

तत्परता से कार्य करना ही सफलता की राह पर चलना है।

बिना तत्परता के आप कुछ भी हासिल नहीं कर सकते भले ही परिस्थितियां शत-प्रतिशत ही आपके पक्ष में क्यों न हों। एक ही दिशा में सोच-विचारकर तत्परता से अग्रसर होने पर ही सफलता मिल पाती है। बिना तत्परता के आपको कुछ भी हासिल होने की संभावना कम ही रहती है।

अगर आपने कुछ पा लिया तो समझिए कि वह आपकी तत्परता का ही परिणाम है और एक बार आपने कुछ पाया तो वह आपके लिए टॉनिक का काम कर सकता है। इस तरह की प्रेरणा का आधार तत्परता ही होती है।

एक ट्रेनिंग सेशन के दौरान दिल्ली में मेरी मुलाकात एक 52 वर्षीय महिला शिक्षक से हुई। बिहार प्रांत के सुदूर इलाके से आई उस महिला की शादी महज 15 साल की आयु में हो चुकी थी

और रोजगार पाने के क्रम में वह अपने पति के साथ दिल्ली आ गई। 20 साल की उम्र में वह 2 बेटियों की मां बन चुकी थी। अचानक एक सड़क दुर्घटना में उसके पति की मृत्यु हो गई। लेकिन उसने अपनी हिम्मत बरकरार रखते हुए दोनों बेटियों को अच्छी शिक्षा दी ताकि वे देश की बेहतर नागरिक बन सकें।

बेटियों के पढ़ते समय वह उनके साथ बैठती। उसने अपनी बेटियों के साथ पढ़ाई-लिखाई शुरू की और स्नातक की डिग्री हासिल की। बाद में उसने स्नातकोत्तर और फिर बैचलर आफ टीचिंग की डिग्री हासिल की। घर-गृहस्थी का सारा काम करने के दौरान ही उसने ऐसा किया।

घर के पास ही एक प्राइमरी स्कूल में वो नौकरी करने लगी और सात वर्ष के भीतर दिल्ली के ही एक प्रतिष्ठित स्कूल में वाइस प्रिंसिपल बन गई। जब मैंने उससे पूछा कि आपने कैसे ये सब मुमकिन किया तो वे कहने लगी कि मैं अपनी बेटियों को अपनी पूर्व की बिताई जिंदगी नहीं देना चाहती थी। उसने बताया कि पति की मौत के बाद उसने तय किया कि अपनी बेटियों को अच्छी शिक्षा देगी, चाहे इसके लिए कितनी भी मेहनत क्यों न करनी पड़े। आज उसकी बड़ी बेटी आईएएस है और छोटी बेटी जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी से डॉक्टरेट कर रही है।

आप ऐसा मत सोचिए कि यह केवल अपवाद है, केवल अपवाद के सिद्धांत को साबित करता है। यह सिद्धांत यह बताता है कि अगर आपने कुछ करने की ठान ली तो फिर कोई भी बड़ी से बड़ी बाधा आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकती है। केवल दिमाग से असफलता और निराशा वाले विचार निकाल कर बाहर फेंक दीजिए।

असफलता की सोचेंगे तो वह आपको निराशा की ओर ले जाएगी और तब आपको कहीं सहयोग दिखाई नहीं देगा लेकिन आप सफलता की ओर देखेंगे तो चहुंओर से समर्थन मिलेगा।

इस किताब को पढ़ने में आपकी रुचि कायम रहे इसलिए कुछ कहानियां भी बीच-बीच में दी गई हैं। यह आपके लिए कई तरह से मददगार साबित हो सकती हैं। विष्णु शर्मा को याद करिए, अपने छात्रों को पढ़ाते वक्त वे भी कहानियों का सहारा लेते थे जो बाद में चलकर पंचतंत्र की कहानियों के नाम से प्रसिद्ध हुई।

आप भी कुछ ठान सकते हैं और खुद अपनी एक कहानी लिख सकते हैं। इसमें कोई परेशानी नहीं है, बस जरूरत है तो अमल में लाने की। हमेशा यह याद रखना चाहिए कि जो वक्त गुजर गया वह कभी भी लौटकर नहीं आता है और एक बार आपको सफलता मिल गई तो आपके पास भी समय का अभाव होने लगेगा। इसलिए सोचिए मत और ज्यादा देर मत करिए। बस आप जो लंबे समय से सोच रहे हैं उसे ठान लीजिए कि इसे करना है। अगर आप इसमें देरी करते हैं तो खुद आपको उसकी कीमत चुकानी होगी। जो जीतना चाहते हैं वे देर नहीं लगाते। हार से घबराने की जरूरत भी नहीं है। हारने से आपकी प्रगति रुक नहीं जाएगी। बस कुछ क्षणों के लिए थोड़ा ठहराव-सा आ सकता है। एक बार अगर आपने ठान लिया तो फिर कोई आपको आगे बढ़ने से रोक नहीं सकता, असफलता भी नहीं।

मोहम्मद गोरी को याद कीजिए, जिसे पृथ्वीराज चौहान ने 17 बार हराया, लेकिन अंततः वह जीतने में कामयाब रहा। इस युद्ध में चौहान की हुई हार महज उनकी अपनी हार नहीं थी। बल्कि इस हार की वजह से भारत में सात सौ साल से भी ज्यादा समय तक मुस्लिम शासकों की सत्ता कायम रही। इसी को कहते हैं कि मन में ठाने हुए को वास्तविकता में बदल देना जो न केवल आपके लिए बल्कि आपके बाद आने वाली पीढ़ी के लिए भी फायदेमंद साबित हो सकता है और आप उनके लिए नायक बन सकते हैं। ●



अध्याय-2

सफलता की आवश्यकता

यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि ऐसा कोई नियम नहीं है जो आपको सफलता की ओर ले जा सकता हो। सफलता विशुद्ध रूप से व्यक्तिगत मामलों पर निर्भर करती है और हरेक के लिए उपलब्धि के अलग मायने होते हैं। यहां तक कि यह जरूरी नहीं कि कोई अपनी आवश्यकताओं की पूरी तरह से पूर्ति कर लेता हो तो वह सफल ही कहलाएगा। सफलता व्यक्ति को भीतरी प्रेरणा से मिलती है और सबके लिए अलग-अलग होती है।

पिकासो की पेंटिंग को अद्भुत माना जाता है और कहा जाता है कि दस कलाकार एक साथ मिलकर भी इस तरह की पेंटिंग बनाने में कामयाब नहीं हो पाएंगे। हर क्षेत्र में कुछ सफल पुरुष होते हैं और सबकी अपनी अलग तरह की रचनाशीलता होती है। चाहे वह दियासलाई हो या फिर डाइनामाइट, हर एक ने कुछ न कुछ योगदान दिया है। तभी उन्हें सफल व्यक्तियों की श्रेणी में रखा गया है।

किसी एक क्षेत्र में सफल व्यक्ति की तुलना दूसरे क्षेत्र के कामयाब व्यक्ति से नहीं की जा सकती। व्यक्ति खुद एक सपना देखता है जिसे साकार करने के लिए वह पुरजोर कोशिश करता है और सही दिशा में किया गया उसका प्रयास ही उसे कामयाबी की ओर ले जाता है।

ज्यादातर कामयाब पुरुष प्रतिभावान होते हैं और उनमें कुछ ऐसे भी होते हैं जिन्होंने कोई औपचारिक शिक्षा भी हासिल नहीं की होती, जिसे सफलता की पहली सीढ़ी माना जाता है। औपचारिक शिक्षा का कामयाबी से कोई लेना-देना नहीं होता है। किसी चीज के आविष्कार के लिए औपचारिक शिक्षा का होना जरूरी माना जाता है लेकिन कामयाब व्यक्ति बनने के लिए बहुत सारे गुणों का होना जरूरी है।

अगर आप महान व्यक्तियों की जीवनी का अध्ययन करेंगे तो पाएंगे कि वे कोई बहुत ज्यादा प्रतिभाशाली नहीं थे बल्कि बहुत ही ज्यादा सुव्यवस्थित तरीके से काम निबटाते थे। कामयाबी के लिए प्रतिभावान होने से ज्यादा जरूरी है चीजों को चतुराई से निबटाना।

प्रतिभा अलग चीज है पर कार्यकुशलता ही सबकुछ है। इससे हर बाधा से निकल कर आगे बढ़ने की चतुराई आती है और बाधाओं को खत्म भी किया जाता है।

कामयाबी की परिभाषा हर व्यक्ति के लिए समय के मुताबिक बदल जाती है। एक बात तो तय है कि कामयाब लोग भौतिक रूप से हमारे और आपकी तरह ही होते हैं, बस अंतर सिर्फ सोचने की प्रक्रिया में ही होता है। एक कामयाब व्यक्ति पहले किसी चीज का सपना देखता है। फिर अपनी क्षमताओं को पहचान कर उसका मूल्यांकन करता है और अपने लक्ष्य की प्राप्ति में जुट जाता है और जुटा रहता है जब तक उसे लक्ष्य प्राप्त नहीं होता।

एक असफल इंसान भी यही रास्ता शुरूआत में चुनता है लेकिन राह में मुसीबतें आने पर वह तय रास्ते को बदल देता है और दूसरी राह पर चलने लगता है। जब बार-बार मुश्किलें सामने आती हैं तो वह सुस्ताने लगता है और फिर आगे बढ़ना बंद कर देता है। वे ऐसा मानने लगता है कि जो लक्ष्य उसने बना रखा था वे उसके काबिल नहीं है और वह उसे नहीं पा सकता। भाग्यशाली लोग ही लक्ष्य तक पहुंच पाते हैं, मेरे भाग्य में यह सुख नहीं। ऐसा सोचने वाले कभी विजेता नहीं बन सकते।

भारत की महान और धनी विरासत के बारे में सुनकर इतिहास में सिकंदर से पहले कई महान योद्धाओं ने भारत पर आक्रमण किया था, लेकिन उनमें से कोई सफल नहीं हो पाया था। सिकंदर ने सारी परिस्थितियों का पहले अच्छी तरह से आकलन किया, उसका पूरी तरह से अध्ययन किया, अपने सेनापति और समर्पित सैनिकों से विचार-विमर्श करने के बाद एक पूरी कार्ययोजना तैयार की और उसी के अनुसार आक्रमण किया। आपको सिकंदर के बारे में एक रोचक किस्सा सुनाता हूँ जिसे जानकर आप यह समझ जाएंगे कि आखिर सिकंदर को 'द ग्रेट' क्यों कहा जाने लगा।

सिकंदर ने ई. पूर्व 326 में भारत पर आक्रमण किया था। भारत से काफी दूर स्थित मेसिडोनिया का शासक था वह। वह एक वास्तविक योद्धा था। उसने पोरस को हराया, जो उस समय के महान भारतीय योद्धा थे। जीतने के बाद उसके सेनापति ने शासन की बागडोर संभालने के लिए सिकंदर को वहां बुलाया। युद्धभूमि से राजधानी तक जाने के लिए जोकि वहाँ से 50 किलोमीटर दूर स्थित थी, एक हाथी का इंतजाम किया गया था। सिकंदर हाथी पर बैठा और उसकी लगाम हाथ में देने को कहा। उसके सेनापति ने कहा कि हाथी की सवारी में लगाम नहीं होती। हाथी पर एक अन्य व्यक्ति भी सवार है, जिसे 'महावत' कहा जाता है और और हाथी को यही चलाता है। वही उसे नियंत्रण में करता है। सुनकर सिकंदर को एक बड़ा आश्चर्य हुआ, वह हाथी पर से कूद गया और कहा, 'मैं ऐसी किसी भी चीज पर सवार नहीं होना चाहता, जिसका नियंत्रण मेरे हाथ में न हो। उसने अपने सेनापति से घोड़े का इंतजाम करने को कहा ताकि वह राजधानी तक पहुंच सके।

सिकंदर की यह दृढ़ इच्छाशक्ति ही थी जो उसके आकलन के मुताबिक परिणाम देती थी। बहुतों को इतिहास बतौर विषय पसंद नहीं है लेकिन इसकी कहानियां काफी शिक्षाप्रद हैं, जो हमें किसी का मूल्यांकन करने के काम आती हैं।

असंख्य लोग इस दुनिया में आते-जाते हैं लेकिन किसी को कोई याद नहीं रख पाता। परंतु कुछ ही निष्ठावान लोग ऐसे थे जिन्हें उनकी कामयाबी के लिए याद रखा गया है। ऐसे भी बहुत से लोग हैं जो गिनती से परे हैं। आजादी से पहले अपने निष्ठापूर्वक कार्य करने के चलते तीन बड़े औद्योगिक घराने-टाटा, बिरला और डालमिया प्रसिद्ध थे।

इन्होंने बिल्कुल नीचे से शुरूआत की थी और कम वक्त में दृढ़ इच्छा शक्ति की बदौलत बहुत कुछ हासिल किया।

2.1 वास्तविक बनिए

जीवन में अपने कार्यों के प्रति सावधान रहें। हम अक्सर सुनते हैं कि फलां आदमी अपने कार्य को लेकर सावधान रहता है और समय पर सारे

काम निबटाता है। ऐसे व्यक्ति को हर कोई इज्जत देता है और इससे वह अपनी नजरों में ऊंचा उठने लगता है।

किसी भी व्यक्ति में कर्तव्यनिष्ठा का होना उसे गुणवत्तायुक्त कार्य करने की प्रेरणा देता है। वे कभी ऐसा नहीं सोचती कि दूसरे उसके बारे में क्या सोच रहे होंगे। वे तो बस अपने कार्य की गुणवत्ता को बड़ी सावधानी से कायम रखने की कोशिश करता है।

हमेशा दिमाग में यह बात रखें कि आपके संकल्प ही आपको कामयाबी की ओर ले जाते हैं और वही सबसे महत्त्वपूर्ण हैं।

एक मजबूत व्यक्ति ही कर्तव्यनिष्ठ हो सकता है क्योंकि वह दूसरों की आलोचनाएं बरदाश्त कर सकता है। कर्तव्यनिष्ठ होने का मतलब है कि एक बार अगर किसी व्यक्ति में यह गुण आ गया तो समझिए कि वह कहीं भी काम करेगा तो उसमें वह गुणवत्ता कायम रहेगी। आपके पढ़ने की रोचकता को बनाए रखने के लिए इसी संदर्भ में एक कहानी दी जा रही है।

एक बार एक राजा के शासनकाल के दौरान उसके देश में भयानक अकाल पड़ गया। अकाल से निबटते हुए खजाना खाली होने के कगार पर पहुंच गया। वह इस बात को लेकर दुःखी था कि भविष्य में अपनी प्रजा का पेट कैसे भर पाएगा। जनता का पेट भरने के उपायों पर वह गंभीरता से सोचने लगा।

एक दिन महल के एक रात्रि प्रहरी ने राजा से मिलने की इच्छा व्यक्त की। वह किसी विशेष संदर्भ में राजा से कुछ कहना चाहता था। राजा से मिलना सरल नहीं था, सेनापति ने उससे कहा उसे जो कहना है वह उसे बता दे वह राजा तक संदेश पहुंचा देगा, परन्तु प्रहरी तैयार नहीं हुआ। अन्ततः उसे सावधानी के साथ सैनिक छावनी में राजा से मिलने दिया गया। उसने राजा से निवेदन किया—

“महाराज, मैं अपनी मूर्खता के लिए पहले तो क्षमा चाहूंगा। पिछली रात को मैंने एक सपना देखा कि महल के उत्तरी छोर पर एक खजाना गड़ा हुआ है। पहले मैं इस बारे में किसी को नहीं बताना चाह रहा था कि कहीं ये बात गलत न साबित हो। लेकिन मैं खुद को रोक नहीं सका और मैं यहीं बताने आपके पास आया हूँ।” राजा ने उसे वापस लौटने की आज्ञा देते हुए कहा, “मैं इसकी जांच करवाता हूँ।”

अगले दिन उस स्थान पर खुदाई शुरू की गई तो राजा यह देखकर आश्चर्यचकित हो गया कि वाकई में वहाँ तो भरपूर मात्रा में हीरे जवाहरात आदि गड़े हुए हैं। राजा ये देखकर बहुत खुश हुआ उसकी सारी चिंताएं उसी क्षण दूर हो गयीं। उसने पड़ोसी देश से प्रचुर मात्रा में अनाज खरीदने का आदेश दिया ताकि कोई भूखा न रहे।

बाद में राजा ने रात्रि प्रहरी को बुलाकर उसे धन्यवाद दिया तथा उसे आजीवन वेतन देने की व्यवस्था कर दी लेकिन साथ ही उसे नौकरी से भी हटा दिया।

आप सोच रहे होंगे कि आखिर राजा ने उसे नौकरी से क्यों हटा दिया? क्या यह न्यायोचित था? हां, राजा ने प्रहरी को भरपूर इनाम दिया आजीवन वेतन देकर। चूंकि रात्रि प्रहरी का कर्तव्य होता है रात में जागते रहना परन्तु उस प्रहरी ने अपने कार्य में लापरवाही बरतते हुए सोते हुए सपना देखा था और यही वजह रही कि उसे अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा।

आप अपनी संस्था के लिए एक संपत्ति होते हैं जिसे कुछ खास कार्य के लिए रखा जाता है और यह बात बहुत कम लोग ही समझते हैं। आप अगर पूरी कर्तव्यनिष्ठा से अपनी संस्था के लिए काम करते हैं तो आपके साथ संस्था की प्रसिद्धि भी बढ़ती है लेकिन अगर आप अपना कार्य पूरी कर्तव्यनिष्ठा से नहीं करते तो संस्था में आपका कद ऊंचा नहीं होगा। कामयाब इंसानों में कर्तव्यनिष्ठा सबसे अहम खासियत रही है, बाकी अन्य खासियतें द्वितीयक हैं।

किसी संस्था में व्यक्ति विशेष के योगदान का मूल्यांकन करने के दौरान आप पाएंगे कि कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति बेहतर कर पाते हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि ऐसा व्यक्ति हमेशा अपनी रफ्तार से काम में जुटा रहता है और उसकी छवि भी इसी तरह की बन जाती है। वह अपने प्राथमिक कर्तव्यों से कभी भी समझौता नहीं करता है।

मनुष्य की जिंदगी में बदलाव तभी मुमकिन है जब वह पूरी तत्परता से हर काम को निबटाए। कामयाब लोग कभी भी कोई काम जल्दबाजी में नहीं करते और न ही कभी उसे समय से पहले हासिल करने के बारे में सोचते हैं, बल्कि उसके लिए सही वक्त आने तक इंतजार करते हैं।

2.2 सहज बनिए

विनम्र बनना व्यक्तित्व का ऐसा हिस्सा होता है जिसे आदमी लगातार अभ्यास से सीखता है। एक विनम्र व्यक्ति प्रत्येक इंसान की इज्जत करता है। विनम्र व्यक्ति कभी भी अपनी कमजोरी दूसरों के समक्ष नहीं प्रकट करते। कमजोर व्यक्ति में स्वाभिमान नहीं होता और कहीं भी छोटा-सा झटका लगने पर वे समर्पण कर देते हैं। जबकि एक दृढ़ व्यक्ति कभी भी ऐसा नहीं करता, वह हर परिस्थिति में मजबूत बना रहता है। एक सहज व्यक्ति हमेशा जीतने में विश्वास रखता है।

विजेता निश्चित रूप से सहज और स्वाभिमानी होते हैं यही गुणा उनकी नैतिकता को बढ़ाते हैं। इसलिए ऐसे लोगों की गतिविधियों को समझने की कोशिश कीजिए।

राजस्थान के एक दूरवर्ती इलाके में एक बड़े व्यापारिक घराने के साथ चले रहे शैक्षिक प्रोजेक्ट पर काम करने के दौरान एक बार कुछ शिक्षकों ने मैनेजमेंट के किसी फैसले के विरुद्ध उग्र रूप अख्तियार कर लिया था। कुछ शिक्षकों को मिलने वाली सुविधाओं को जांच के दायरे में लाया गया था, जिसका वे विरोध कर रहे थे। उन्हें समझाने की कोशिश नाकाम रही। एक समय तो मैं काफी व्यथित हो गया और सोच लिया कि चेयरमैन को सलाह दे दूं कि संस्थान को उसके भाग्य के भरोसे छोड़ दिया जाए। लेकिन एक वार्तालाप के दौरान मैंने पाया कि चेयरमैन बहुत दयालु किस्म के व्यक्ति हैं। उन्होंने मुझसे कहा कि आप अपना काम पूर्ववत् सुचारु तरीके से करते रहिए और पुरानी बातों को ध्यान में मत रखिए। यह मेरे लिए एक बड़ा पाठ था जो मैंने उस दिन सीखा और जाना कि कर्मचारी और नियोक्ता में क्या फर्क होता है। हमारी सोच सीमित दायरे में होती है जबकि नियोक्ता व्यापक रूप से सोचता है। कितना फर्क है!

कई बार कुछ चीजें ऐसी घटती हैं कि हम उन्हें बिना समग्र रूप से जाने हुए घटना पर तुरंत टिप्पणी कर देते हैं। हम अक्सर इस बात में जल्दबाजी करते हैं जिसका असर हमारे व्यक्तित्व पर भी पड़ता है। इसलिए हमें जब किसी घटना के संदर्भ में पूरी बात मालूम न हो तो... देखें और इंतजार करें (वेट एंड वॉच) की नीति अपनानी चाहिए। आगे दी जा रही कहानी से हमें यह समझने में आसानी होगी कि धैर्य क्यों जरूरी है।

शाम के समय एक ट्रेन स्टेशन से चली। ट्रेन में काफी भीड़ थी, ऑफिस से घर जाने वालों के अलावा भारी संख्या में छात्र और छात्राएं थीं। खिड़की के पास वाली सीट पर एक बुजुर्ग अपने 30-32 साल के जवान पुत्र के साथ बैठे थे। जैसे ही ट्रेन चली तो उस लड़के ने अपने पिता से कहा, “कितने सुन्दर हरे-भरे खेत हैं।” फिर थोड़ी देर बाद बोला, “देखो पापा, पेड़ों की हरियाली कितनी अच्छी लग रही है।”

उसका इस तरह से बोलना लोगों को बड़ा अजीब लग रहा था। लोग आपस में बातें करने लगे कि शायद यह व्यक्ति पागल है। इसमें अनूप नाम का युवक भी अपनी नवविवाहिता पत्नी के साथ यात्रा कर रहा था और वह भी उस युवक पर झुंझला रहा था।

एकाएक बारिश शुरू हो गई। खिड़की से होकर बारिश का पानी यात्रियों को भिगोने लगा तो वह युवक खुशी से झूम उठा और बोला, “पापा, देखिए कितनी अच्छी बारिश हो रही है।”

अनूप को गुस्सा आ रहा था क्योंकि बारिश के पानी से उसके और उसकी पत्नी के कपड़े खराब हो रहे थे। अनूप बोला, “ओ बूढ़े! क्या तुम देख नहीं रहे कि बारिश हो रही है। अगर तुम्हारा लड़का मानसिक रूप से बीमार है तो इसे पागलखाने में भर्ती कराइए और लोगों को इस तरह से मत परेशान कीजिए।

वह वृद्ध व्यक्ति पहले तो थोड़ा सकपका गया, लेकिन फिर थोड़ी धीमी आवाज में बोला, “हम लोग अस्पताल से घर लौट रहे हैं। आज ही मेरे बेटे को अस्पताल से छुट्टी मिली है। यह जन्मजात अंधा था और पिछले हफ्ते इसकी आंखों का ऑपरेशन हुआ है और इसे दृष्टि मिली है यह प्रकृति व बारिश इसके लिए नई चीजें हैं। आपको हुई असुविधा के लिए हमें खेद है।”

जब तक हम सत्य को नहीं जानते तब तक हम उस स्थिति या समस्या को समग्र रूप से नहीं जान सकते और जब हम सत्य को जान जाते हैं तो हमारी अपनी प्रतिक्रिया ही हमें बुरी लगने लगती है। इसलिए सबसे पहले समस्या को समझें फिर प्रतिक्रिया दें। कई बार हमारा शीघ्र निर्णय और त्वरित प्रतिक्रिया हमें सफलता की ओर जाने से रोक देती है।

अस्तित्व की सहिष्णुता ही सफलता का रहस्य है। सदैव शांत रहते हुए जीवन में उठने वाली हर प्रकार की तरंग का धैर्य से सामना कीजिए।

2.3 विनम्र बनिए

विजेता की तरह हमें ऐसा रास्ता चुनना होगा जिस पर हम अपने इद-गिर्द के सभी लोगों से तालमेल बिठाते हुए आगे बढ़ सकें, वह भी बिना किसी उग्रता के लोगों का ख्याल रखते हुए। हमें भले ही सफलता मिले या न मिले लेकिन कभी भी मानवता के मूलभूत गुणों को नहीं भूलना चाहिए। कामयाब लोगों का यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण गुण माना जाता है।

कभी-कभार ऐसा होता है कि आप जिसे अपनी बात कह रहे हैं वह उसमें रुचि नहीं दिखाता है तो आप क्रोध अनुभव करते हैं। हर व्यक्ति का अलग स्वभाव होता है और आप हर किसी को अपने अनुसार नहीं बदल सकते।

80 साल के एक वृद्ध व्यक्ति घर में अपने 45 साल के उच्च शिक्षित बेटे के साथ सोफे पर बैठे थे। एकाएक एक कौआ आकर खिड़की के पास बैठ गया। पिता ने अपने बेटे से पूछा, “वह क्या है?” बेटे ने जवाब दिया, “वह कौआ है।” एक मिनट के बाद फिर पिता ने पूछा, “वह क्या है?” बेटे ने कहा, “मैंने अभी आपको बताया न कि वह कौआ है।” कुछ समय के बाद पिता ने तीसरी बार बेटे से फिर वही सवाल पूछा। इस बार बेटा बुरी तरह से झुंझला गया और बोला कि वह कौआ है। पिता ने चौथी बार बेटे से फिर वही बात पूछी। इस बार बेटा चिल्लाते हुए बोला कि मैंने कितनी बार आपको कहा कि वह कौआ है। क्या यह बात आपको समझ में नहीं आ रही?

कुछ समय के बाद वह वृद्ध पिता अपने कमरे में गए और एक डायरी लेकर आए, जो काफी सालों से उनके पास थी। डायरी का एक पन्ना पलटते हुए उन्होंने अपने बेटे से उसे पढ़ने को कहा। उसमें लिखा था, “आज मेरा 3 साल का बेटा घर में सोफे पर बैठा था कि तभी एक कौआ खिड़की पर आकर बैठ गया। मेरे बेटे ने 23 बार मुझसे पूछा कि वह क्या है और मैंने हर बार उसका जवाब दिया कि वह

कौआ है। मैंने हर बार उसे बड़े ही प्यार से बताया। मैं एक बार भी अपने बेटे पर झुंझलया नहीं था। यहां गौर करने वाली बात यह है कि जहां बेटे ने 23 बार सवाल किया कि वह क्या है तब भी पिता को झुंझलाहट महसूस नहीं हुई लेकिन वहीं पिता द्वारा चौथी बार ही सवाल पूछने पर बेटा चिढ़ गया।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और वह निर्वात में नहीं रह सकता। हमें दूसरों के बारे में भी विचार करना होगा और सजग रहना होगा। हर मनुष्य की परेशानी एक-दूसरे से जुड़ी हुई होती है इसलिए उसका आपस में समाधान किया जाना चाहिए। हमें अपने व्यवहार में बदलाव लाना होगा।

बड़प्पन का नजरिया विकसित कीजिए और हर चीज के लिए लोगों को धन्यवाद दीजिए। यह समझते हुए कि आपने जो कुछ भी हासिल किया है उसमें दूसरों का भी योगदान है और यही बात आपको और बेहतर बनाएगी।

अपने अहं की संतुष्टि के लिए हम अक्सर यह सोचते रहते हैं कि हमें कोई गलती नहीं करनी है। लेकिन हकीकत यही है कि हम जन्म से सकारात्मक और नकारात्मक गुणों का मिश्रण हैं। विजेता बनने के लिए आप जन्म से ही सारे गुण लेकर नहीं पैदा होते हैं। ये सारे गुण आपको इस ज़िंदगी में सीखने पड़ते हैं। कोई भी सफल इंसान अपने कामयाबी को कायम नहीं रख सकता अगर वह प्रकृति की सकारात्मक चीजों को स्वीकारता नहीं हो। विजेता बनने के क्रम में आपको अपने अस्वीकृत और नकारात्मक गुणों को जानना होगा और उनके प्रति सकारात्मक रवैया अपनाते हुए कार्य करना होगा। तभी आपको इसका नतीजा हासिल होगा। यह आपका पहला लक्ष्य होना चाहिए और इसे हासिल करने के बाद विजेता बनने की आपकी यात्रा जारी रहेगी।

2.4 व्यक्तिगत ईमानदारी में विश्वास कीजिए

हम इस चीज में विश्वास करते हैं कि हर व्यक्ति अपनी एकता का प्रदर्शन करता है। हालांकि, हम ऐसा मानते हैं कि इस गुण का कामयाबी से कोई लेना-देना नहीं है। लेकिन सच्चाई यही है कि जो व्यक्ति अपने

साथ ईमानदारी नहीं बरतता, वह दूसरों के साथ भी कभी ऐसा नहीं कर सकता।

जीवन यात्रा के दौरान अनेक लोगों से हमारा पाला पड़ता है लेकिन ऐसे कम ही लोग मिलते हैं जो स्वयं को और दूसरों का आदर करते हों।

आप किसी भी क्षेत्र में ऐसा कोई एक भी ऐसा सफल व्यक्ति नहीं खोज सकते हैं जिसमें व्यक्तिगत ईमानदारी न हो। भले ही आप में यह गुण न हो पर आप इस बात को साबित जरूर करने का प्रयास करते होंगे कि आप एक विश्वसनीय व्यक्ति हैं।

कोई भी प्राप्त ज्ञान और दक्षता तभी आपको बेहतर परिणाम दे सकती है जब वह आपके व्यक्तित्व में पूरी तरह घुल-मिल चुकी हो। आप दूसरों के ज्ञान या जानकारी के मुताबिक सटीक कार्य नहीं कर सकते क्योंकि आपको उसके परिणाम के बारे में तय तौर पर कुछ पता नहीं है।

एक प्रोबेशनर कलेक्टर ने एक जिले में ज्वाइन किया। ठीक उसी समय उसके वरिष्ठ अधिकारी का तबादला सचिवालय में हो गया। वे जिला छोड़कर जा रहे थे इसलिए प्रोबेशनर कलेक्टर उनसे कुछ टिप्स लेने के लिए आया। वरिष्ठ अधिकारी ने जवाब दिया, “चिंता की कोई बात नहीं मैंने अपनी टेबल पर 3 लिफाफे छोड़ दिए हैं। उन पर क्रमानुसार नंबर डाल दिए हैं। जब कोई समस्या आए तो एक-एक करके उन्हें खोलना।” वह अधिकारी जिला छोड़कर सचिवालय चला गया।

तीन महीने के बाद उस जिले में जबरदस्त बारिश हुई और बाढ़ आ गई। युवा कलेक्टर चिंतित हो गया और उसे कुछ भी सूझ नहीं रहा था। एकाएक उसे लिफाफों के बारे में याद आया और उसने पहला लिफाफा खोला। उसमें लिखा था, “जब भी कोई समस्या आए तो पहले अधिकारियों पर उसका दोष मढ़ दो।” उसने ऐसा ही किया।

बाढ़ खत्म होने के बाद मुख्यमंत्री का उस इलाके में दौरा करने का कार्यक्रम तय हुआ। सारे इंतजाम किए गए पर मुख्यमंत्री की गाड़ी सड़क खराब होने की वजह से पंक्चर हो गई। मुख्यमंत्री ने इसके लिए सफाई मांगी तो कलेक्टर चिंतित हो उठा। फिर उसने दूसरा लिफाफा निकाला, “किसी भी समस्या को निबटाने के लिए उसका सारा इल्जाम

अपने कनिष्ठ अधिकारियों पर लगा दो।” उसने ऐसा ही किया और मुख्यमंत्री संतुष्ट हो गए।

कुछ दिन तो शांति से बीते। एकाएक सही तरीके से मामले को न सुलझा पाने की वजह से जिले के हेडक्वार्टर में दो गुट आपस में जमकर भिड़ गए और कानून व्यवस्था बिगड़ गई। कलेक्टर उस स्थिति से निबट नहीं पाया और उसने तीसरा लिफाफा खोला। खोलते हुए वह अवाक् रह गया क्योंकि उस लिफाफे में जो निर्देश थे वे इस तरह थे, “तुम्हारे पद पर आने वाले अगले पदाधिकारी के लिए इसी तरह तीन लिफाफे तैयार करो जो तुम्हें कल यहां से रिसीव करेगा।” अगर आप व्यक्तिगत तौर पर सत्यनिष्ठ या ईमानदार नहीं हैं तो आपके साथ भी ऐसा नतीजा हो सकता है। कोई भी सीखा हुआ ज्ञान आपको अपनी गणना या उम्मीद के मुताबिक परिणाम नहीं दे सकता। जब तक आप खुद उसकी परख न कर लें।

सफलता की सीढ़ी पर चढ़ने का सर्वोत्तम तरीका है अवसरों को भांपते हुए चढ़ना।

मेरे एक मित्र हैं जो मेरे एक छात्र के पिता भी हैं, उनसे वर्तमान शिक्षा पद्धति की असफलताओं पर चर्चा होती रहती है। वे इस प्रोफेशन से जुड़े हुए नहीं हैं। ऐसा उनकी चर्चाओं में प्रतीत होता है। उनके बच्चे प्रतिभावान हैं। उनका लड़का छात्रवृत्ति के आधार पर आईआईटी और आईआईएम में पढ़ चुका है और बेटी आईआईटी करना चाह रही है।

एक दिन उन्होंने मुझसे कहा कि मैं अपने शहर की सारी सम्पत्ति को बेचकर अपने पैतृक स्थान पर जाकर आराम करना चाहता हूँ। मुझे मालूम है कि वे एक अच्छे खाते-पीते परिवार से हैं और उनके पास कई एकड़ जमीन है। एकबार उनकी बेटी का किसी अच्छे प्रोफेशनल कॉलेज में एडमिशन हो जाए तो फिर वे ऐसा कर पाएंगे। उन्होंने बताया कि उन्हें अब और पैसों की जरूरत नहीं है और अगर होगी भी तो पर्याप्त पैसा जमा है।

वे एक कामयाब इंसान रहे हैं और कुलीन परिवार से हैं। लेकिन उनका इस तरह से सोचना कहीं न कहीं मुझे बहुत कचोट रहा था। मैंने जब इस बात की जांच की तो पता चला कि उन्होंने बुरे वक्त में अपने साथियों की

तन-मन-धन से मदद की थी लेकिन आज जब उन्हें जरूरत है तो कोई भी दिलेरी नहीं दिखा रहा। इसे व्यक्ति का एकाकीपन से जूझना भी कहा जा सकता है। शायद यही वजह है कि वे शहर छोड़कर जाने की बात करते हैं।

2.5 चुकाने की प्रवृत्ति अपनाएं

हम ऐसे बहुत से लोगों को जानते हैं जो यह शिकायत करते हैं कि हमने विपरीत परिस्थितियों में लोगों की मदद की है लेकिन हम खुद लोगों का शिकार हो गए। कारण भले ही जो रहे हों पर हमें इस पर विचार करना चाहिए कि क्या वाकई में ऐसा हुआ है या फिर हम ऐसी सोच रखते हैं। एक बात विश्वास रखिये कि अगर किसी को उसका लक्ष्य हासिल करने में आप उसकी मदद करेंगे तो वह भी आपको इस तरह की मदद जरूर करेगा।

किसी की दान के तौर पर मदद करना और किसी की उसके लक्ष्य हासिल करने में मदद करना, दोनों ही अलग बातें हैं। चीन में एक कहावत है, “अगर आप किसी को एक मछली देते हो तो आप उसके एक वक्त के भोजन का इंतजाम करते हो लेकिन अगर आप उसे मछली पकड़ना सिखाते हो तो वह आजीवन अपने परिवार के लिए भोजन जुटाने में सक्षम हो सकेगा।”

दान देने की आदत को अच्छी आदत नहीं कहा जा सकता। यदि आप किसी को कुछ देते हो तो ऐसी चीज दो जो उसकी जिंदगी में बदलाव पैदा कर सके यानी वह स्थायी बदलाव लाने वाली चीजें हो। किसी से कुछ लेते हो तो दूसरे तरीके से उसे भी कुछ चुकाने की प्रवृत्ति मन में पैदा करो। आम के पेड़ को देखो जो आपको किसी भी हालत में फल मुहैया कराता है। यहां तक कि आप उसे पत्थर मारते हो फिर भी वह आपको फल देता है। यह एक उच्च स्तर का दान है और आपको ऐसे दान में विश्वास करना चाहिए। इसी दान का एक उदाहरण इस किस्से में बयां करता हूं।

बहुत वर्षों पहले एक सेब का पेड़ था। एक छोटा बच्चा उस पेड़ से प्रेम करता और उसके इर्द-गिर्द खेलता था। हर दिन छोटा बच्चा पेड़ पर चढ़ता, सेब तोड़ता, खाता और उसकी छांव में खेलता था। पेड़ भी उसके साथ खेलता था। समय बीतता गया और वह बच्चा बड़ा हो गया और अपनी व्यस्तताओं के चलते उसने वहां आना छोड़ दिया। एक दिन

वह पेड़ के पास आया तो देखा कि पेड़ उदास है, पेड़ ने उससे पूछा, “आओ और मेरे साथ खेलो।”

बच्चा बोला, “मैं अब बालक नहीं रहा, मुझे अब खिलौने चाहिए पैसा चाहिए।” सेब के पेड़ ने कहा, “देखो, मेरे पास पैसा तो नहीं है पर तुम सेब तोड़ कर बाजार से पैसा ला सकते हो। बच्चा खुश हो गया और उसने पेड़ से सारे फल तोड़ लिए और चला गया और फिर वापस नहीं लौटा। पेड़ बहुत उदास हो गया। बहुत दिनों के बाद एक दिन जब वह आया तो पेड़ ने खुश होकर कहा— आओ, मेरे साथ खेलो।” लड़का बोला कि “अब मेरे पास खेलने के लिए वक्त नहीं है। मुझे अपने परिवार के साथ काम करना पड़ता है। हमें एक घर की जरूरत है। क्या तुम मेरी मदद कर सकते हो?” पेड़ ने जवाब दिया कि उसके पास घर तो नहीं है। पर वह उसकी शाखाएं काट कर घर बना सकता है। वह लड़का उस पेड़ से शाखाएं काट कर खुशीपूर्वक घर बनाने ले गया। पेड़ उसे देख कर खुश हो रहा था लेकिन वह लड़का वापस नहीं लौटा।

पेड़ दोबारा से अकेला पड़ गया और उदास रहने लगा। गर्मी के समय एक दिन उस लड़के को वहां आया देख पेड़ प्रसन्नता से झूम उठा और उसे खेलने के लिए कहा। लड़के ने कहा, “मैं अब बड़ा हो चुका हूं और फिलहाल उदास हूं। मुझे शांति चाहिए इसलिए मैं नदी में भ्रमण करना चाहता हूं। मुझे एक नाव की जरूरत है।” पेड़ बोला— “मेरा तना काट कर तुम नाव बना सकते हो और काफी दूर तक भ्रमण कर सकते हो।”

लड़के ने तना काटा और नाव बना कर चल दिया नदी में घूमने। काफी दिनों तक वह लौट कर वापस नहीं आया। अंततः वह कई सालों के बाद वापस आया। उसे देख कर पेड़ बोला, “माफ करना मुझे, मैं अब तुम्हें कुछ भी देने लायक नहीं बचा। तुम्हारे लिए अब मेरे पास सेब भी नहीं हैं...” इस पर लड़के ने जवाब दिया कि “मेरे भी अब दांत नहीं रहे।” पेड़ ने उदासी से कहा— “तुम्हारे चढ़ने के लिए अब मेरी डालियां भी न रहीं।” लड़का बोला। “अब मैं ऐसा कर पाने में सक्षम नहीं हूं। मैं बस अब तुम्हारी जड़ों में बैठ कर आराम करना चाहता हूं।” पेड़ बोला, “पुराने पेड़ों की शाखाएं आराम

करने की सबसे अच्छी जगह होती हैं। आओ, यहां बैठो और आराम करो।” लड़का वहां बैठ गया और पेड़ खुश हो गया। खुशी से उसके आंसू टपक रहे थे।

अधिकतर अध्यायों में आपने देखा होगा कि मैं इस बात पर जोर देता रहा हूं कि किसी को उसके लक्ष्य की प्राप्ति में सहायता करने पर वह किसी न किसी रूप में आपके लक्ष्य की प्राप्ति में आपका भी सहायक हो सकता है। यह तय मान कर चलिए कि अगर आपकी मदद से किसी ने कुछ हासिल किया है तो समझिए उसमें से कुछ हिस्सा निश्चित रूप से आपको भी हासिल हुआ है।

आपका नजरिया चुनाव पर दृढ़ हो तो नतीजा भी उसके मुताबिक होता है। यह चुनाव वह नहीं है जो आप भविष्य को ध्यान में रखकर निर्धारित करते हैं। यह निर्भर करता है कि आप कैसे इसको लेते हैं और इसके लिए क्या करते हैं।

आपकी क्रियाएं और प्रतिक्रियाएं आपकी सफलता का पैमाना हैं। अगर आप की दृष्टि लघु है तो आप कभी भी बड़ी चीजों को नहीं पा सकते। यानी बड़ी चीजें पाने के लिए आपको बड़ा सोचना होगा।

एक बार मेरे एक मित्र का ट्रांसफर दूरस्थ इलाके में होने से उनका बेटा मेरे साथ रहने लगा। वह उस समय स्कूल में पढ़ता था। मेरे पड़ोसियों और सहयोगियों ने मुझे ऐसा करने से मना किया था। लेकिन मैंने उस लड़के को अपने यहां रखा क्योंकि तीन पीढ़ी पहले उस परिवार ने मेरे परिवार की काफी मदद की थी और मुझे उसके बदले में कुछ चुकाने का मौका मिला तो मैं उसे पूरा करना चाहता था।

उस लड़के की गणित की परीक्षा के दौरान उसके प्राइवेट ट्यूटर की तबीयत खराब हो गई। मैंने एक दूसरे शिक्षक से उस बच्चे को पढ़ाने की बात कही। मैंने उनसे कहा कि मैं उस बच्चे को आपके यहां पहुंचा दूंगा और ले आऊंगा। मैंने इसके लिए कुछ पेमेंट की भी बात कही पर उन्होंने मना कर दिया और किसी दूसरे शिक्षक का नाम सुझाया।

ज्यादा संख्या में प्राइवेट ट्यूशन करने और स्कूल में ठीक से नहीं पढ़ाने के आरोप में उस शिक्षक को मैनेजमेंट ने हटाना चाहा था लेकिन मैंने

हस्तक्षेप करते हुए उनकी सेवा बरकरार रखी थी। पिछले साल उनके वेतन में भी अच्छी वृद्धि हुई थी। हालांकि इस समस्या से अवगत होने के बाद बहुत से शिक्षकों ने मुझसे उस लड़के को पढ़ाने के बारे में पेशकश की।

हमारे समाज में ये सब आमतौर पर लगातार चलता रहा है। हम हर किसी को उसके द्वारा की गयी मदद के बदले में बिना कुछ सोच-विचार किए कुछ लौटाना चाहते हैं। इन सबसे ऊपर उठते हुए हमें इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि जब इंसान को किसी चीज की जरूरत हो और हमारे पास उसकी सेवा करने लायक कुछ हो तो हमें उसकी सहायता अवश्य करनी चाहिए। किसी व्यक्ति को उसके द्वारा की गई भूल को माफ करके आप अपनी इस प्रवृत्ति को अवश्य व्यवहार में लाइये। ●



अध्याय-3

अपने नजरिए को कैसे आकार दें

आप वैसे ही बन जाते हैं, जैसे विचार रखते हैं। क्या यह सच्चाई नहीं है? आपकी सोच आपकी नियति को तय करती है, यह आपकी सोच का ही नतीजा होती है। आप अपनी सोच से ज्यादा विकास नहीं कर सकते और न ही आप उससे ज्यादा कुछ हासिल कर सकते हैं, जिसे आपने सपने में नहीं देखा हो। केवल लाटरी का मामला अपवादस्वरूप हो सकता है। लोग अपने आस-पास की चीजों के मुताबिक ही चीजों को खोजने में विश्वास रखते हैं।

कोई प्राचीन स्मारक अपने वर्षों पुराने अस्तित्व को कायम रखने के कारण पर्यटकों का चहेता बना रहता है। इसे ढांचे को बनाने वाले ने पहले इसका सपना बुना होगा। फिर इसका डिजाइन तैयार करके काम में हाथ लगाया होगा। सामान्यतौर पर आदमी किसी नई चीज को शुरू करने-भर से ही डरता है और यही वजह है कि मानसिक रूप से विकलांग व्यक्ति कुछ भी प्रयोग करने से नहीं हिचकिचाता है।

आपके महान दृष्टिकोणों का परिणाम ही आपको बड़े कार्यों की ओर प्रोत्साहित करता है।

अपनी सोच के मुताबिक ही हम अपने नजरिए को आकार देते हैं। हमें बचपन से ही सिखाया जाता है कि अंधेरा दुष्टात्माओं का प्रतीक है, जिससे हमें भय लगने लगता है लेकिन जब हम इस तथ्य को समझ जाते हैं कि अंधेरा कुछ नहीं बल्कि प्रकाश की अनुपस्थिति की वजह से होता है, तो सारा डर गायब हो जाता है। यह तो महज एक उदाहरण है वरना हमने अपना नजरिया कुछ ऐसा बना लिया है कि हम डरते ज्यादा हैं।

क्या आपने किसी शिशु को मोमबत्ती की लौ छूते हुए देखा है और फिर उसके बाद उसकी प्रतिक्रिया क्या होती है? आपके मना करने के बावजूद वह उसे छूना चाहता है, तब तक जब तक एक बार उसका हाथ उससे जल न जाए। जब तक उस लौ से उसका हाथ जलेगा नहीं तब तक वह कोशिश करता रहेगा। एक बार हाथ जल जाने के बाद वह लौ से दूरी बना लेता है।

किसी व्यक्ति की सफलता की राह में सबसे बड़ी बाधा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से असफल होने के भय का हावी रहना है। सफलता और पिछड़ना एक ही संदर्भ में होते हैं। बस उसमें व्यक्ति, दिन, समय आदि का फर्क होता है। सफल लोगों में पिछड़ जाने का भय कुछ कम होता है। पिछड़ने से डरना व्यक्ति की प्रवृत्ति होती है जो उसे आगे बढ़ने से रोकती है। लेकिन एक बार आप सफल हो गए तो फिर डर कैसा। जिनके पास कुछ भी खोने को नहीं होता, वे डरते नहीं हैं। बस आपको अपने नजरिए में बदलाव लाना होगा।

आप दुनिया में हर चीज को जानने की कोशिश करें, जरूरी नहीं कि आप जिंदगी में हर बात का जवाब पा ही लें। लेकिन आपको इस प्रक्रिया में लगे रहना चाहिए। जीवन में गंतव्य से ज्यादा यात्रा का महत्त्व है। अपनी जीवन यात्रा में चीजों को खोजने की प्रवृत्ति आपको बनाए रखनी चाहिए। मैंने जिंदगी में बहुत सारे काम किए हैं पर योजनाबद्धता नहीं बना पाया। मैं चीजों को खोजता और जिसमें आनंद महसूस होता वह काम करता। आपको जीवन में हर बात का जवाब नहीं मिल सकता।

व्यक्ति को अपने भीतर से भय को निकाल कर अपने लिए सफलता की राह बनानी चाहिए और इसे केवल वह खुद ही कर सकता है। कोई भी बाहरी मदद परिस्थिति को निकृष्ट बना देगी। महज इस किताब को पढ़-भर लेने से आप सफल नहीं हो सकते, न ही बाजार में बिकने वाली इस तरह की दूसरी किताबों को पढ़ने से ऐसा मुमकिन है। लेकिन ऐसा मुमकिन है अगर आप अपने आस-पास होने वाले घटनाक्रम पर पैनी निगाह रखते हों और बिना पिछड़ने के भय के आप सफलता की राह पर आगे बढ़ने की चेष्टा करें। आप विश्वास कीजिए कि इस तरीके से आप योजनाबद्ध ढंग से कार्य करते हुए हर सफलता पा सकते हैं बस आपको अपने व्यवहार में थोड़ा लचीलापन लाने की आवश्यकता है। व्यक्ति का नजरिया तीक्ष्ण ऊष्मा की तरह से काम करता है जो कि साधारण ऊष्मा से ज्यादा ताकतवर होती

है। अपनी तीक्ष्ण ऊष्मा का इस्तेमाल करते हुए आप अपनी सफलता की कहानी खुद गढ़ सकने में सक्षम हो सकते हैं। इससे आप अपने सपनों को साकार कर सकते हैं। अपने बदले नजरिए का भरपूर आनंद लीजिए जो आपकी मौलिक संपत्ति है।

आपकी जिंदगी में कई झटके आएंगे लेकिन अब झटकों से घबराने की जरूरत नहीं है। जब आप सड़क पर कार या बाइक चलाते हैं तो कई बार झटका लगता है पर आप उसे नियंत्रित करते हैं। आप क्लच और गियर को एडजस्ट करके झटकों से निजात पाते हैं। जिंदगी भी इसी तरह से है। जीवन के झटकों को अपने नजरिए से एडजस्ट करिए तब देखिए कैसे सहज रूप से आपको जीवन का आनंद हासिल होगा।

जीवन में आने वाले ऐसे झटके आपको एडजस्टमेंट की सीख देते हैं, जिसे आप महज अपने नजरिए से काबू में ला सकते हैं इसके लिए आपको सकारात्मक सोच विकसित करनी होगी। अपने आपमें इस सबसे टक्कर लेने की क्षमता का विकास करिए, तब देखिए आपको सफलता का भरपूर पुरस्कार मिलेगा।

3.1 आशावादी बनिए

मैं एक ऐसे शहर में रहता हूँ जो प्राचीन सभ्यता और स्मारकों के लिए पर्यटकों के बीच प्रसिद्ध है। मैं देश के बहुत सारे हिस्सों में जा चुका हूँ परन्तु इनमें मुझे जयपुर सबसे अच्छा लगा। ऐसा इसलिए नहीं कि मैं यहाँ पहले से रहता आ रहा हूँ बल्कि यहाँ का शांतिपूर्ण वातावरण इसका सर्वप्रमुख कारण है। मेरे घर से रेलवे स्टेशन 15 किलोमीटर दूर है। जिसके लिए रास्ते में 6 रेड लाइट सिग्नलों को पार करना पड़ता है। मुझे कहीं भी जाना हो तो मैं समय से पहले ही घर से निकलता हूँ। यहाँ यह चर्चा का विषय नहीं है पर एक बात है जो मैं आपसे कहना चाहूँगा।

मान लीजिए कि मुझे घर से स्टेशन जाना है और मुझे 6 रेड लाइट पार करनी पड़ें तो इसके लिए मैं 6 जगहों पर सिग्नल ग्रीन होने का इंतजार नहीं करूँगा, बल्कि मैं पहले सिग्नल पर पहुँचकर सीधे उसे पार कर लूँगा लेकिन अगर वहाँ रेड लाइट हो तो मुझे लाइट के ग्रीन होने का इंतजार करना पड़ेगा। सिग्नल लाइट चाहे रेड हो या ग्रीन मैं कभी भी घर से निकल सकता हूँ। इसलिए स्टेशन तक पहुँचने के लिए मुझे किसी भी बाधा रूपी सिग्नल को नहीं पार करना होता है।

अगर मैं आशावादी हूँ तो मैं स्टेशन तक की यह दूरी लगभग आधे घंटे में तय कर लूंगा। लेकिन अगर मैं निराशावादी हूँ तो सिग्नल पर होने वाली इस देरी के लिए सरकारी मशीनरी को दोषी ठहराऊंगा।

सफलता की ओर हमें वही राह ले जाती है जिसे हम जानते हैं। कभी-कभार यह 15 किलोमीटर से कम भी हो सकती है। लेकिन जब तक हमें यह नहीं पता है तब तक तो उसी नजरिए पर चलना होगा। अगर आपको जीवन में कुछ पाना है तो आशावादी नजरिया अपनाना होगा। अगर आपके जीवन में अंधेरा है तो इसका मतलब है कि वहां अभी प्रकाश प्रतीक्षा में है और जैसे ही प्रकाश होगा। यकीन मानिए आपके जीवन से सारा अंधेरा खत्म हो जाएगा।

आशावादी व्यक्ति वह होता है जिसे हर जगह ग्रीन लाइट ही दिखाई देती है जबकि निराशावादी व्यक्ति को हर जगह रेड लाइट ही दिखाई देती है। सफल पुरुष कलरब्लाइंड होते हैं।

अपने बुरे दिनों में भी जो खुद पर विश्वास बनाए रखते हैं। उन्हें जिंदगी उसका पुरस्कार जरूर देती है। आपको कभी भी बेहतर मौका मिलने का इंतजार नहीं करना चाहिए बल्कि परिस्थिति को अपने वश में करने का उपाय करते रहना होगा। ऐसा कभी भी और किसी भी स्तर पर हो सकता है, न्यूनतम या अधिकतम।

समस्या हर स्तर पर एक समान ही रहती है। जब मैं प्राइमरी स्कूल में शिक्षक था तब भी समस्याएं थीं और आज स्वतंत्र रूप से कार्य कर रहा हूँ तब भी हैं। जब मैं शिक्षक था तो सोचता था कि इस दुनिया में सबसे अच्छा व्यक्ति हेडमास्टर है, जब मैं प्रिंसिपल बना तो लगा कि स्कूल मैनेजमेंट कमिटी का चेयरमैन सबसे सफल व्यक्ति होता है लेकिन जब मैं खुद तीन स्कूलों की मैनेजमेंट कमिटी का चेयरमैन बन चुका हूँ तो लगता है कि इन सबसे अच्छा प्राइमरी शिक्षक ही होता है, जिसके पास कार्य करने का वक्त इन सब लोगों से कहीं ज्यादा होता है। आप लोगों ने इस संदर्भ में शायद प्रसिद्ध कहानी सुनी होगी कि एक व्यक्ति किस तरह ईश्वर से उनका वरदान वापस लेने को कहता है। एक दिन एक मजदूर ने सपना देखा कि वह मजदूर से सुपरवाइजर बन गया है और मजदूरों से काम करा रहा है। फिर वह सुपरवाइजर से ठेकेदार बन गया है लेकिन ठेकेदारी के दौरान

वह कई उलझनों में फंसता चला गया है, इसलिए एकबार फिर से वह मजदूर बनना चाह रहा है।

आपने देखा कि यह फर्क केवल आपके नजरिए की वजह से पैदा होता है। एक बार अगर आप आशावादी हो गए तो फिर आप जहां भी रहेंगे, परिस्थिति का आनंद उठाएंगे। मैं इस तथ्य को स्वीकार करता हूँ मैं आशावादी नजरिए से चीजों को देखता हूँ।

एक दिन किसी प्रोजेक्ट पर काम करने के दौरान मेरे पी.ए. ने मुझसे कहा कि यह गलती कंप्यूटर की त्रुटी की वजह से हो गई है; मैंने तुरंत कहा कि कंप्यूटर एक प्रोसेसिंग यूनिट है और उससे वही आउटपुट निकलेगा जो हम उसे बतौर इनपुट डालेंगे। अगर हम उसमें डाटा ही गलत डालेंगे तो फिर परिणाम भी गलत ही निकलेगा।

आप स्वयं को इस बात के लिए तैयार रखिए कि जीवन में अच्छे और बुरे दोनों ही परिणाम लगातार आते रहते हैं। जिंदगी में इस तरह मिश्रित परिणाम आपको प्राप्त होते रहेंगे, जिस रास्ते पर आपको आगे की ओर बढ़ते जाना है। जिंदगी एक रफ्तार है और आपको कभी भी इस रफ्तार को रोकना नहीं है।

अगर जिंदगी में आप सकारात्मक रवैया अपना कर चलते हैं तो आपको अक्सर अच्छे अवसर मिलते रहेंगे। जिंदगी में आने वाले झटकों को झेलने के लिए हमेशा तैयार रहिए और उन झटकों का सकारात्मक रवैए और आशावादी नजरिए से मुकाबला कीजिए। फिर देखिए, आने वाला समय आपका होगा।

3.2 सकारात्मक परावर्तक बनिए

एक छोटे बच्चे को टेबल पर बादाम से भरा एक जार रखा हुआ मिला। बच्चे ने सोचा, “अगर मां यहां होती तो इस जार में से कुछ बादाम निकाल कर मुझे जरूर देती, इसलिए मुझे इसमें से कुछ बादाम निकालने चाहिए” और उसने जार का ढक्कन खोलकर उसमें हाथ घुसाया और पूरी मुट्ठी में जितने बादाम आ सके उसे समेट लिया। लेकिन जैसे ही वह बच्चा जार से हाथ बाहर निकालने लगा तो उसका हाथ उसमें फंस गया क्योंकि पूरी मुट्ठी बादाम से भरी हुई थी। उसने दोबारा कोशिश की पर असफल रहा। अब वह रोने लगा।

इसी बीच बच्चे की मां कमरे में आई और उसने पूछा, “क्या हुआ?” बच्चे ने रोते हुए कहा, “मेरे हाथ में बादाम हैं और वह बाहर नहीं निकल रहा है।” मां ने उस बच्चे से कहा। “ज्यादा लालची मत बनो। कुछ बादाम नीचे जार में गिरा दो और एक बार में केवल 2-3 बादाम ही बाहर निकालो।” बच्चे ने ऐसा ही किया और आसानी से उसका हाथ बाहर निकल गया। बाद में बच्चे ने सोचा कि काश! वह इस बात को पहले ही खुद समझ गया होता। आखिर कितना आसान तरीका था। मेरे दिमाग में यह बात पहले क्यों नहीं आई।

हममें से ज्यादातर लोग इस बच्चे की तरह ही कार्य करते हैं। अगर हमारे हाथ कुछ लग जाता है तो हम सोचते हैं कि अब सारा ही उठा लें। ऐसा इसलिए भी होता है क्योंकि हम सोचते हैं कि क्या पता हमें इस चीज के लिए दोबारा मौका मिले भी या नहीं। सोचने की हमारी यह नकारात्मक प्रवृत्ति सामाजिक ढांचे में हो रहे बदलाव की वजह से भी है। परिवार की परिभाषा सिमट रही है और हम अब बहुत ही संकुचित दायरे (हम दो हमारे एक) में सिकुड़ रहे हैं। अब हम हर चीज को शतप्रतिशत करना चाहते हैं और उसमें भी बिना किसी समझौते के, जो हमारी नकारात्मक सोच की प्रवृत्ति को बढ़ाता है। माता-पिता ऐसा सोचते हैं कि हमारा इकलौता बच्चा ही हमारा भविष्य है और हर चीज उसी के लिए है।

इकलौता बच्चा होना माता-पिता के लिए कोई बुरी बात नहीं है लेकिन बच्चे पालन-पोषण के दौरान कुछ समस्याएं पैदा होंगी। बच्चा वही समझता है जो वह देखता है। इकलौते बच्चे पर माता-पिता ज्यादा ध्यान देते हैं और हर तरह से उसका ख्याल रखते हुए उसे खुश रखना चाहते हैं, जिससे वह किसी चीज से “समझौता” करना नहीं सीख पाता। यहीं से सामाजिक तौर पर बिखराव की स्थिति शुरू हो जाती है।

उसे यह कभी नहीं सिखाया जाता है कि जिंदगी में कुछ ऐसी चीजें भी हैं, जिन्हें बिना किसी की मदद के हासिल नहीं किया जा सकता। समाज को संपूर्ण रूप से तब विकसित किया जा सकता है जब हम एक-दूसरे का सहयोग लेते हुए आगे बढ़ें। हम अपनी सोच का दायरा बढ़ाते हैं तो उससे समाज के साथ-साथ हमारा भी फायदा होता है। समाज के प्रति यह हमारा कर्तव्य बनता है कि हम बच्चों को ये सब चीजें सिखाएं।

सकारात्मक सोच की बदौलत आप हर चीज को ज्यादा बेहतर ढंग से कर पाएंगे

हर चीज आपके पास होते हुए भी आप तब तक सफल नहीं हो सकते जब तक आप के व्यक्तित्व में सकारात्मक सोच पैदा नहीं होगी। क्योंकि किसी चीज को हासिल करने की प्रक्रिया के दौरान आपको सकारात्मक सोच के साथ यह समझना होगा कि आखिर जो आप पाना चाहते हैं उसका वजूद है और आप उसे मानते हैं। अपनी बेटी की शादी तय करते समय मैं इस बात को तय नहीं कर पा रहा था कि मुझे शादी किसी जान-पहचान के रिश्ते में ही करनी चाहिए या फिर अनजान परिवार में भी शादी की जा सकती है। मेरे दिमाग में इस बारे में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही विचार पैदा हो रहे थे। इसलिए मैंने इसे एक साल के लिए स्थगित कर दिया। बाद में मैंने अपनी बेटी के पक्ष में ही फैसला लिया। मेरी बेटी इंजीनियरिंग में पोस्ट ग्रेजुएट है और भविष्य में किसी भी संकट का सामना करने में सक्षम है सकारात्मक सोच के साथ मैंने इस बारे में फैसला किया।

आपको सकारात्मक नजरिया बनाए रखने के लिए अपनी क्षमता और सोच पर नियंत्रण कायम रखना होगा। तभी आप जीवन में अच्छे फैसले ले पाएंगे। आपके गलत फैसलों से जिंदगी में जो आपका नुकसान होता है। उसका अगर आप मूल्यांकन करेंगे तो स्पष्ट रूप से यह बात उभर कर सामने आएगी कि आपने परिस्थिति को पूरे सकारात्मक रवैये से नहीं निबटारा था।

3.3 अपनी गतिविधियों पर नियंत्रण रखें

अगस्त, 2009 के आखिरी दिनों में जब मैं यह चैप्टर लिख रहा था उस समय अधिकांश खबरिया चैनलों पर एक ही तरह की खबर चल रही थी कि भारतीय जनता पार्टी की आंतरिक कलह ने उसकी “पार्टी विद ए डिफरेंस” की छवि को उजागर कर दिया है। यह ड्रामा इतना दिलचस्प था कि मेरे जैसा आदमी, जिसकी राजनीति में ज्यादा रुचि नहीं है वह भी आगे क्या होगा यह जानना चाह रहा था।

यह ड्रामा लोकसभा चुनाव के बाद से ही शुरू हो चुका था जब हरेक पार्टी कार्यकर्ता इस बात को लेकर सुनिश्चित था कि इस बार जीत तय है। हालांकि, कई राज्यों में इस पार्टी की सरकार है जहां जनता के बीच उनकी कार्यशैली संतोषप्रद मानी गई है। लेकिन पार्टी की हार के बाद हर बड़ा नेता एक-दूसरे पर दोषारोपण कर रहा है।

पार्टी के एक वरिष्ठ नेता जसवंत सिंह की जिन्ना पर लिखी किताब ने आग में घी डालने का काम कर दिया। मैंने यह किताब नहीं पढ़ी है लेकिन मैं यह नहीं समझ पाया कि वर्तमान परिदृश्य में इस किताब की क्या उपयोगिता हो सकती है। महज अपने राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों की प्रतिक्रिया के अलावा। निरक्षरता, गरीबी और मूलभूत सुविधाओं के अभाव सदृश्य बहुत-सी समस्याएं हमारे देश में मुंह बाए खड़ी हैं लेकिन हम उन सबको छोड़ बिना मतलब के मुद्दों की बाल की खाल उखाड़ते हैं।

मैं इतिहास का विरोधी नहीं पर हमारी शिक्षा पद्धति में जिस तरह इतिहास पढ़ाया जाता है उसका विरोधी हूं। हम इतिहास के शासकों के बारे में ही ज्यादा पढ़ाने में समय देते हैं कि फलाने शासक ने कितनों दिनों तक शासन किया और उसकी जन्मतिथि क्या थी, वगैरह-वगैरह, जिनका कोई शैक्षिक मूल्य नहीं है।

जैसा कि भारत में होता आया है, जसवंत सिंह को पार्टी से निकाल दिया गया और वे काफी हद तक गिरते चले गए और पार्टी के 'छिपे हुए राज' को उजागर करने की बात करने लगे।

उपरोक्त पैराग्राफ का कोई अर्थ नहीं होगा जब तक मैं यह नहीं कहूं कि खबरों में लालकृष्ण आडवाणी को 'किंग मेकर' की भूमिका में दिखाया जा रहा था। स्वतंत्र भारत में अब भी कितने मूढ़ लोग हैं जो "किंग" शब्द को भुला नहीं पाए हैं और यह भी देखिए कि अखबार में लिखने वाले एक जानकार व्यक्ति ने इस तरह लिखा कि।

मैं मानता हूं कि सफल व्यक्ति अपनी गतिविधियों पर नियंत्रण रखते हैं और हमेशा अपने नजरिए के मुताबिक परिस्थिति को ढालते हैं। अपनी गतिविधियों पर नियंत्रण रखकर अप्रत्यक्ष तौर पर आप स्वयं को काबू में रखते हैं और इस तरह से कोई भी आप पर नियंत्रण बनाने में सक्षम नहीं हो सकता। आपके साथ जो हो रहा है उसे आप

काबू में नहीं कर सकते लेकिन अपने नजरिए में बदलाव लाकर आपके साथ जो होता है उसे बदल सकते हैं और इस तरह आप पर कोई हावी नहीं होता बल्कि आप खुद अपने मास्टर बनते हैं।

हर व्यक्ति अपनी गतिविधियों पर नियंत्रण रखना चाहता है लेकिन कुछ ही लोग ऐसा कर पाते हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि हमारे आस-पास जो लोग हैं वे हमारी नकारात्मक चीजों का ही विश्लेषण करते रहते हैं, जिससे हम अपनी क्षमताओं पर संदेह करना शुरू कर देते हैं। आम के बगीचे में खड़े होकर अमरूद के फल के बारे में नहीं सोचा जा सकता। ऐसा ही हमारी सोच के साथ होता है।

अपने आस-पास जिस तरह का वातवरण व्यक्ति को मिलता है उसी के अनुरूप उसकी सोच विकसित होती है और उसके व्यक्तित्व की सोचने की प्रक्रिया उसी दिशा में अग्रसर होती है। आपने देखा होगा कि किसी खास चीज के बारे में विभिन्न राज्य के लोगों की सोच भिन्न-भिन्न होती है।

एक बार अगर आपने जिंदगी की लड़ाई में जीतने के बारे में ठान लिया तो फिर विजेता की तरह से व्यवहार करना शुरू कर दीजिए। आपके अधीन जितनी भी चीजें हैं। उन सबको पूरी क्षमता से नियंत्रण में करके आगे बढ़ते रहिए। कोई मजदूर अगर सही दिशा में काम करता है तो निश्चित ही उसे सफलता मिलती है।

3.4 अक्षमताओं से सीख लीजिए

नाकामयाबी एक मानसिक अवस्था है। एक बार अगर आप असफल हो जाते हैं तो आप सोचने लगते हैं कि आपका आकलन गलत था, जिससे परिणाम सही नहीं आए और अब आपको फिर से खुद में सुधार करने का मौका नहीं मिलेगा। मुझे वह दिन याद आता है जब मैंने अपनी बेटी से शाकाहारी खाना बनाने के लिए कहा था। वह छुट्टी का दिन था। वह नौ बजे से पहले नहीं उठती थी लेकिन उस दिन वह 7 बजे किचन में थी। उसने खाना बनाया और सबको खिलाकर उनकी प्रतिक्रिया जानने के लिए बेसब्री से इंतजार करने लगी। हम लोगों ने खाना शुरू किया तो ऐसा लगा ही नहीं कि यह खाना मेरी बेटी ने बनाया है। सभी ने उसकी तारीफ की और मैंने उसे बताया कि इस खाने को और ज्यादा कैसे सुधारा जा सकता है। वह लगातार खाना बनाने का अभ्यास करती रही और अच्छा खाना बनाने लगी।

अगर वह पहले ही यह सोचकर डर जाती कि उसे तो खाना बनाना आता ही नहीं है तो फिर वह यह सब कैसे सीखती। मैं अपने साथ काम करने वालों और बच्चों से यह कभी नहीं कहता कि यह कार्य उनकी क्षमता से परे है और यह उन्हें बोझिल लग सकता है।

नाकामयाबी की वजह आपका अपना ही फैसला होता है। आपकी कोशिशों का ही नतीजा होता है यह। दसवीं क्लास में गणित संभाव्यता चैप्टर में आपने सीखा होगा कि ताश की 52 पत्तियों में क्वीन के निकलने के कितने चांस होते हैं। यही हमारे फैसले पर भी लागू होता है। हमें बहुत-सी चीजों पर काम करना चाहिए। कई बार पहले प्रयास में ही अच्छा या सटीक परिणाम आ जाता है तो कई बार बहुत ज्यादा प्रयास करना पड़ता है। बिना कोशिश किए आपको कभी भी उसका परिणाम नहीं मिल सकता। बार-बार मिलने वाली असफलता से ही समस्या का समाधान निकल कर सामने आता है।

केवल मानव प्रजाति के साथ ही ऐसा नहीं होता बल्कि इस धरती पर रहने वाली हर प्रजाति के साथ ऐसा होता है और इसीलिए वे बेहतर परिणाम हासिल करने में जुटे रहते हैं। जीवों का एक से ज्यादा बच्चे पैदा करने का मतलब यही होता है कि उनमें कुछ के नष्ट होने का भय रहता है, जिससे कि संतति को बरकरार रखा जा सके। अगर एक ही प्रयास में बेहतर परिणाम हासिल हो जाता है और नष्ट होने की संभावना नहीं रहती तो वे इतनी बार प्रयास नहीं करते। पेड़ पौधों के साथ भी यह बात लागू होती है। वे बहुत ज्यादा तादाद में बीज पैदा करते हैं बहुत सारे बीजों में कुछ ही अंकुरित हो पाते हैं और अपने मातृवृक्ष की भांति फल-फूल पाते हैं।

सेब के पेड़ को देखिए एक पेड़ में तकरीबन पांच सौ फूल होते हैं और हरेक फल में दस से ज्यादा बीज। आखिर सेब के फल में इतने बीज होने की क्या जरूरत है। यहां प्रकृति हमें कुछ शिक्षा देना चाहती है। इसका मतलब होता है कि प्रवृत्ति में सारे बीज जमीन में उगते नहीं, इसलिए ज्यादा से ज्यादा बीज पैदा करते हैं जीव। इसको ऐसे भी समझा जा सकता है कि एक नौकरी पाने के लिए हम 20 जगह इंटरव्यू देते हैं। एक अच्छा कर्मचारी रखने के लिए नियोक्ता 40 लोगों का इंटरव्यू लेता है। एक मकान बेचने के लिए आप 50 लोगों से संपर्क करते हैं। यही बात कार के बारे में भी होती है। मकान, कार, इंश्योरेंस पॉलिसी

बेचने वाले भी पचासों लोगों से संपर्क करते हैं तब कहीं जाकर एक ग्राहक मिलता है। जब हम इस 'बीज के सिद्धांत' को समझ जाते हैं तो निराश नहीं होते। साथ ही हम पीड़ित होने की अपनी मानसिकता को भी त्याग देते हैं।

देखा जाए तो कई बार कामयाब व्यक्तियों को भी नाकामयाबी का मुंह देखना पड़ता है। जब चीजें आपके नियंत्रण से बाहर होती हैं तो अपनी जिदगी के प्रति व्यक्ति कंजूसी बरतने लगता है। दुनिया में अन्य लोगों के व्यवहार/बर्ताव को आप नहीं बदल सकते। न ही आप लोगों के व्यवहार के लिए नियम बना सकते हैं और जब लोग आपके मुताबिक नियमों का पालन नहीं करते तो आप क्रोधित हो जाते हैं। यही सोच संकुचित सोच है। जबकि आपको इसके उत्तर सोचने चाहिए। जब जाकर लोग आपकी प्रशंसा करेंगे। हर व्यक्ति को ईमानदार बनना चाहिए।

आपके पति/पत्नी या प्रिय मित्र को आपका जन्मदिन मालूम होना/याद रहना चाहिए। इसकी आप उम्मीद लगाए रहते हैं। लेकिन अक्सर ऐसा हो नहीं पाता, इससे हमें निराशा होती है। इसलिए बेहतर तरीका यही है कि अपनी मांगें कम कर दीजिए। जो चीजें आपके नियंत्रण में नहीं हैं उन्हें ऐसे समझिए, "मैंने कोशिश की लेकिन ऐसा नहीं हो पाया। तो कोई बात नहीं ठीक है!" हमें अपने नजरिए में बदलाव लाना होगा तब जाकर मानसिक तौर पर शांति संभव है। ऐसा मानकर चलो कि आज धूप है तो अच्छी बात है और अगर बारिश होगी तो भी अच्छी बात है।

यह जरूरी नहीं कि कामयाबी पाने की राह में आने वाली सारी चीजें आपके मुताबिक ही काबू में रहें जिससे आपको पूरी सुविधा हो। इसलिए अपने नजरिए को काबू में रखिए। नाकामयाबी को स्वीकारना बड़ा मुश्किल होता है लेकिन आप यह जान लीजिए कि बिना ऐसा किए कामयाबी हासिल करना भी मुश्किल है और आप इसके लिए खुद को तैयार रखिए।

कामयाबी की तरह नाकामयाबी भी बहुत से लोगों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण चीज होती है। सकारात्मक मानसिक नजरिए से और

नाकामयाबी से नये अनुभव सीखिए, मकड़ी कितनी बार चढ़ती और गिरती है, फिर भी उसका ऊपर की ओर चढ़ना जारी रहता है। आप भी इसे जारी रखिए।

किसी नतीजे पर पहुंचने से पहले आप चीजों को प्राथमिकता के आधार पर हैंडल करते हैं, जरूरी नहीं कि इससे पहले भी आपने उस चीज को प्राथमिकता दी होगी जिसे इस बार दे रहे हैं। परिस्थितियों के अनुसार आप उसमें बदलाव लाते हैं। चीजों को तय करते समय पहले आप उसकी गणना करते हैं, उसका मूल्यांकन करते हैं तब जाकर फैसला करते हैं। हम इस सिद्धांत को जानते हुए भी ऐसा सोचते हैं कि चीजें हमारे विचार के मुताबिक दी हों, और अगर ऐसा होता है तो समझिए कि आप खुद में कुछ खास हैं।

अगर नतीजा आपके पक्ष में आता है तो सफलता का जश्न मनाइए और अगर ऐसा नहीं हुआ तो उसकी उम्मीद मत छोड़िए और समझिए इस बार गेम हार गए, अगला चांस फिर मिलेगा, इसके लिए फिर से जी जान से जुट जाइए। आप चाहे सबकुछ खो चुके हों, उसके बावजूद आपको चांस मिलेगा, ऐसा विश्वास रखिए। कई बार परिस्थितियां प्रतिकूल हो जाती हैं, जिसके लिए आपको तैयार रहना होगा और अपने तरीके से उसे हैंडल करना होगा। इससे साबित होता है कि लक्ष्य को हासिल करना आसान नहीं होता।

नाकामयाबी हमें बहुत कुछ सिखाती है और इससे कामयाबी की राह आसान होती है। आइंसटोन को अगर एक ही प्रयास में कामयाबी मिल गई होती वे उतना खुश नहीं होते। उनके ये शब्द हर आदमी के लिए प्रेरणादायक हैं कि नाकामयाबी के दौरान मुझे इतना तो जरूर पता चल गया कि इन 17 तरीकों से तो बल्ब नहीं सकता है। सफलता आपका माइलस्टोन है। जब आप किसी एक माइल स्टोन पर पहुंचते हैं तो फिर अगला माइल स्टोन आपके सामने होता है।

आप अपने शिक्षक खुद हैं चाहे आप पास हो जाएं या फेल। हम इस बात को नकार नहीं सकते कि हम इस समाज का हिस्सा हैं जो हमारी जिंदगी को प्रभावित करता है लेकिन कभी भी खुद पर किसी को हावी नहीं होने देना चाहिए और न ही वैचारिक तौर पर किसी से ज्यादा प्रभावित होना चाहिए। इस बात को हमेशा याद रखिए कि नाकामयाबी में ही कामयाबी का वरदान छिपा हुआ है और लक्ष्य हासिल होने तक प्रयास करते रहिए।

3.5 आभार प्रकट करने का गुण विकसित कीजिए

ज्यादातर लोगों की यह आदत होती है कि अच्छी चीजों का श्रेय वे खुद हासिल करना चाहते हैं और बुरी चीजों के लिए दूसरों पर दोषारोपण कर देते हैं। ऐसा इसलिए होता है कि हम अपनी नाकामयाबी को पचाने की क्षमता नहीं रखते और ऐसा सोचते हैं कि इसके लिए वे परिस्थितियां जिम्मेदार रहीं, जिसने हमारा साथ नहीं दिया और हम अपने लक्ष्य से पिछड़ गए।

हमें इस बात पर विश्वास करना चाहिए कि जब हम उपलब्धि के लिए खुद को बधाई का पात्र मानते हैं तो फिर नाकामयाबी की दशा में ऐसा क्यों नहीं कर सकते। आदर्श स्थिति तो यह है कि हमें अच्छी चीजों का श्रेय दूसरों को देना चाहिए और उसकी खामियों की जिम्मेदारी खुद लेनी चाहिए। अपनी प्रगति में दूसरों के योगदान को स्वीकार करना ही बड़प्पन है।

ऐसा तब होता है जब हम अपनी स्थिति से संतुष्ट हों हम ऐसा सोचना शुरू कर देते हैं कि हमें किसी की मदद की जरूरत नहीं तो यह हमारी दृढ़ता को दर्शाता है। यह हमारा नकरात्मक नजरिया है जो दिमाग में सकारात्मक चीजों को आने से रोकता है।

मेरे एक मित्र हैं जो शहर के एक नामी-गिरामी व स्थापित स्कूल के प्रिंसिपल थे। इस पद पर ज्वाइन करने से पहले 9 महीने तक वे नौकरी की तलाश में थे और कई प्रयासों के बावजूद उन्हें ढंग की नौकरी नहीं मिल रही थी। अंततः उन्हें यह नौकरी मिली और सबकुछ ठीक-ठाक हो गया। कुछ समय के बाद उनका स्वभाव उग्र व हठी होता गया और वे समझने लगे कि अब बिना उनके यह संस्था नहीं चल सकती। वे दिनप्रतिदिन जटिल बनते गए और किसी भी मीटिंग के दौरान सीनियर्स को नीचा दिखाने का एक भी मौका नहीं चूकते।

उनके सीनियर्स का चयन समाज के द्वारा किया गया था जो इस शहर के प्रतिष्ठित व्यापारिक घरानों से संबंध रखते थे। लेकिन इस सबके बावजूद इनमें से कुछ लोग उनकी कद्र करते थे जिससे उनकी उग्रता को बढ़ावा मिला। यह सब 2 साल तक चलता रहा।

बाद में वे अपने दोस्तों की भी अनदेखी करने लगे। शहर का प्रतिष्ठित स्कूल होने की वजह से उस स्कूल में एडमिशन के लिए मारा-मारी की हालत रहती थी लेकिन वे उसी का पक्ष लेते थे जो

उनसे सीधे संपर्क करता था। समय बीतता गया और वे समझने लगे कि उन्होंने अब तक जो कुछ भी हासिल किया है वह अपनी योग्यता और क्षमता के बलबूते पर हासिल किया है, जिसमें दूसरों का कोई योगदान नहीं है। एकाएक, मुझे पता चला कि वे अपने पद से हाथ धो बैठे हैं, जिसकी प्रमुख वजह उनका उग्र स्वभाव का होना रहा।

आपको यह समझना होगा कि आपको परिस्थिति के मुताबिक ढल कर लोगों से दोस्ताना रवैया अपनाना होगा, तभी आप अपने करियर की ऊंचाईयों पर पहुंच सकते हैं। आप अपने विचारों के अनुसार हर किसी को अपनी सुविधा नहीं दे सकते और न ही हर व्यक्ति को अपनी सेवाएं मुहैया कराने में सक्षम हो सकते हैं लेकिन आप सब लोगों के प्रति विनम्रता जरूर प्रकट कर सकते हैं।

आप तब तक शिक्षित नहीं हो सकते जब तक आप समाज की कद्र करना नहीं सीखते। समाज द्वारा निर्वाचित व्यक्ति प्रशासन में ज्यादा पावरफुल होते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्हें उनके काम के बदले जो दिया जाता है उसके एवज में वे खुद को समाज के प्रति समर्पित रखते हैं। उनकी पूरी ऊर्जा और समय, समाज के उत्थान में खर्च होती है। हम भारतीय लोग अपनी कार्य संतुष्टि के पहलू को ज्यादा महत्त्व देते हैं।

हमारा अंतर्मुखी स्वभाव ही है जो हमें अपनी उपलब्धियों के लिए दूसरों के प्रति आभार प्रकट करना नहीं सिखाता है। बिना कुछ लिए हम किसी को भी कुछ देने को तैयार नहीं होते हैं। यह पेमेंट का तरीका जरूरी नहीं कि नकद ही हो, यह प्रशंसा, अप्रत्यक्ष गिफ्ट वगैरह भी हो सकता है।

आपके साथ होने वाली हर अच्छी चीज का आभार प्रकट कीजिए, आगे बढ़ने वाला हर कदम आपको वर्तमान स्थिति से बेहतर स्थिति की ओर ले जाएगा, लक्ष्य की ओर।

मेरे मित्र के साथ घटित उपरोक्त उदाहरण एकमात्र नहीं हो सकता, ऐसे ढेरों उदाहरण हैं। जहां लोग कुछ पाने की चाहत में मर्यादा को खो देते हैं। बिना बड़प्पन के गुण के प्रगति मुमकिन नहीं है। इस तरह से लोग छोटी उपलब्धियों के हासिल होने पर ही संतुष्ट हो जाते हैं। वे ऐसा सोचते हैं कि जो वे चाह रहे हैं उसी के मुताबिक लोग कार्य करते रहें और वही सबसे ठीक तरीका है। आपने जो लक्ष्य बना रखा है, अगर आप उसे हासिल नहीं

कर पाते तो कहते हैं कि अंगूर खट्टे हैं। दूसरों पर दोषारोपण करके खुद के अहं को संतुष्टि पहुंचाते हैं। आप समझते हैं कि इस धरती पर सही तरीके से केवल आप ही काम करते हैं और बाकी सारे लोग बेईमान हैं।

अक्सर मैं यह नहीं समझ पाता हूं कि क्यों हम चीजों को उसी स्वरूप में नहीं लेते जैसी वे हैं, बजाय इसके हम उनमें दोष ढूंढते हैं। ऐसा तब होता है जब आप किसी चीज के प्रति बड़प्पन का नजरिया नहीं रखते। आप सोचते हैं कि बिना किसी को छोटा बनाए आप बड़े नहीं बन सकते और यह एक साबित तथ्य है।

ऐसा नहीं कि हम यह नहीं जानते लेकिन इस पर अमल करना बहुत कठिन होता है। हम ऐसा महसूस करते हैं कि ईश्वर ने हमें विशेषतौर पर बनाया है और हमारे साथ कुछ खास होने वाला है। आपको यह याद रखना होगा कि इस तरह से आप खुद को बेवकूफ बना रहे हैं और इस रास्ते पर चलकर आप कोई उपलब्धि नहीं हासिल कर सकते।

बिना किसी की मदद के आप अपना विस्तार नहीं कर सकते हैं। आपको निश्चित तौर पर यह समझना होगा कि कामयाबी की राह में बहुत-सी चीजों को त्यागने की जरूरत होती है और उन सब लोगों के प्रति बड़प्पन दिखाना होता है जो आपके कामयाबी के रास्ते को तय करने में मददगार हों। अपने आलोचकों के प्रति बड़प्पन का रुख अख्तियार करना वाकई में बहुत मुश्किल होता है लेकिन इतना जान लीजिए कि एक बार अगर आप इस कला में माहिर हो गए तो मुझ पर यकीन रखिए, आपको विजेता बनने से कोई नहीं रोक सकता। आप वास्तविक विजेता होंगे। ●

अध्याय-4

स्वयं निर्णय लें

एक बार गलती से एक गधा जंगल में पहुंच गया और वहां की हरियाली से खुश होकर घास चरने लगा। चूँकि उसके पास वहां कोई काम नहीं था इसलिए कुछ ही दिनों में वह घास चरते-चरते काफी मोटा और बड़ा हो गया। जंगल के अन्य प्राणियों को वह थोड़ा विचित्र-सा लगता, इसलिए वे उस गधे से दूर ही रहने लगे। ऐसा समाचार सुनकर जंगल का राजा शेर भी आशंकित हो गया और उसे देखने गया कि आखिर ऐसा कौन-सा प्राणी आ गया। गधे की भारी आवाज सुनकर शेर भी भयभीत हो गया और तनाव से दिन-प्रतिदिन उसका वजन घटता गया।

एक दिन शेर जंगल में अपने इलाके में घूम रहा था। इस दौरान उसने देखा कि वह गधा एक बंदर के साथ लड़-झगड़ रहा है। आदत के मुताबिक गधा पीछे की ओर दुलती चला रहा था, जिससे बंदर को कोई नुकसान नहीं होता। एकाएक शेर को समझ में आ गया कि यह खतरनाक दिखने वाला जानवर गधा है। बस फिर क्या था वह गधे पर झपटा और उसे मार गिराया।

विष्णु शर्मा द्वारा लिखित 'पंचतंत्र' में इस तरह की ज्यादातर कहानियां हैं। जो राजपुत्रों के संदेह दूर करने के लिए लिखी थीं। मानव जीवन में व्यावहारिक रूप से इनका बहुत महत्त्व देखा जाता है। पाठकों को मैं बताना चाहूंगा कि बिस्मार्क ने एक बार कहा था। "मूर्ख ही कहते हैं कि वे अपनी गलतियों से सीख लेते हैं," चूँकि जीवन हमें किसी चीज को सीखने या सोचने का कम ही मौका देता है। इसलिए हमें सदैव सजग रहना चाहिए।

मैं यह चैप्टर 5 सितंबर, 2009 के दिन लिख रहा था, जिस दिन पूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म दिन है और उसे शिक्षक दिवस भी कहा जाता है। शिक्षण क्षेत्र में कार्यरत रहने के चलते पिछले कई साल के अनुभव से मुझे ऐसा महसूस हुआ कि इतिहास में मेरे कुछ सवालों का जवाब मुझे सही ढंग से नहीं मिल पाया है। कई बार मैं इन सवालों में उलझ जाता। गुरु विश्वामित्र से लेकर गुरु द्रोणाचार्य तक और रामायण से लेकर महाभारत तक। कौटिल्य के लिए मन में अपार श्रद्धा है। जिन्होंने एक बच्चे को चुनकर उसे राजा बनाया और जिसका सम्राज्य भारतीय इतिहास का स्वर्णिम युग कहा गया। वह छात्र कोई और नहीं चन्द्रगुप्त था जिसने मौर्य वंश की स्थापना की थी। कौटिल्य ने चन्द्रगुप्त में छिपी प्रतिभा को पहचाना और उसे तराश कर महानता के शिखर पर पहुंचा दिया।

यहां एक प्रश्न उठता है कि अगर कौटिल्य ने चन्द्रगुप्त के अलावा अगर किसी दूसरे बच्चे को चुना होता तो क्या होता। दूसरा राजा तो बन जाता लेकिन उसका साम्राज्य स्वर्णिम काल नहीं कहा जाता। मैं नहीं समझता कि इससे इतर कोई बात होती। एक बार किसी चीज के प्रति समर्पित हो जाने के बाद आपको उसके प्रति न्यौछावर होना होगा।

जिंदगी में सफलता का राज यही है कि जब भी अवसर मिले तो उसे भुनाने को तत्पर रहें।

बस यह विश्वास रखिए कि अगर आपमें दम है तो किसी भी हालत में, कम या ज्यादा परिणाम आपको मिलेगा लेकिन बाहरी ताकतें उसमें आपको प्रभावित नहीं करेंगी। देखा गया है कि गुरुओं ने अपने लक्ष्य के मुताबिक परिणाम के लिए उसमें अपनी दिलचस्पी दिखाई है। अगर आप द्रोणाचार्य के कार्यप्रदर्शन की समीक्षा करेंगे तो क्या आपको ऐसा नहीं लगेगा कि "एकलव्य" की क्षमता द्रोणाचार्य से भी कहीं बढ़कर हो जाती। मैं इससे ज्यादा नहीं कहना चाहूंगा ताकि कट्टरवादी ताकतों को बढ़ावा मिले और वे इस किताब पर प्रतिबंध लगाना चाहें।

यद्यपि इसे बुरा माना जाता है फिर भी ज्यादातर लोग ऐसे तत्त्वों का ध्यान आकर्षण करने के लिए इस तरह की चीजें लिखते हैं जो ऐसे लोगों द्वारा पढ़ी जाती है जोकि पुस्तक प्रेमी तो नहीं होते पर ऐसी किताबें जरूर पढ़ते हैं। आपको ऐसा नहीं लगता कि इस तरह की गतिविधि एक स्वतंत्र

देश के लिए जायज नहीं ठहराई जा सकती, जहां वे ज्वलंत मुद्दों पर लोगों को मरने-मरने पर उतारू हो जाएं? आखिर वे क्यों अपना मूल्य नहीं समझते किसी के व्यक्तिगत विचारों पर प्रतिबंध लगाने की बजाय वे सामाजिक मुद्दों का निराकरण करके चमत्कार कर सकते हैं।

इस दुनिया में बहुत-सी चीजें आपके मुताबिक नहीं होतीं। क्या आपमें ऐसी शक्ति है जो उनकी प्रगति को रोक दे, मैं कह सकता हूं कि आप ऐसा नहीं कर सकते। उदाहरण के तौर पर एक टीवी सीरियल “सच का सामना” को ही लीजिए, इतनी हाय-तौबा क्यों? आपको पसंद नहीं तो चैनल बदल लीजिए। आप क्यों चाहते हैं कि हर आदमी आपकी ही तरह बन जाए, क्या आप लोकसभा चुनाव लड़ने जा रहे हैं?

हमारी यह आदत होती है कि चीजों को हम अपने हिसाब से सोचते हैं आपको जैसा लगे वैसा करो पर दूसरों को भी अपने हिसाब से करने दो, उसमें व्यवधान मत डालो हमें अपने अनुसार लोगों को नहीं देखना चाहिए। आप क्यों संविधान के मुताबिक कार्य करना चाहते हैं? मैं मानता हूं कि आप मेरे तर्क से सहमत नहीं होंगे। लेकिन सोचिए कि अगर कौटिल्य ने एक साधारण बच्चे को नहीं चुना होता तो क्या चन्द्रगुप्त जैसा महानायक उभरकर सामने आ सकता था।

अपनी प्रतिभा और मूल्य को समझो और उसी दिशा में आप कार्य करो वरना आप इस धरती पर बहुत कुछ खो दोगे। हर आदमी को अपनी क्षमता को जानकर एक तय समय में अपना कार्य करना चाहिए।

ज्यादातर लोगों को अपनी क्षमता की समझ नहीं होती और वे दूसरों से पूछते हैं कि क्या करें, क्या न करें। ऐसा केवल अशिक्षित लोगों के साथ ही नहीं बल्कि शिक्षितों के साथ भी होता है। आप अपने आस-पास भी ऐसा देखते होंगे? हर इंसान स्वयं में अलग है। हर व्यक्ति लंबाई, वजन, दिमाग, बुद्धि, जानकारी, सामान्य ज्ञान में भिन्न-भिन्न होता है। आप एक जन्मजात विजेता हैं, और आपमें सारे गुण मौजूद हैं। बस जरूरत इस बात की है कि आपको यह जानना होगा कि कैसे लड़ना है। जब तक आप यह नहीं समझेंगे कि कैसे और किससे लड़ना है। तब तक आप विजेता नहीं बन सकते।

4.1 अपनी क्षमताएं बढ़ाएं

सबकुछ ईश्वर के हाथ में नहीं होता, जैसा कि आप सुनते आए हैं। लोग कहते हैं कि भगवान के प्रति सबकुछ समर्पित करके खुश रहो। एक

बार अगर आपके पास कुछ न हो तो फिर आपके साथ कोई समस्या ही नहीं रहेगी।

एक व्यक्ति अक्सर परेशानियों से घिरा रहता था। एक दिन वह भविष्यवक्ता के पास गया। भविष्यवक्ता राशियों की गणना करके ग्रहों के मुताबिक भविष्य बताता था। भविष्यवक्ता ने उस व्यक्ति की ग्रहदशाओं का, उसकी हथेलियों से आकलन किया और कहा, “शनि तुम्हारे छठे घर में बैठा है और वह नाराज चल रहा है। वही सारी समस्या पैदा कर रहा है। अगर तुम मुझे पांच सौ रुपए दो तो मैं उसकी स्थिति बदलने के उपाय करूंगा। जो तुम्हें फायदा पहुंचाएगा।” उस आदमी ने कहा, “मेरे पास पांच सौ रुपए नहीं हैं।” दोनों के बीच काफी देर तक मोल-भाव चलता रहा और अंत में भविष्यवक्ता ने शनि की ग्रहदशा को महज दस रुपए में ही शांत कर देने की बात कही।

लेकिन उस आदमी ने कहा कि वह दस रुपए भी देने की हालत में नहीं। इस पर भविष्यवक्ता चिढ़ गया और बोला, “जाओ यहां से भागो। तुम्हारे पास दस रुपए भी नहीं तो शनि क्या, कोई भी ग्रह तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता है।”

आप किसी चीज को तभी खो सकते हैं जब वह भौतिक या मानसिक रूप से आपके अधिकार में हो और अगर ऐसा नहीं है तो फिर कोई डर नहीं। मुख्य चीज है स्वयं को समझना। अधिकांश समय तो हम खुद को समझने में ही बिता देते हैं।

हम सोचते हैं कि चूंकि हम एक मनुष्य हैं इसलिए हम सबसे महान हैं और अपनी इच्छानुसार कुछ भी हासिल कर सकते हैं। हमारी सोच में गलती नहीं बल्कि हमारी शिक्षा व्यवस्था कुछ इस तरह की है कि वह छात्रों की दिलचस्पी किस चीज में है, यह समझ नहीं पाती। एक बार आप जान गए कि आप इस क्षेत्र में बेहतर कर सकते हैं तो आपको शीघ्र ही शुरुआत कर आगे बढ़ना चाहिए।

हमारे समाज में एक औसत प्रतिभाशाली या शिक्षित, किसी मेधावी छात्र को भी पछाड़ सकता है। अगर उस व्यक्ति का लक्ष्य निर्धारित व केंद्रित हो।

हर आदमी को अपनी ताकत के बारे में जानना चाहिए। कुछ लोग इसे जीवन की शुरुआत में ही समझ जाते हैं तो कुछ लोगों को जिंदगी के अंतिम क्षणों में भी इसकी समझ नहीं हो पाती। हमारे देश में, हम अपनी दिलचस्पी शिक्षा पद्धति के माध्यम से ढूंढते हैं। लेकिन हमारी शिक्षा पद्धति इस मामले में असफल ही साबित हुई है।

हमारी शिक्षा पद्धति छात्रों की रुचि को समझने में पूरी तरह से अक्षम रही है और यही वजह है कि सरकार द्वारा अत्यधिक अनुदान दर पर आईआईटी की पढ़ाई पूरी करने के बाद कोई छात्र आईएएस बनने की सोचता है। यही कारण है कि ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज से डॉक्टर की डिग्री लेने के बाद कुछ छात्र एमबीए करके बैंक में नौकरी हासिल करना चाहते हैं। मेरे एक डॉक्टर मित्र के पुत्र प्रतिष्ठित एम्स के मेडिकल एंट्रेस टेस्ट में टॉपर रहे और फाइनल ईयर में भी टॉप आए। एक दिन अचानक वे मेरे पास आए और मुझसे कहा, “मुझे स्कूल फंक्शन के दौरान बुक स्टॉल्स को मैनेज करने का एक सर्टिफिकेट चाहिए। उन्होंने बताया कि वे आईआईएम कोलकाता में अंतिम साल के छात्र हैं और उन्हें यह सर्टिफिकेट वहां जमा करना है उन्होंने बताया कि एमबीबीएस करने के बाद उन्होंने हिसाब लगाया कि इस पेशे में जाने के बजाय वित्तीय पेशे में जाने से करियर बढ़िया व जल्दी ऊंचाई पर जाएगा।”

मैं उनके उत्तर से सहमत नहीं हो पाया। मैंने जब उनसे कहा कि ऐसा करके आपने न केवल किसी दूसरे छात्र के अवसर को खत्म कर दिया बल्कि यह जनता के पैसे का दुरुपयोग भी है। इसके लिए उन्होंने शिक्षा पद्धति को दोषी करार देते हुए क्षमा मांग ली। जो उसकी क्षमताओं व रुझान को नहीं आंक सका। आपको इस तरह के बहुत से उदाहरण मिल जाएंगे जो शिक्षा पद्धति को दोषी ठहराते हैं।

आईआईटी कंप्लीट करने के बाद आईएएस अधिकारी बनने या फिर एमबीबीएस के बाद एमबीए करना या बैंकर बनने में कोई बुराई नहीं है लेकिन क्या आपको नहीं लगता कि ऐसा करने से देश में एक इंजीनियर या डॉक्टर कम हो गया, जिसकी भारत जैसे देश में आज बेहद जरूरत है। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि वे पहले अपना मूल्य नहीं आंक पाए।

4.2 कर सकने की क्षमता के प्रति सजग रहे

इस धरती पर हर समय में कुछ ऐसे लोग हुए हैं जो अपनी अधिकतम क्षमताओं के अनुकूल कुछ भी हासिल कर सकने में सक्षम हुए हैं। आईआईटी में टॉप करने वाला छात्र निश्चित ही प्रतिभाशाली होगा, उसकी क्षमताओं पर संदेह नहीं किया जा सकता। लेकिन अगर बाद में वह इंजीनियरिंग करियर बदल लेता है तो क्या वह अपने बहुमूल्य चार साल बर्बाद नहीं करेगा।

एक आदमी मानसिक रोगियों के पुनर्वासन पर कार्य कर रहा था, जिसके चलते वह एक बार उन्हें देखने गया। वहां डाक्टर ने उसे सलाह दी कि अगर यहां कोई आपसे कुछ कहे तो आप उससे उलझे नहीं।

वे अंदर बगीचे में जाकर बैठ गया। इतने में उसके पास एक 25 वर्षीय युवक शांत मुद्रा में आकर बैठ गया। उसने पूछा, “क्या तुम अपने दोस्तों, शिक्षकों, माता-पिता या पड़ोसियों की वजह से यहाँ आए हो?” हालांकि उस व्यक्ति को सलाह दी गई थी कि वह यहाँ किसी से यहां न उलझे। फिर भी उसके निर्दोष भावों को देखकर उसने उस मानसिक रोगी से कहा, “अपने दोस्तों, शिक्षकों, माता-पिता या पड़ोसियों की वजह से कोई कैसे यहां पहुंच सकता है?”

वह युवक बोला, “हां, लेकिन कोई आदमी अपने आस-पास के सभी लोगों की उम्मीदों के मुताबिक खरा कैसे उतर सकता है और वह भी बिना किसी का दिल दुखाए?” फिर उसने बताया कि जब वह छात्र था तो स्कूल के शिक्षक उससे डॉक्टर बनने की उम्मीद रखते थे ताकि उनका और स्कूल का नाम रोशन हो। उसके मित्र उसमें प्रशासकीय क्षमता देखकर उसे कला विषय लेकर आईएएस बनने को प्रेरित करते थे। उसके पिता एक कारोबारी हैं, जो उसे एमबीए की डिग्री लेकर उसे बिजनेस में आने की सलाह देते।

बिना इसकी इच्छा को समझे, हर आदमी उससे अपनी अलग अपेक्षा रखता था। हर आदमी की इच्छाओं को संतुष्ट करने की कोशिश करते-करते एक दिन उसने खुद को इस मानसिक रोगियों के आश्रम में पाया। उसने बताया कि बाद में धीरे-धीरे सभी को मेरे भीतर मानसिक रोगों के लक्षण दिखाई देने लगे और अब मैं खुद भी यहां

आराम महसूस करता हूँ क्योंकि इस आश्रम में आने के बाद अब किसी को मुझसे कोई उम्मीद नहीं।

जीवन अनमोल है। हमें कुछ ऐसे ठोस कदम उठाने होंगे, जिससे समाज मजबूती से आगे बढ़े।

ईश्वर ने हमें सिक्के के दो पहलू की तरह हर स्थिति को हैंडल करने के लिए दो रास्ते दिए हैं, एक है बैठे रहना और दूसरा है उसे सोचना, सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि हम हेड का चुनाव करते हैं या टेल का क्योंकि इसके एक पहलू में सफलता है तो दूसरे में नुकसान।

अधिकतर समय हम ये समझने में असफल रहते हैं कि आखिर हम वास्तव में चाहते क्या हैं? ऐसी स्थिति उत्पन्न होने का एक मुख्य कारण यह है कि हमारे देश में हर व्यक्ति को अपने अनुसार स्वतन्त्रता से सोचने और व्यवहार करने की आजादी नहीं है और न ही कोई सही मार्गदर्शक है यह बताने के लिए कि उन्हें अपनी कार्यक्षमता का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग किस प्रकार करना चाहिए। हम अक्सर किसी भी कार्य को बिना सोचे समझे झट-से करने को तैयार हो जाते हैं, क्योंकि हमें हर समय डर लगा रहता है कि कहीं कोई मौका हमारे हाथ से छूट न जाए। परिणामस्वरूप मिली असफलताओं के कारण या तो हम अपनी नौकरी बदलना चाहते हैं या फिर नौकरी या कार्य के प्रति कोई आकर्षण और उत्साह न होने के कारण तनावग्रस्त हो जाते हैं।

4.3 अपने कार्य के प्रति निष्पक्ष रहें

एक किसान ने कुत्ता और एक गधा पाल रखा था दोनों ही वफादार थे और मालिक उन्हें बहुत खुश रखता था। एक दिन किसान का कोई मित्र उसके घर आया तो कुत्ता उसे देखकर भौंकने लगा। किसान ने कुत्ते की खूब पिटाई की। इससे कुत्ते में बदले की भावना घर कर गई। उसी रात कुछ चोर किसान के घर में घुसे। दोनों जानवर जगे हुए थे। गधे ने कुत्ते से भौंकने के लिए कहा ताकि मालिक जाग जाए लेकिन कुत्ता मालिक के व्यवहार से क्रोधित था,

उसने अपना कर्तव्य निभाने से मना कर दिया। गधा उसके इस निर्णय से सहमत नहीं था और उसने जोर-जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया, जिससे मालिक गहरी नींद से जाग गया और गुस्से में आकर गधे को खूब मारा। मालिक के व्यवहार से दुःखी होकर कि उसकी वफादारी के बदले मालिक ने उसे पीटा, उसने वह जगह सदा के लिए छोड़ दी और वहां से चला गया।

अंदाजा लगाइए कि अगर मालिक ने गधे के व्यवहार को उचित ठहराकर उसकी पीठ थपथपाई होती और गधे की वफादारी के बदले कुत्ते की जिम्मेदारियां भी उसे दे दी होती तो क्या होता? कुछ समय तक तो गधा अपनी अतिरिक्त जिम्मेदारियों को बखूबी निभाता लेकिन कुत्ता फिर भी वहां मौजूद रहता यदि कुत्ते को भी वही खाना दिया जाता जो गधे को मिलता था, तब इससे गधे में कुंठा पैदा होती और अतिरिक्त कार्य भार के कारण गधे के स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ता और कुछ ही दिनों में वह अपनी कार्यक्षमता के विपरीत परिणाम देता।

हममें से अधिकांश की नियति उपरोक्त कहानी की तरह है। हम अपने कार्यस्थल पर अक्सर अतिरिक्त जिम्मेदारियों को निभाने की कोशिश कर अपनी क्षमता दिखाना चाहते हैं। अधिकांशतः हम अपने बॉस के सामने सक्षम और काबिल दिखना चाहते हैं और इसी कारणवश हम कई बार अपने अधीनस्थ कर्मचारियों की अक्षमता भी बताते हैं। दोनों ही स्थितियों में हम संस्था का नहीं, अपना हित देखते हैं। आपातकालीन अवस्था में अपनी संस्था की बढ-चढ़ कर मदद करना एक अच्छे कर्मचारी का गुण माना जाता है। लेकिन तुरंत लाभ की उम्मीद से कुछ करना बुरा समझा जाता है। संस्था एक या दो व्यक्तियों से नहीं चलती, इसके लिए बहुत-से विश्वस्त लोगों की जरूरत पड़ती है।

प्राथमिक तौर पर आपके पेशे में प्रोफेशनलिज्म झलकना चाहिए, इसलिए आपका अपने कार्य के बारे में पूरी तरह जानना बहुत महत्वपूर्ण और आवश्यक है।

हर संस्था को तेजी से आगे बढ़ने के लिए गधों की जरूरत होती है लेकिन साथ ही संस्था के लिए स्वामीभक्त और वफादार कुत्तों की भी जरूरत होती है। वास्तव में गधे संस्था को आगे बढ़ाने में लगे रहते हैं

क्योंकि इससे वे अपनी योग्यता को संस्था में साबित करना चाहते हैं। गधा दूसरों के कार्य भी करता है। यहां होना यह चाहिए कि संस्था के संचालक को कुत्ते से बातचीत करके समस्या का समाधान निकालना चाहिए ताकि भविष्य में कुत्ता अपनी ड्यूटी में कोताही न बरते। बॉस के लिए आवश्यक है कि वह हर आदमी को उसकी योग्यता और क्षमता के मुताबिक काम में लगाए रखे ताकि न तो कोई ज्यादा काम के बोझ तले दबा रहे और न ही कोई आरामतलब बन सके।

कार्य को हर संभव तरीके से टालने की कोशिश करना मनुष्य का स्वभाव है। हममें से ज्यादातर लोग अपने लाभ के लिए विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। एक बार अपनी योग्यता सिद्ध करने के बाद आदमी के भीतर का डर कमजोर हो जाता है। कामयाबी अधिकांशतः मनुष्य के अथक परिश्रम का नतीजा होती है लेकिन आपके इर्द-गिर्द के लोग उसका क्रेडिट आपके भाग्य को देते हैं। वे आपके वर्षों से जारी परिश्रम को गौण करके भाग्य को ज्यादा सराहते हैं।

एमबीए करने और शिक्षा क्षेत्र में काफी अनुभव बटोरने के बाद मैंने स्कूल कंसल्टेंसी चलाने के लिए बाजार में पहले से मौजूद लोगों से बातचीत करनी चाही। मेरी मुलाकात इस दौरान एक ऐसे व्यक्ति से हुई जो पिछले पांच साल से इस कारोबार में है। उसने बातचीत के दौरान इस प्रोफेशन को फालतू बताया तब मैंने उससे पूछा कि फिर आप कैसे इतने सालों से टिके हैं!

मैं और मेरी पत्नी आपस में सलाह मशविरा करने के बाद इसकी शुरुआत करने का फैसला कर चुके थे हम अच्छी तरह जानते थे कि असफल होने की स्थिति में पत्राचार और यात्रा में खर्च किये गये कुछ हजार रुपयों से ज्यादा खोने के लिए हमारे पास कुछ नहीं था। मैंने स्कूल की नौकरी छोड़ दी और इस प्रोफेशन की शुरुआत की। मुझे अपनी दृढ़ता पर पूरा भरोसा था। वह दिन मेरे लिए टर्निंग प्वाइंट साबित हुआ। मेरे साथ केवल मेरी दृढ़ इच्छा-शक्ति ही थी, जो मुझे आगे बढ़ा रही थी। मैं जानता हूँ कि भारत में शिक्षा क्षेत्र में अभी विकास की संभावना है, खासकर स्कूली शिक्षा में इस प्रोफेशन के माध्यम से शिक्षा में व्यापक स्तर पर सुधार संभव है।

बिना किसी उद्देश्य के भटकने और इस धरती पर दूसरों पर निर्भर रहने या भार बनने की बजाय आपको शीघ्र ही अपनी क्षमताओं का

मूल्यांकन करना चाहिए, आपको स्वयं ही अपनी बाधाओं से पार पाना होगा। भारतीय मानसिकता यह बन चुकी है कि, “अगर मैं असफल हो गया तो लोग क्या सोचेंगे।” आप दूसरों को ऐसा सोचने की स्वतंत्रता क्यों देते हैं? अगर आप ऐसा सोचेंगे तो आपकी 75 प्रतिशत परेशानी स्वयं ही दूर हो जाएगी। प्रारंभ में मुझे भी ऐसे हालात का सामना करना पड़ा था एक शहर में रहते हुए मैंने मित्रों से मिलना-जुलना बंद कर दिया। मैं अपने प्रोफेशन के प्रति केंद्रित होने लगा। इससे संबंधित किसी भी कमेंट्स को मैं अनसुना कर देता। मेरे नए कारोबार के बारे में अगर कोई नकारात्मक टिप्पणी करता तो मैं उससे बात करना बंद कर देता। ऐसा करना काफी कष्टप्रद होता लेकिन मैं अपने रवैए पर अडिग रहा और अपने प्रोफेशन में विविधता लाता रहा और ट्रेनिंग कंसल्टेंसी की योजनाओं पर अमल करता रहा। प्रोफेशनल बनने से पहले अक्सर लोग कई मसलों पर सलाह करने आते और अपनी पूरी जानकारी व अनुभव के आधार पर मैं उनकी भरपूर मदद करता। अब भी लोग मेरे पास आते हैं लेकिन अंतर यह हो गया है कि अब मैं हर सिटिंग की फीस 10 हजार रुपए लेता हूँ। अक्सर मेरे क्लाइंट हमारी मीटिंग फाइव स्टार होटलों में रखते हैं। इस तरह से 2 से 3 सिटिंग का सिलसिला चल पड़ा। अब आप देखिए कि कैसे चीजें बदल जाती हैं।

4.4 लक्ष्य स्पष्ट हो

एक लक्ष्यहीन व्यक्ति वह होता है जिसे यह न पता हो कि उसके लिए कौन से प्रोफेशन में जाना बेहतर होगा। ऐसे लोग एक तरफ तो आईएएस की तैयारी करते हैं और दूसरी तरफ शॉर्टहैंड व टाइपराइटिंग का कोर्स भी सीखते रहते हैं कि कहीं अगर आईएएस में सेलेक्ट नहीं हो पाए तो आजीविका का दूसरा विकल्प तो रहेगा। क्या आपको नहीं लगता कि दोनों करियर विकल्पों में जमीन-आसमान का अन्तर है। अगर कोई आदमी आईएएस में सेलेक्ट नहीं भी होता है तो उसे राज्य स्तरीय सेवाओं या उससे जुड़ी दूसरी सर्विस में जाना चाहिए। इससे यह साबित होता है कि उस व्यक्ति ने अपनी क्षमता का अच्छी तरह से आकलन नहीं किया होगा।

दो साल बाद जब मैं पांच बड़े स्कूली प्रोजेक्ट्स को संचालित करने लगा तो मेरे आलोचकों ने मुझे बधाई दी और मुझे सौभाग्यशाली कहा है

न विचित्र बात! अभी भी वे मेरी प्रतिबद्धता व परिश्रम को इसका श्रेय नहीं देना चाहते और न ही मेरी मेहनत व कर्तव्यनिष्ठा को देखते हैं।

स्पष्ट और केंद्रित लक्ष्य की स्थापना और उस पर कार्य करना ही सफलता का आरंभिक बिंदु है।

अक्सर आपके दिमाग में यह विचार आता होगा कि आखिर वास्तव में यह भाग्य है क्या? मेरा मानना है कि अपनी क्षमताओं का सही आकलन करके अपनी रुचि के मुताबिक क्षेत्र में आगे बढ़ना ही भाग्य है। अपना काम समय से पूरा करने वाले लोग समाज के लिए आदर्श बनते हैं, जरूरत है तो बस आपके पूरे कमिटमेंट की, बाकी सारी चीजें तो द्वितीयक हैं।

आप स्वयं को या अपने गुणों को ज्यादा देर तक नहीं छिपा सकते जैसे आप ज्यादा देर तक किसी को बेवकूफ नहीं बना सकते। आपकी वास्तविकता ही आपकी ताकत है। मैं समझता हूँ कि इस धरती पर एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं होगा, जिसमें कोई भी कमजोरी न हो। लेकिन उसे छिपाने की कोशिश में अपनी वास्तविकता नहीं छिपानी चाहिए। आपको समझना होगा कि आप कुछ हटकर हैं और उसी गुण की बदौलत आप बहुत कुछ हासिल कर सकते हैं।

आपकी सफलता यात्रा की कहानी की शुरुआत विजय से होगी, सच मानिए। ज्यादातर आलोचकों का कहना है कि आज बाजार में सकारात्मक नजरिए पर किताबों की जैसे बाढ़ आ गई है। जबकि मेरा मानना है कि हमारे शीघ्र उपलब्धि हासिल करने की चाह का ही यह नतीजा है। हम आज किसी चीज के लिए इंतजार नहीं करना चाहते।

आज समाज में आत्महत्या व अराजकता की प्रवृत्ति बढ़ रही है, जिसकी सबसे बड़ी वजह युवाओं का अल्पदृष्टि होना है, जो कम समय में ही ज्यादा चीजें हासिल करना चाहते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि तर्क और सोचने में वे हम से आगे हैं और माउस के एक क्लिक पर उनके पास सूचना हासिल करने के अनेक माध्यम उपलब्ध हो जाते हैं।

इस पृष्ठ को लिखते समय चैनलों पर आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. वाई.एस. राजशेखर रेड्डी का हैलीकॉप्टर लापता होने की खबरें आ रही थीं। उनकी मौत की खबर आने के बाद तकरीबन एक सौ बीस लोगों ने दुःख से आत्महत्या करने का प्रयास किया। कैसी विडम्बना है यह?

आत्महत्या की कोशिशों की विस्तृत जानकारी के लिए जब मैंने रेडिफ मेल खोला तो उनके खिलाफ लिखे गए ब्लॉग्स को पढ़कर हैरान रह गया। दोनों ही परिस्थितियाँ अपनी पराकाष्ठा पर थीं। कई बार हम कारण जानना ही नहीं चाहते और न ही यह जानते हैं कि हमें करना क्या है। हम हर चीज पाना चाहते हैं। लेकिन हमें यह पता नहीं कि हम उसके उनका बाद क्या करेंगे। मैं आपको उस दिशा में ले जाना चाहता हूँ कि जहाँ आप अपनी प्रतिभा को पहचान सकें। आपका लक्ष्य ही आपके लिए महत्वपूर्ण है। बाकी सभी चीजें तो सहायक हैं।

4.5 स्वयं पर किसी को हावी न होने दें

टीवी पर आने वाले एक विज्ञापन को याद कीजिए, जिसमें एक जेंटलमैन रेडलाइट पर अपनी कार में बैठा है जो कि साइकिल पर सवार बराबर से गुजरते एक रफ एंड टफ लड़के को घृणा की दृष्टि से देखता है। लड़का इसे भांप लेता है और अपनी शर्ट और टाई, दोनों को सलीके से ठीक करके आत्मविश्वास से जवाब देता है, “अंकल, बस दो पहियों का फर्क है, आ जाएंगे हम भी चार पहियों पर।” यह हमें सिखाता है कि अगर हमने किसी को खुद पर हावी नहीं होने दिया तो हम भी किसी कम नहीं हैं।

अगर सही दिशा में लक्ष्य निर्धारित करके हम ईमानदारी से परिश्रम करें तो दुनिया में कुछ भी हासिल करना असंभव नहीं है। हम अक्सर यह सोचते हैं कि हम दूसरों से कमतर हैं पर ऐसा नहीं सोचते कि हम बहुतों से बेहतर भी हैं। अपने मूल्यांकन के प्रति ईमानदारी बरतना अच्छी बात है।

याद रखिये कि अच्छे व्यक्तियों की गतिविधियाँ और व्यवहार आपको विभिन्न स्तर पर प्रभावित करते हैं। जब आप उस व्यक्ति की अच्छाइयों को देखते हैं तो उसके विचारों व व्यवहारों से आप सम्मोहित हो जाते हैं। उपरोक्त उदाहरण में नेता की मृत्यु के बाद लोगों का आत्महत्या पर उतारू होना इसी बात को इंगित करता है। वे सोचते हैं कि अपने नेता के बिना वे कुछ भी नहीं हैं।

एक ऐसा व्यक्ति जो अपनी क्षमताओं के बलबूते पर लक्ष्य हासिल करने जा रहा हो वह कभी इन चीजों से समझौता नहीं करेगा। वह इन सब चीजों में संतुलन कायम रखेगा। आप इस धरती पर नेतृत्व के लिए भले ही

न आए हों, आप महात्मा गांधी या अब्राहम लिंकन भले ही न हों लेकिन व्यक्तिगत तौर पर आपमें जो योग्यताएं हैं वे लोगों को आकर्षित करने वाली होनी चाहिए।

अगर आप में आंच के सामने खड़े होने की क्षमता नहीं है तो आपको रसोईघर में नहीं जाना चाहिए।

एक बार जब आप अपने विचारों पर दृढ़ हो जाएंगे तो निश्चित रूप से आपको इच्छित परिणाम मिलेगा। ऐसा करके आप एक उदाहरण पेश करेंगे, जिसका लोग अनुसरण करेंगे। आप लोगों के बीच पहचाने जाएंगे। आपको स्वयं पर विश्वास करना सीखना होगा।

कमजोर सिद्धांतों वाले लोग दूसरों के विचारों के द्वारा सोचते हैं, उन पर उनका स्वयं का नहीं बल्कि दूसरों का शासन चलता है। जब तक व्यक्ति आत्म-नियंत्रित और आत्म-अनुशासित नहीं होता वह स्वयं को साबित नहीं कर सकता। आपको अपने सिद्धांत स्वयं बनाने हैं, साथ ही आपके शब्दों से ज्यादा आपका काम बोलना चाहिए। एक संस्था के साथ काम करते वक्त मैंने देखा कि एक महिला, जो उस संस्थान में वित्तीय कामकाज देखती थी, उसे ज्यादा बोलने की आदत थी। एक अन्य व्यक्ति ने मुझे आकर यह बात बताई उसे लगा कि शायद मैं यह बात जानकर खुश होऊंगा। लेकिन मैंने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। वह महिला अपना सारा कामकाज दुरुस्त रखती थी। कई बार काम पड़ने पर उसने अपनी सारी फाइलें सही तरीके से काम करके मुझे सौंपी थीं।

एक बार मैंने देखा कि मेरी अनुपस्थिति में वह गॉसिप करने में मग्न है और ऐसा करके बहुत खुश है।

मैंने उपरोक्त उदाहरण इसलिए दिया है कि ऐसा होना सामान्य है। क्या मुझे उस महिला को कम बोलने के लिए कहना चाहिए था, परंतु जहां इससे मेरा कीमती वक्त बरबाद होता वहीं मैं उस बहुमूल्य समय में यह किताब नहीं लिख पाता। क्योंकि जब तक कि कोई आपके प्राथमिक कार्यों में किसी प्रकार की बाधा डालकर आपको परेशान न करे तब तक आपको किसी पर हावी होने की जरूरत नहीं।

विजेता हमेशा जीत की ओर देखता है। यहां तक कि खराब हालात में भी, लेकिन उसे स्वयं उन चीजों को साबित करने में लिप्त नहीं होना

चाहिए जो पहले से ही साबित है। जब लोग आपकी आलोचना करें तब भी उसे अनसुना करके आपको अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना चाहिए। कई बार हम कहते हैं कि दूसरों ने जैसा हासिल किया है उस राह पर चलते हुए हम नहीं कर पाएंगे। ऐसा सोचना मूर्खता है।

स्वयं को दूसरों से हटकर बनाने की चेष्टा करें, अपने शब्दों के बजाए अपनी कार्य कुशलता से स्वयं को साबित करें। ऊर्जा के परिवर्तन के सिद्धांत के मुताबिक शब्द हवा में विलुप्त हो जाते हैं, जबकि गति के नियम के अनुसार कार्य उसका अनुसरण करता है।

आप अपने-आप में कुछ अलग हैं, आप दूसरों के शब्दों के मुताबिक क्यों चलना चाहते हैं, कार्य करना चाहते हैं। जबकि आपको बनाने में उनका कोई योगदान नहीं है। ●

अध्याय-5

सफलता का स्तंभ

समय के साथ सफलता के मायने बदलते रहते हैं। एक ही व्यक्ति के लिए विभिन्न समय पर सफलता के अर्थ अलग-अलग होते हैं। बेहतर तरीके से जानने के लिए इसे तीन विभिन्न श्रेणियों में बांटा जा सकता है। पहली श्रेणी, जिसमें आप अपने अनुसार लक्ष्य को हासिल करते हैं। मान लें कि आपने आईआईटी में सफलता का लक्ष्य बनाया और उसे हासिल कर लिया। दूसरी श्रेणी है कि आपने एक अच्छे मकान, प्लॉट या विला का मन बनाया और उसे हासिल किया। इसमें कार वगैरह भी हो सकती है। तीसरी श्रेणी में उपरोक्त दोनों चीजें हैं, जहां आपने ये सभी चीजें हासिल कर लीं तो दूसरे भी प्रेरणा लेकर यह लक्ष्य रख सकते हैं।

ज्यादातर, सफलता की यात्रा अंतहीन होती है। आप अधिकतम सफलता का आनंद लेना चाहते हैं। एक बार लक्ष्य को शीघ्रता से हासिल कर लेने पर आप फिर से दूसरा लक्ष्य निर्धारित कर लेते हैं। एक बार आईआईटी में सफल होने पर छात्र आगे की परीक्षाओं में अच्छा ग्रेड लाना चाहता है। आईआईएम से डिग्री हासिल करने के बाद छात्र जिंदगी का लुत्फ लेना चाहता है। लेकिन यह 'बाद' कभी नहीं आता और सफलता की यात्रा जारी रहती है।

सफलता एक यात्रा है, तो हम में से कितने हैं जो इस यात्रा का आनंद उठा पाते हैं। ऐसा इसलिए होता कि हम खुद से ज्यादा दूसरों के लिए हैं। जब तक हमें उत्साह मिलता है, हम अपनी यात्रा जारी रखते हैं। अगर आप भी ऐसा सोचते हैं। तो इस घुड़सवार की कहानी से आपको बहुत कुछ समझने को मिलेगा।

काफी समय पहले एक जमींदार ने एक घुड़सवार से कहा कि अगर वह उसके घोड़े पर सवार होने में कामयाब हो जाएगा तो उसे

बतौर इनाम वो सारी जमीन दी जाएगी, जितनी वह दिन-भर में उस घोड़े पर बैठकर नाप सकेगा।

घुड़सवार ने कहा “बस इतना ही।” और तेजी से घोड़े पर चढ़ गया और जितना तेज वह घोड़े को दौड़ा सकता था दौड़ाने लगा ताकि ज्यादा से ज्यादा जमीन नाप सके। यहां तक कि घोड़ा और वह दौड़ते-दौड़ते भूख-प्यास और थकान से निढाल हो गये लेकिन तब भी वह रुका नहीं क्योंकि उसे ज्यादा से ज्यादा जमीन चाहिए थी। वह जिस बिंदु से चला था वहाँ पहुंचने से पहले ही वह थककर गिर गया और मरणासन्न हो गया। तब उसने स्वयं से कहा—“क्यों मैंने ज्यादा जमीन पाने के लालच में स्वयं पर इतना जुल्म किया? अब मैं मर रहा हूँ और अब मेरी कब्र बनाने के लिए सिर्फ जमीन के छोटे से टुकड़े की जरूरत होगी।

हमारी जीवन यात्रा की भी यही कहानी है। ज्यादा से ज्यादा पैसा कमाने के लिए हम रोज कठिन मेहनत करते हैं और स्वयं को दूसरों से ज्यादा कामयाब साबित करने के लिए अधिक से अधिक पैसा और पावर चाहते हैं। हम अपने परिवार और स्वास्थ्य की अनदेखी करते हैं और आस-पास की सुंदरता से और अपने शौक से प्रेम करना भूल जाते हैं। कुछ समय बाद जाकर हमें इन चीजों का एहसास होता है। जीवन में कामयाबी के लिए पैसा और पावर हासिल करना ही सबकुछ नहीं है। जिंदगी केवल कामयाबी हासिल करने का नाम नहीं है—कामयाबी के नाम पर हम आनंद को पीछे छोड़ रहे हैं। वह आनंद जो हमें नई स्फूर्ति प्रदान कर हमें बेहतर जिंदगी का मजा देता है।

जिंदगी एक संतुलित कार्यकलाप है, जिसमें स्वयं व परिवार के लिए भी वक्त होना चाहिए। यह आपको तय करना है कि आप कैसे इन कार्यकलापों को संतुलित करें। अपनी प्राथमिकताओं को तय कीजिए और उसके मुताबिक फैसला लीजिए।

खुशी और प्रेम ही जिंदगी का मतलब व उद्देश्य होना चाहिए, जोकि मानव का प्रमुख लक्ष्य है। हर कामयाब कहानी का यही अंत है, इसे आपको याद रखना चाहिए। खुदगर्जी से जीवन में अंधेरा फैलता है। प्रकृति और अपनी उपलब्धियों का लुत्फ उठाइए। अपनी छोटी से छोटी सफलता का जश्न मनाइए।

जिंदगी छोटी और क्षण-भंगुर है। संतुलित जीवन जीना ही बेहतर जिंदगी के मायने हैं। आप केवल तब ही जीवन का आनंद उठा सकते हैं जब आप आनंदित महसूस करेंगे। लेकिन अधिकांशतः हम तब ही आनंद मनाते हैं जब हमें कोई अपनी उपलब्धियों के बारे में बताता है।

अपने विचारों को देखिए, वे शब्द बनते हैं। अपने शब्दों को देखिए, वे क्रियाएं बनते हैं। अपने द्वारा की जाने वाली क्रियाओं को देखिए, वे आदतें बन जाती हैं। अपनी आदतों को देखिए, वे आपकी विशेषता बन जाती हैं। अपनी विशेषता को देखिए, यही आपकी नियति बनती है।

5.1 औसत प्रतिभा

प्रतिभा समस्याओं से निबटने की एक योग्यता है। एक प्रतिभावान आदमी किसी समस्या का उपयुक्त उपाय तलाश कर उसका निदान करता है। अपने आस-पास नजर डालने पर आप पाएंगे कि कामयाब इंसान भी आप ही की तरह हैं।

कभी ऐसा मत सोचिए कि वे आपसे ज्यादा भाग्यशाली हैं। एक बात आप जान लीजिए कि उनकी कामयाबी की सबसे बड़ी वजह यही होगी कि उन्होंने दूसरों की बातों को अनसुना करके स्वयं से प्रेरणा ली व आगे बढ़े।

आश्चर्यजनक रूप से हम किसी नए काम को हाथ में इसलिए नहीं लेते कि हममें वह क्षमता नहीं बल्कि हम सोचते हैं। कि हम कभी वह काम पूरा कर ही नहीं पाएंगे। जब तक कोई व्यक्ति किसी कठिन काम में हाथ नहीं लगाता तब तक उसकी प्रतिभा नहीं मापी जा सकती लेकिन एक बार जब वह अपनी योग्यता के बलबूते साबित कर देता है तो वह प्रतिभावान बन जाता है।

आपको हर आदमी की सलाह विश्लेषण करके उसे अपनी परिस्थितियों के मुताबिक ढालना होगा ताकि वह आपके लिए फलदायी साबित हो। चाहे आप कम या ज्यादा आईक्यू वाले हों, आंख मूंदकर किसी की सलाह नहीं मान लेनी चाहिए। आपकी प्रतिभा इसी बात की जांच है कि जो सलाह आपको दी गई है उसे आप कैसे कार्यान्वित करते हैं। आगे दी जा रही इस पौराणिक कथा से आप इसे बेहतर तरीके से समझ सकते हैं।

एक बार एक महात्मा किसी गांव से गुजर रहे थे। उन्होंने देखा कि कुछ लोग रो रहे हैं। पूछने पर पता चला कि सांप के काटने से किसी की मौत हो गई है। महात्मा ने गांव में उस सांप को खोजा और उससे किसी भी आदमी को न काटने की विनती की, ताकि गांव वाले सांप से भयभीत न रहें। सांप ने महात्मा से भविष्य में ऐसा न करने का वादा किया। कुछ दिनों के बाद वे महात्मा फिर उस गांव से गुजर रहे थे। परिस्थिति बिल्कुल विपरीत थी। गांव वाले उस सांप को पत्थरों व डंडों से पीट रहे थे। सांप मरणासन्न हो चुका था। किसी तरह से महात्मा ने सांप को बचाया। महात्मा ने उस सांप के जख्मों पर दवा लगाते हुए पूछा, “गांव वालों की निर्दयता को तुम क्यों इस तरह सहन कर रहे थे?”

सांप ने जवाब दिया, “मैं आपकी बात मान कर चल रहा था। आपको ऐसा नहीं लगता कि आपकी सलाह मेरी जान ले लेती?”

महात्मा बोले, “मैंने तुम्हें किसी को काटने से मना किया था लेकिन तुमसे यह नहीं कहा था कि जरूरत पड़ने पर तुम अपनी शक्ति का इस्तेमाल करना बंद कर दो।”

कई बार ऐसा होता है कि बिना मांगे आपको बहुत से लोग अपनी सलाह दे देते हैं, जबकि आपको उस सलाह की जरूरत नहीं होती। हमारे देश में सलाह ऐसी चीज है जो मुफ्त में मिलती है। आपने टीवी के एक विज्ञापन में देखा होगा कि एक आदमी को सर्दी-जुकाम होने पर उसका दोस्त बोलता है, “तुम क्या कर रहे हो यह... वाला सीरप ले लो। (वह किसी खास ब्रांड की दवा का नाम बताता है)।”

उसे अपने दोस्त को डॉक्टर के पास जाने की सलाह देनी चाहिए थी। क्या किसी को भी इस तरह दवा की सलाह देना उचित है।

आप महसूस करते होंगे कि कम आईक्यू वाले आदमी को ज्यादा आईक्यू वाले आदमी के मुकाबले समस्याओं को सुलझाने में काफी दिक्कतें आती हैं। लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं होता। जब आप छोटी समस्याओं का समाधान करने में सक्षम होते हैं तो आप बड़ी समस्याओं का भी समाधान कर सकते हैं। आपको अपने दिमाग में यह बात बैठा लेनी चाहिए कि समस्या को सुलझाने की क्षमता का आईक्यू से कोई संबंध नहीं है।

अगर आप छोटी समस्याओं को सुलझा लेते हैं तो इसमें कोई संदेह नहीं कि जिंदगी में बड़ी समस्याओं के आने पर भी आप उनका सामना कर पाएंगे।

आप दुनिया के किसी भी व्यक्ति से कम प्रतिभावान नहीं हैं। अन्यथा आपने पढ़ने के लिए यह किताब नहीं चुनी होती और न ही अपना कीमती वक्त इसको देते। अगर आप कुछ खो रहे हैं तो वह है आपका दृढ़निश्चय। अपने दृढ़निश्चय को बढ़ाने की कोशिश करें, जो सकारात्मक ऊर्जा पैदा करेगा। कभी भी अपनी योग्यता पर संदेह न करें, आप जीतने के लिए आए हैं और निश्चित रूप से विजेता बनेंगे।

5.2 कल्पनाशील बनें

कल्पनाशीलता का सामान्य अर्थ किसी चीज का विजुअलाइजेशन करना होता है। जब आप किसी कार्य को शुरू करना चाहते हैं तो पहले उसे विजुअलाइज कर लेते हैं उसके बाद ही वह दृश्य को, आपके चेतन मस्तिष्क को भेजता है। बिना इसके कोई भी कुछ हासिल नहीं किया जा सकता।

इसके विपरीत होता है रिफ्लैक्स एक्शन। इस प्रक्रिया में बिना पहले से विचार किए हुए हमारा शरीर हरकत में आ जाता है। जब हमारे शरीर पर कहीं मच्छर बैठा है तो इस रिफ्लैक्स एक्शन के चलते हाथ अनायास ही वहां पहुंच जाता है। लेकिन यह रिफ्लैक्स एक्शन अस्थायी होता है, लेकिन हम इसे अक्सर महसूस करते हैं। कई बार हम समस्याओं के समाधान में इसका भी उपयोग करते हैं लेकिन यह कोई स्थायी प्रभाव नहीं छोड़ता।

कल्पनाशीलता हमारे मुख्य तंत्रिका तंत्र (नर्वस सिस्टम) द्वारा किया जाने वाला कार्य है, जोकि हमारे मस्तिष्क का सबसे ज्यादा विकसित भाग है। काल्पनिक दृश्य में किसी भी समय सुधार की संभावना होती है। यही कारण है कि विजुअलाइजेशन को रिफ्लैक्स एक्शन से ज्यादा तीव्र माना जाता है।

हम एक समय में कई विचारों को विजुअलाइज करते हैं। किसी पर हम तुरंत कार्यान्वित होते हैं तो किसी को बाद में अमल में लाने की कोशिश करते हैं और कुछ सदा के लिए दम तोड़ देते हैं। हर आदमी में विजुअलाइजेशन की प्रतिभा है। अन्यथा एक किसान जो पढ़ा-लिखा नहीं होता है, बादलों व हवा का रुख देखकर मौसम का पूर्वानुमान नहीं बता पाता।

कल्पनाशीलता मनुष्य का जन्मजात गुण मानी जाती है। कुछ लोग इसका ज्यादा इस्तेमाल करते हैं तो वे इसमें माहिर हो जाते हैं। कल्पनाशीलता

से विजुअलाइजेशन की क्षमता पैनी होती है जो आपको एक आधार उपलब्ध कराती है।

किसी समस्या का काल्पनिक समाधान इस पर निर्भर करता है कि आप कितने वास्तविक होकर सोचते हैं, जिसे हम आमतौर पर 'कॉमन सेंस' कहते हैं।

मूसलाधार बारिश में एक व्यक्ति कार से कहीं जा रहा था एकाएक उसका बायां पहिया पंक्चर हो गया और उसने पहिया बदलने के लिए कार रोकी। उसने पंक्चर हुए पहिए के चारों स्क्रू निकाल दिए लेकिन अचानक ही वे सारे स्क्रू उसके हाथ से छूट कर पास बह रहे नाले में गिर गए। उसकी कार एक पागलखाने के सामने आकर खराब हुई थी और एक पागल खड़ा हुआ उसकी सारी गतिविधियों को बड़े ध्यान से देख रहा था। वह रोगी उसके पास आया और बोला कि शेष तीनों पहियों से एक-एक स्क्रू निकाल कर इसमें लगा दो और अपनी यात्रा शुरू करो। वह आदमी हैरान रह गया कि इतना बुद्धिमान आदमी इस जगह कैसे हो सकता है। उस रोगी ने कहा कि यह सलाह मात्र एक कॉमन सेंस है और कुछ नहीं। कॉमन सेंस की अधिकता ही बुद्धिमत्ता कहलाती है।

इस कहानी में वह व्यक्ति न जाने सालों से कार चलाता था। लेकिन विषम परिस्थिति आने पर वह उपाय को विजुअलाइज करना भूल गया। विषम परिस्थितियों में ऐसा ज्यादातर लोगों के साथ होता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हमारा दिमाग नकारात्मक विचारों से भरा रहता है और हम अपने दिमाग में चीजों को सही तरीके से विजुअलाइज नहीं करते। विषम परिस्थितियों में स्वयं को संयत रखने से आप सर्वोत्तम परिणाम पा सकते हैं। आप भले इस बात को मानें या न मानें लेकिन दुर्गम इलाकों में रहने वाले लोगों में कल्पनाशीलता या विजुअलाइजेशन की सबसे ज्यादा क्षमता होती है। वे मौसम के हालात को विजुअलाइज करके फसल की एडवांस बुआई करते हैं। यहां तक कि जानवरों में भी इसकी अद्भुत क्षमता होती है और प्राकृतिक आपदा आने से पहले ही वे इसका अंदाजा लगा लेते हैं।

समझ आपकी जानकारी का नतीजा होती है न कि आपके सीखने की गति का परिणाम।

हममें से कम ही लोग अपने विचारों पर अमल करते हैं, ज्यादातर लोग दूसरों की ही कॉपी करते हैं। हम सफल लोगों की सफलता की कहानियां पढ़कर उन पर यकीन करके उनकी नकल करना शुरू कर देते हैं परंतु मूल तथ्य भूल जाते हैं कि एक ही आइडिया हमेशा काम नहीं कर सकता और यदि काम करता भी है तो उसका परिणाम एक जैसा नहीं होता। हम रोजाना सैकड़ों विचारों को दफना देते हैं। जो विजुलाइजेशन की प्रक्रिया के दौरान उत्पन्न होते हैं। असफल होने के डर से हम उन्हें कार्यान्वित नहीं करते। मेरी किताब 'क्रेक द शेल दैट कवर्स यू' में मैंने इस विषय का विस्तार से जिक्र किया है। यह आपके विचारों से पैदा होने वाले भय से आपको मुक्त करती है।

5.3 आत्मविश्वास-सफलता की कुंजी

आत्मविश्वास आपकी आंतरिक शक्ति होती है। आपकी प्राथमिकता अपनी आन्तरिक शक्तियों के आकलन की होनी चाहिए। अगर आपके पास ऐसा करने की क्षमता नहीं है तो आपका हर काम अधूरा ही रह जाएगा।

खुद पर दृढ़-विश्वास करके आप अपने 90 फीसदी लक्ष्य को हासिल कर सकते हैं और महज 10 फीसदी के लिए ही आपको तकनीकी ज्ञान की जरूरत पड़ सकती है। तकनीकी ज्ञान अनुभव से आता है। लेकिन अगर आपको तकनीकी ज्ञान होने के बावजूद खुद पर संदेह है तो हो सकता है कि आप अपना लक्ष्य हासिल न कर पाएं। दुनिया में ज्यादातर असफल अपनी योग्यताओं और क्षमता पर किये गये संदेह का शिकार रहे हैं। वे इसलिए असफल हुए क्योंकि उनमें आत्म-विश्वास नहीं था।

दुनिया में जितने भी महान आविष्कारक हुए हैं, सबने पहले खुद पर विश्वास किया फिर अपनी उपलब्धियों को हासिल करने पर। अगर उन्होंने अपनी क्षमता पर संदेह किया होता तो वे कतई अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाते।

युधिष्ठिर पांडवों में सबसे बड़े थे। वह एक सत्यवादी इंसान थे और महज एक बार अपवादस्वरूप छोड़कर उन्होंने कभी झूठ नहीं बोला महाभारत में उनका एक प्रतिष्ठित दर्जा है। 'मकुर' नामक उनका एक पालतू कुत्ता था। मकुर हमेशा उनके साथ ही रहता था। युधिष्ठिर जब भी कोई फैसला लेते तो उसकी सलाह जरूर लेते।

मृत्यु के बाद युधिष्ठिर को स्वर्ग में आने का आमंत्रण मिला। वे स्वर्ग के द्वार तक पहुंच गए। मकुर भी उनके साथ ही गया था। स्वर्ग

के द्वार पर खड़े द्वारपाल ने युधिष्ठिर से कहा कि आपके साथ यह कुत्ता स्वर्ग में नहीं जा सकता। नियमानुसार कुत्ते का स्वर्ग में जाना मना है। युधिष्ठिर ने कुत्ते के बिना स्वर्ग में जाने से मना कर दिया। स्वर्ग के संरक्षक इन्द्र के लिए बड़ी समस्या पैदा हो गई। उन्होंने मंत्रिमंडल की बैठक आयोजित की और मामले पर चर्चा की गई। युधिष्ठिर को नियमों के बारे में समझाया गया पर वे नहीं माने। अंततः नियमों में संशोधन करते हुए युधिष्ठिर को मकुर के साथ स्वर्ग में जाने दिया गया। लेकिन यह तय किया गया कि ऐसा भविष्य में नियम नहीं बनेगा। यह केवल एक बार के लिए ही मान्य है। दूसरों के साथ ऐसा नहीं लागू होगा।

युधिष्ठिर अपने व्यवहार के मुताबिक अपनी बात को मनवाने में सफल रहे क्योंकि उन्हें खुद पर विश्वास था कि वे गलत नहीं हैं। युधिष्ठिर को अपने विश्वास पर गर्व था और ऐसा करके वे अपना स्वाभिमान कायम रख सके। मुसीबत के दौरान अपने अनुसरण करने वालों को खो देना एक अच्छे नेता का गुण नहीं, ऐसे में एक समय के बाद नेता अकेला पड़ जाएगा। ऐसा खुद के स्वाभिमान को कायम न रख पाने की वजह से होगा।

आपके पास इस तरह के बहुत से उदाहरण होंगे। अच्छा परिणाम नहीं आने पर कई बार छात्र आत्महत्या को प्रेरित होते हैं, जिसकी प्रमुख वजह उनके स्वाभिमान होने को माना जाता है। लेकिन देखा जाए तो सही मायने में अगर उनमें स्वाभिमान होता तो वे आत्महत्या का रास्ता नहीं चुनते।

दूसरों के मुकाबले खुद को श्रेष्ठ साबित करने के लिए आपको दूसरी बार मौका नहीं मिल जाएगा।

असफल होने पर हम कई बार हताश हो जाते हैं लेकिन हम यह भूल जाते हैं कि प्रकृति का यह मौलिक नियम है कि मंजिल तक पहुंचने के लिए हर इंसान अलग रास्ता चुनता है। हम वरदान पाने के लिए लाख से ज्यादा देवताओं की पूजा करते हैं। लेकिन अंतिम मंजिल एक ही है। आपका लक्ष्य तो तय होना चाहिए लेकिन उसके रास्ते कभी सबके लिए समान नहीं हो सकते। हर इंसान की अपनी क्षमता होती है, जिसके मुताबिक वह मंजिल को तय करने का रास्ता चुनता है।

हम अक्सर सुनते हैं कि पहले की अपेक्षा जिंदगी अधिक तनावपूर्ण हो गई है। ऐसा इसलिए कि हम अपनी मंजिल अपनी क्षमताओं की बजाय और दूसरे बाहरी स्रोतों की मदद से पाना चाहते हैं। हमें विश्वास होना चाहिए कि इस कार्य को करने के लिए सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति हम ही हैं, दूसरा कोई नहीं। जिस दिन हम खुद पर विश्वास कर लेंगे उस दिन कोई भी शक्ति हमें मंजिल तक जाने से रोक नहीं पाएगी। अगर मंजिल कठिन है तो आपका आत्म-सम्मान उसे कई भागों में बांट कर हासिल करने की चेष्टा करेगा।

5.4 भय का दृढ़ता से मुकाबला करो

असफलता इस बात का संकेत है कि हमने ईमानदारी से अपनी मंजिल पाने की कोशिश नहीं की। अपना लक्ष्य प्राप्त करने की राह में नाकामयाबी सबसे बड़ी बाधा मानी जाती है। कम ही लोग हैं जो नाकामयाबी से नहीं डरते। असफलता हमारे जीवन का एक हिस्सा है और बिना इसके हम जिंदगी का मतलब नहीं समझ सकते। असफलता ही हमें पूरी ताकत के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

आपने देखा होगा कि सड़कों पर तेज गति से कार चलाते समय स्पीड ब्रेकर आते हैं, जहां कार की गति कम करनी होती है। आपने कभी भी उस स्पीड ब्रेकर को बहुत तेज गति के साथ पार करने की कोशिश नहीं की होगी अन्यथा दुर्घटना की संभावना हो सकती है। असफलताएं हमारी जिंदगी में स्पीड ब्रेकर का काम करती हैं। यह हमें बताती हैं कि हमेशा एक समान गति बनाए रखना संभव नहीं। आपको रुकना होगा, अपनी ऊर्जा को संगठित करते हुए अपनी इच्छित गति से बढ़ते हैं फिर कोई गति रोधक आ जाता है और आपको अपनी गति न्यूनतम कर देनी पड़ती है और इस प्रकार आप अपनी यात्रा जारी रखते हैं।

ऐसा मुमकिन हो सकता है कि बिना असफल हुए आप अपनी मंजिल तक पहुंच जाएं लेकिन एक बार मंजिल पर पहुंच जाने पर आपको लगेगा कि आपकी क्षमताओं के आगे मंजिल कमतर है। असफलताएं आपको यह समझाती हैं कि एक बार फिर से अपनी क्षमताओं का आकलन करके पूरी ताकत लगाकर मुकाम हासिल करने में जुट जाएं।

वास्तव में असफल होने से पहले ही हमारे दिमाग में असफलता का भय घर कर जाता है। जब हम असफलता के बारे में सोचते हैं तो हमारे भीतर एड्रेनेलिन हारमोन का स्राव होने लगता है। जो हमें असफलता को स्वीकार

करने की ओर प्रेरित करता है। एक बार अगर आपके दिमाग से असफलता का डर निकल जाता है तो आप फिर पुरानी अवस्था में आ जाते हैं।

एक जंगल में एक शेर रहता था, जोकि वहां का राजा था। उस जंगल में कुछ भेड़ें भी थीं, जो अक्सर शेर के बच्चों को परेशान करती थीं। शेरों की संख्या मुश्किल से सौ थी, जबकि भेड़ों की संख्या कई हजार में थी। सभी शेरों ने भेड़ों को सबक सिखाने के लिए उनसे लड़ाई करने की ठानी।

युद्ध की घोषणा हो गई और बंदर को निर्णायक बनाया गया। बंदर एक नया विचार लेकर आया कि शेरों की सेना का सेनापति एक भेड़ को बनाया जाए और भेड़ों की सेना का सेनापति शेर को बनाया जाए। शेरों ने आपस में बात की और वे इस विचार से सहमत हो गए। एक रेखा के दोनों ओर दोनों सेनाएं खड़ी हो गईं। बंदर ने युद्ध का बिगल बजाया। भेड़ों की सेना का सेनापति बना शेर जोर से दहाड़ा और उसकी दहाड़ को सुनकर शेरों का सेनापति बना भेड़ डर कर भाग गया। इधर, सैनिक शेरों ने सोचा कि हार के डर से सेनापति भाग रहे हैं तो उन्होंने भी वैसा ही किया और वे भी भाग गये।

आपकी मानसिक अवस्था ही आपको सफलता की ओर ले जाती है। आप विजेता तभी बन सकते हैं, जब आपको भीतर से यह महसूस हो कि कोई आपको हरा नहीं सकता। आपका 'किलर इंस्टिक्ट' ही आपको विजय दिला सकता है। गलती होने पर तुरंत उसका विश्लेषण करते हुए आगे बढ़ जाएं। आपको ऐसा कोई कामयाब इंसान नहीं मिलेगा, जिसने कभी कोई भूल न की हो। भूल ही आपको यह एहसास कराती है कि मंजिल तक पहुंचना उतना आसान भी नहीं है। असफलता का सामना करने के लिए खुद को मानसिक तौर पर तैयार रखें।

एक बार एक प्रोजेक्ट पर काम करने के दौरान, ऐसा हुआ कि कुछ शिक्षकों ने चेयरमैन से मेरे बारे में शिकायत की। मेरे लिए यह एक झटका था क्योंकि मैंने उससे पहले ट्रेनिंग की पचासों प्रशिक्षण कक्षाएं ली थीं। चेयरमैन ने मुझे बुलाकर कहा कि उन शिक्षकों में बहुतों के पति जिले में उच्च पदों पर हैं और वे यहां सिर्फ समय काटने को आती हैं। वे उच्च शिक्षित हैं लेकिन उनमें पढ़ाने के लिए कोई प्रतिबद्धता नहीं है। अपने सत्र के दौरान मैंने उन लोगों से कुछ साधारण किस्म के सवाल पूछे, जिसका वे उत्तर नहीं दे सकीं और मैंने इस पर

टिप्पणी करते हुए कहा कि अगर वे लोग इन चीजों के प्रति सजग नहीं हैं तो वे इस पेशे में रहने के योग्य नहीं हो सकतीं। पहली बार ऐसा हुआ कि किसी ने उन लोगों के बारे में प्रत्यक्ष रूप से ऐसी टिप्पणी की थी। स्कूल के मालिक एक बिजनेसमैन थे और उन्होंने मेरी जो सेवाएं ली थीं। उससे उन्हें खासा फायदा हुआ, जो पहले उन्हें नहीं हो रहा था। प्रतिस्पर्धा में वहां कई और नए स्कूल खुल गए थे जिनसे इनके एकाधिकार को चुनौती मिल रही थी। जिले के अधिकारियों की पत्नियों को नौकरी पर रखना मजबूरी से ज्यादा जरूरत थी। चूंकि स्कूल इंग्लिश मीडियम था इसलिए इंग्लिश बोलने वाले शिक्षकों की जरूरत थी, भले ही उन्हें विषय ज्ञान की पकड़ हो या न हो। उन्होंने उसे अपनी ट्रेनिंग के तरीके में बदलाव लाने को कहा।

मैंने अपनी टिप्पणी के लिए उनसे क्षमा मांगते हुए उसमें परिवर्तन की बात बताई। मैं उन्हें यह समझाने में सफल रहा कि भाषा ज्ञान के साथ ही कुछ स्तर तक विषय का ज्ञान भी जरूरी है क्योंकि हजारों छात्रों का भविष्य उनके हाथों में है और ऐसा नहीं हुआ तो उनका भविष्य चौपट हो सकता है। मैंने उन्हें कुछ खास किताबों और इंटरनेट की साइटों से जुड़ने की सलाह दी ताकि अपडेट जानकारी मिलती रहे और वे एक महीने में मेरी उम्मीद के मुताबिक खरे उतरे। यह ट्रेनिंग कार्यक्रम मेरे लिए खास फायदेमंद रहा।

बिना गलती किए हुए आप कभी कुछ हासिल नहीं कर सकते। अपने अनुभवों के बावजूद आप पूर्ण कभी नहीं हो सकते। हमेशा कुछ नया सीखने की संभावना रहती है जिससे आप कुछ सीख सकते हैं। गलती महसूस होने पर कभी भी क्षमा मांगने से हिचकिचाना नहीं चाहिए। केवल वही आदमी कभी गलती नहीं कर सकता जो कुछ करता ही न हो अन्यथा जो कुछ करेगा तो गलती जरूर होगी। इसका उम्र और अनुभव से कोई संबंध नहीं है। गलती करना जिंदगी का एक हिस्सा है और उसे स्वीकारने में भी कोई हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए। बस एक बात का ख्याल रखें कि एक ही तरह की गलती का दोहराव न हो। आप जन्मजात विजेता हैं और आप स्वयं में दृढ़ हैं तो असफलता का भय आपको नहीं सताएगा।

5.5 वैयक्तिक अस्तित्व कायम रखें

कई बार हम अपने आस-पास ऐसे लोगों को जानते व आपस में चर्चा करते हैं जो कभी भी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं करते। ऐसे लोग अपवाद नहीं लेकिन हम सोचते हैं कि हमने अगर ऐसा किया तो हम असफल हो सकते हैं। खास गुण होना ईश्वर का वरदान है लेकिन हम ऐसा नहीं सोचते और उन सफल लोगों के गुणों व तरीकों की नकल करके कामयाब होना चाहते हैं। हम सोचते हैं कि कुछ खासियों के चलते ही ऐसे इंसान कामयाब होते हैं लेकिन हम यह भूल जाते हैं कि प्रकृति का सामान्य नियम है कि हर आदमी में कुछ न कुछ खासियत होती है।

आपने गुब्बारे बेचने वाले को देखा होगा। वह उसमें हाइड्रोजन गैस भर कर हवा में उड़ाता है, जो काफी ऊपर तक जाता है उसमें विभिन्न रंगों के गुब्बारे होते हैं। उन गुब्बारों का आकर्षण रंगों से ज्यादा उसमें भरी गैस के कारण होता है। जो उसे ऊपर ले जाती है। लेकिन लोग गैस को भुला देते हैं।

दूसरों की सफलता से कुछ हासिल करने के लिए उन चीजों को अपनाने की कोशिश न करें जो दिखाई दे रही हैं। उनकी भीतरी चीजों को अपनाएं। अगर हर आदमी दूसरे की नकल करने लगे तो इससे वह खुद की पहचान खो देगा।

मैंने स्वयं कई तरह के प्रोजेक्ट्स पर काम किया है और मैंने उन्हें अच्छी तरह से संचालित भी किया है। कभी-कभार मेरे पास आने वाले लोग कहते हैं कि अपने कार्यों के बदले जो मैं फीस लेता हूं वह दूसरों के मुकाबले ज्यादा है। मैं बड़ी विनम्रता से उन्हें बताता हूं कि मुश्किल परिस्थितियों के समय मैं जितनी आसानी से उसका हल निकाल सकता हूं, दूसरे वैसा कर पाने में शायद सक्षम न हों और ज्यादा विलंब होने पर फिर मैं भी कुछ नहीं कर सकता। यही खासियत आपको लोगों से अलग करती है। यह खासियत भले ही बहुत अल्प मात्रा में हो सकती है लेकिन आपको कभी यह नहीं भूलना चाहिए कि भोजन में अल्प मात्रा में नमक कम या ज्यादा होने से उसका पूरा स्वाद बदल जाता है।

एक बड़े कारखाने में काम कर रही मशीनें एकाएक बंद हो गईं। कारखाने के इंजीनियर उसकी मरम्मत में लग गए। लेकिन वह ठीक न हो सकी। कारखाने का मालिक बेचैन था क्योंकि उसे बर्बाद होने वाले हर एक

मिनट की बड़ी कीमत चुकानी पड़ रही थी। उसने अपने एक मित्र से बात की जो कि एक अनुभवी इंजीनियर को जानता था। उसने उस इंजीनियर को अपने मित्र के कारखाने में भेजा। उस इंजीनियर ने सभी मशीनों का निरीक्षण किया और कहा कि इस काम के लिए वह 10 हजार रुपए लेगा। मालिक तुरंत उससे सहमत हो गया। इंजीनियर ने एक हथौड़ा मंगाया और एक निश्चित जगह पर जोर से हथौड़ा मारा और मशीन चालू हो गई। इंजीनियर ने अपना मेहनताना मांगा।

कारखाने के मालिक ने कहा, इस छोटे-से काम के लिए सौ रुपए काफी हैं यह काम तो कोई भी कर सकता था।

इंजीनियर ने जबाव दिया, 'श्रीमान्, आप बिल्कुल ठीक फरमा रहे हैं। हथौड़े की एक चोट के लिए वाकई में सौ रुपया काफी हैं, लेकिन 9,900/- रुपए इस बात को निर्धारित करने के लिए हैं कि आखिर हथौड़ा मारना किस जगह पर है।'

मालिक ने उसकी बात समझी और तुरंत ही उसे 10 हजार रुपए दे दिए।

कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं होता। काम को करने का तरीका सही होना चाहिए। सबके काम का तरीका अलग होता है। हर काम को जिंदा दिली के साथ कीजिए। स्कूल से लेकर कालेज तक आपने कम से कम पचासों शिक्षकों से पढ़ा होगा लेकिन उनमें से दो-तीन शिक्षकों के नाम ही आपको याद होंगे जिन्होंने कुछ अलग तरीके से पढ़ाया होगा।

दुनिया की प्रगति अलोकप्रिय फैसलों का नतीजा है।

कई बार आप मेरी बातों से भले ही सहमत न हों पर जब आप कोशिश करेंगे तो निश्चित तौर पर मैं यह कह सकता हूँ कि आप मुझसे सहमत होंगे। मैं आपको अलोकप्रिय होने की सलाह नहीं देता लेकिन मैं आपसे इतना कहना चाहता हूँ कि आपको अपनी खासियत कायम रखनी चाहिए। भले ही आप लोकप्रिय बनें या नहीं। यह सब बस कुछ समय की ही बात है फिर एक समय ऐसा आएगा जब लोग आपके फैसलों की सराहना करेंगे।

इस धरती पर हर कामयाब इंसान को समाज ने दुत्कारा है क्योंकि उनके विचार वर्तमान समय से आगे की सोच रखते हैं और समाज ने कभी भी उन विचारों को शुरुआत में कोई तवज्जो नहीं दी। मैं अपने इस विचार के समर्थन में कोई उदाहरण नहीं देना चाहूंगा। क्योंकि आपके आस-पास ऐसे ढेरों उदाहरण मौजूद हैं। एक बार आपने अपना लक्ष्य निर्धारित कर लिया तो फिर एक सफल व्यक्ति की तरह आपको दृढ़-निश्चयी रहना है, भले ही लोग आपके फैसले की सराहना करें या न करें। बस आप अपनी व्यक्तिगत पहचान बनाने की कोशिश करें, न कि ऐसा इंसान बनने की जो कि समाज को कुछ भी न दे सकें।



अध्याय-6

सफलता के आवश्यक सूत्र

आमतौर पर हम मानते हैं कि सफल व्यक्ति कुछ मायनों में हम से अलग होते हैं। और हमारा यह भी मानना है कि अगर हमें भी उनकी तरह माहौल व परिस्थितियां मिली होतीं तो हम भी सफल हो सकते थे। यही सोच हमें आगे बढ़ने से रोकती है। बेशक, उनमें हमसे अलग कुछ विशेष गुण जरूर हैं लेकिन एक विशेषता और भी है वे उनका बहु-आयामी होना, जबकि हम वैसे नहीं हैं। हमें स्विचिंग स्टाइल अपनाना चाहिए। हम किसी काम की शुरुआत करते हैं और कुछ समय बाद उसमें छोटी-मोटी बाधाएं आने पर बिना विचार किए किसी से भी सलाह लेते हैं और जो व्यक्ति कभी अपने काम में सफल नहीं हुए वे हमें गलत राह चुनने की सलाह देकर हमें रास्ते से भटका देते हैं।

ज्यादातर, असफलता की वजह यह होती है कि हम अपने इर्द-गिर्द के लोगों की टिप्पणियों को कुछ ज्यादा ही महत्त्व देते हैं। हम उस टिप्पणी को पीछे छिपे कारणों की ओर कभी गौर नहीं करते और उनसे संतुष्ट होकर काम रोक देते हैं। अच्छा श्रोता बनना अच्छी बात मानी जाती है लेकिन बिना कारण के उस बात पर विश्वास करना बुरी बात है, दूसरों की बात को बिना सोचे-समझे अपने जीवन में मत उतारें। अपनी आंखें खुली रखिए और नए विचारों को अपनाइए।

पौराणिक कथाएं हमारी सर्वोत्तम शिक्षक हैं। इन कथाओं को अगर हम देखें तो ये आज भी पूरी तरह से प्रासंगिक हैं। हम सपनों की दुनिया में खोए रहते हैं। हम कठिन परिश्रम से बचना चाहते हैं और पलक झपकते ही चीजों को हासिल करना चाहते हैं।

एक व्यापारी के पास एक तोता था, जिसे वह दूर देश से लाया था। वह उसे चांदी के पिंजरे में कैद करके रखता व फल खिलाता था। तोता बहुत ही चालाक और वाकपटू था।

तोता लंबे समय से उस कैद से आजाद होना चाह रहा था लेकिन व्यापारी उसे आजाद करने के बजाय उससे कुछ अच्छी बातें बताने को कहता।

एक दिन तोते ने उससे कहा, 'मुझे आजाद कर दो तो मैं तुम्हें तीन ऐसी सलाह दूंगा जो तुम्हारे लिए बड़ी फायदेमंद होंगी।

व्यापारी तोते से तो प्यार करता ही था, पर उसे धन से भी बहुत प्रेम था। उसने सोचा, 'अगर इसकी सलाह काम कर जाती है तो मुझे ढेर सारा धन मिल सकता है।' व्यापारी ने तोते का पिंजरा खोल दिया और वह उसके हाथ पर बैठकर बोला, "खो चुकी संपत्ति का कभी भी दुःख मत करो।" व्यापारी ने मन में सोचा कि यह बेकार की सलाह है पर कुछ बोला नहीं।

तोता उड़कर छत पर जा बैठा। वह बोला, "मेरी दूसरी सलाह को ध्यान से सुनो। वह हर बात जो तुमसे कही जाए। उस पर पूरी तरह विश्वास मत करो।" व्यापारी व्यथित होकर बोला, "मुझे कुछ ऐसी बात बताओ जो मैं नहीं जानता।"

"जो तुम नहीं जानते वह बात है कि मेरे पेट में दो अमूल्य पत्थर हैं," तोता बोला।

"दो अमूल्य पत्थर," व्यापारी ने दोहराया। "ओह! मैं भी कितना मूर्ख हूँ कि मैं ने तुम्हें छोड़ दिया। मुझे जीवन-भर इस बात का दुःख रहेगा।"

"क्या तुम मेरी तीसरी सलाह नहीं सुनना चाहोगे?" तोता बोला।

"जल्दी बताओ," व्यापारी उस पर चिल्लाया। "दुःख मत करो लेकिन तुम्हें मुझे खो देने का दुःख सताने लगा," तोता बोला।

"मैंने तुमसे कहा था कि जो बात तुम्हें सुनाई दे उस पर बिना विचार किए शीघ्र विश्वास मत करो लेकिन जब मैंने तुमसे कहा कि मेरे पेट में दो कीमती पत्थर हैं तो तुमने तुरंत विश्वास कर लिया। अगर वास्तव में मेरे पेट में दो कीमती पत्थर होते तो मैं जिंदा कैसे रह सकता था? मेरी तीसरी सलाह है कि बातों को सुनना सीखो, बातों को कान

से सुनने की बजाय दिमाग से सुनो।” और इतना कहने के बाद वह तोता वहां से उड़ गया।

पौराणिक कथाएं आज भी हमारी सर्वोत्तम शिक्षक हो सकती हैं लेकिन हम सोचते हैं कि बेवकूफ लोग ही उन पर विश्वास कर सकते हैं, जो सपनों की दुनिया में खोए रहते हैं। अगर ऐसा नहीं होता तो लाटरी का कारोबार इतना नहीं फलता-फूलता और लोग टीवी कार्यक्रमों में ‘हां’ या ‘न’ का विकल्प चुनकर मैसेज नहीं भेजते रहते। सपनों की दुनिया में विचरण करते हुए कामयाबी पाने का नतीजा ही आज लोगों को साइबर क्राइम करने को उकसा रहा है। इसमें शिक्षित और अशिक्षित सभी तरह के लोग लिप्त हैं।

सफलता कभी भी फैंटेसी नहीं हो सकती न ही वरदान। यह केवल निश्चित क्रिया-कलापों के साथ रिस्क लेकर किए जाने वाले कठिन परिश्रम का नतीजा होती है। एक बात स्पष्ट है कि एक समय पर कामयाब हुई रणनीति दुबारा से लागू करने पर कामयाब नहीं हो सकती, ऐसा तय नहीं कहा जा सकता। नई उपलब्धियों के लिए नए विचारों और ऊर्जा की जरूरत पड़ती है आपके शब्दकोश में ‘असंभव’ शब्द नहीं होना चाहिए।

पूर्व में सफलता की जिम्मेदार रणनीति, भविष्य में आपकी असफलता के लिए जिम्मेदार हो सकती है - चार्ल्स हैंडी।

इसमें कोई संदेह नहीं कि सफलता के लिए कुछ मूलभूत गुणों का होना आवश्यक है। लेकिन इसका मतलब ये हरगिज नहीं हो सकता है कि हर सफल आदमी के साथ यह नियम एक ही तरह लागू हो। हम मानते हैं कि सही दिशा में अथक परिश्रम करने से सफलता हासिल होती है लेकिन हम सही दिशा तय करने में असफल रहते हैं और कई बार तो जिंदगी-भर हम अपनी सही दिशा तय नहीं कर पाते। जो लोग जितनी जल्दी सही दिशा खोज लेते हैं, वे उतने भाग्यशाली होते हैं, जैसा कि एडिसन सत्रह बार असफल रहे थे।

आपको विश्वास करना होगा कि कामयाबी के लिए कुछ विशेष गुणों की जरूरत होती है जो जिंदगी में कभी भी प्राप्त हो सकते हैं, किसी भी आयु या अवस्था में, साठ साल की अवस्था में भी।

अमिताभ बच्चन द्वारा एंकरिंग किए गए प्रख्यात टीवी शो ‘कौन बनेगा करोड़पति’ में कई लोगों ने एंकरिंग करने का प्रस्ताव ठुकरा दिया था परन्तु इस टीवी शो ने बच्चन परिवार की नियति ही बदल दी। उस समय बच्चन के सितारे गर्दिश में थे जो रातोंरात शहंशाह बन गए। उसके बाद उन्हें कई दूसरे शो में भी एंकरिंग का मौका मिला और उन्होंने करोड़ों कमाए।

इससे क्या साबित होता है? सफलता के लिए समय और उम्र मायने नहीं रखते। एक बार अगर आपने ठान लिया तो फिर कोई आपको रोक नहीं सकता। अपने लक्ष्य पर बिना क्षण-भर रुके हथौड़ा चलाते रहिए, एक दिन ऐसा जरूर आयेगा जब वह टुकड़ों में बंट जाएगा और आप उसे आसानी से प्राप्त कर लेंगे।

6.1 दृढ़ निश्चय

स्वाभाविक रूप से इंसान किसी चीज के लिए प्रतिबद्ध होकर उसे ठान तो लेता है परन्तु ये जोश बड़ी जल्दी ठंडा हो जाता है। किसी लक्ष्य के प्रति हम पंद्रह मिनट से ज्यादा समय तक केंद्रित नहीं रह पाते। एक बार को अगर वह चुनौती हमारे पसंद की होगी तो स्वतः ही उसके प्रति हमारे अंदर दिलचस्पी बढ़ जाएगी। यही कारण है कि सुंदर व अच्छी चीजों की ओर हमारा ध्यान तुरंत आकर्षित हो जाता है।

एक दृढ़निश्चयी व्यक्ति वह होता है जो किसी भी कीमत पर अपने लक्ष्य को हासिल करना चाहता है। कामयाब इंसान में यह सबसे बड़ा गुण होता है। बिना दृढ़निश्चयी हुए हम कोई चीज हासिल नहीं कर सकते। हर आदमी इस गुण को अपनाता तो चाहता है लेकिन उसके प्रति उसकी यह चाहत ज्यादा समय तक टिक नहीं पाती।

दृढ़निश्चय के साथ एक आवश्यक गुण और है वह है, विश्वास का होना। बिना विश्वास के हम कोई भी लक्ष्य हासिल नहीं कर सकते। पहले आपको विश्वास करना सीखना होगा। तभी आप प्रगति की राह पर आगे बढ़ सकते हैं। यह एक सतत् प्रक्रिया है, जिसे आप सीख कर इस क्षेत्र के मास्टर बन सकते हैं। इसके लिए बस सामान्य बुद्धि की जरूरत है।

यह कहानी एक ऐसे पर्वतरोही की है जो ऊंची चोटियों पर चढ़ना चाहता था। कई वर्षों की तैयारी के बाद उसने अपने साहसिक अभियान की शुरुआत तो की लेकिन वह अकेले ही इस शानदार जीत

को पाना चाहता था इसलिए अकेला ही इस अभियान पर जाना चाहता था चूँकि तैयारी में देरी की वजह से वह कैप तक देर से पहुँचा। तब तक अंधेरा हो चुका था। ज्यादा ऊँचाई व भूस्खलन के कारण कुछ दिखाई नहीं दे रहा था, हर तरफ अंधेरा था। बादलों ने चाँद और तारों को ढक रखा था। पहाड़ की चोटी पर पहुँचने से कुछ फीट पहले ही वह फिसल गया और तेजी से नीचे की ओर गिरने लगा।

पर्वतारोही केवल काले धब्बों को देख पा रहा था। वह नीचे की ओर गिरता जा रहा था और उसके दिमाग में जिंदगी-भर बिताए अच्छे व बुरे क्षण घूमने लगे। वह सोच रहा था कि मौत अब करीब आ चुकी है कि इतने में ही उसे किसी रस्सी में लिपटे होने का आभास हुआ, जिसने उसकी कलाईयों को जोर से जकड़ रखा था। उसका शरीर हवा में झूल रहा था और केवल रस्सी को उसने जोर से पकड़ रखा था। वह सहायता के लिए जोर-जोर से चिल्ला रहा था। अंधेरे में उसे आवाज सुनाई दी। “मुझसे क्या चाहते हो, उसने कहा, “मुझे बचाओ, भगवान।”

“क्या तुम वाकई विश्वास करते हो कि मैं तुम्हें बचा सकता हूँ।” पर्वतारोही ने कहा, “बिल्कुल, मुझे आप पर विश्वास है।” “तो अपनी कलाई में लिपटी रस्सी को छोड़ दो,” ऊपर से आवाज आई। कुछ क्षणों के लिए सन्नाटा छा गया और उसने रस्सी को और ज्यादा मजबूती से पकड़ लिया।

सुबह जब बचाव दल के लोग वहाँ पहुँचे तो उन्होंने देखा कि पर्वतारोही का शरीर रस्सी में फँसा है और वह मर चुका है। उसके हाथों ने रस्सी को बुरी तरह से जकड़ रखा है। जबकि वह जमीनी सतह से महज पाँच फीट ही ऊपर था। वह आदमी भगवान के भरोसे बैठा रहा और उसी विश्वास के चलते भयानक स्थितियों में घिर गया। विपरीत परिस्थितियों में हम भी अक्सर ऐसा ही करते हैं। जब तक परिस्थितियाँ हमारे अनुकूल होती हैं तब तक हम दृढ़निश्चयी रहते हैं। लेकिन हालात विपरीत होते ही हमें अपनी क्षमता पर संदेह होने लगता है और हम सबकुछ खो बैठते हैं। आपको यह समझना होगा कि लक्ष्य हासिल करने के दौरान सब चीजें हमारी योजना के मुताबिक नहीं होतीं।

एयरोडायनामिक नियम के अनुसार बंबलबी उड़ नहीं सकती। उसके पंखों के मुकाबले उसके शरीर का वजन ज्यादा होता। इस नियम की अनदेखी कर वह फिर भी उड़ती है।

एक बार अगर आप किसी चीज को ठान लेते हैं तो फिर छोटी-मोटी बाधाएं आपको डिगा नहीं सकतीं। आराम की अवस्था में शरीर को हिलाने में ज्यादा बल लगाना पड़ता है परंतु जब वे क्रियाशील रहता है तो इसे हिलाने-डुलाने के लिए खुद को अधिक बल लगाना नहीं पड़ता। जब शरीर का आंतरिक बल कार्यरत रहता है तो किसी निश्चित समय में यह बल न के बराबर होता है। विपरीत परिस्थितियों में हमारे साथ भी यही होता है।

मुझे वह समय याद आ रहा है जब कई प्रकाशकों ने मेरी पहली किताब ‘व्हाट इफ यू डाई टुमारो?’ को छापने योग्य न पाकर इंकार कर दिया था। मैं उस समय मैं यह बात नहीं समझ पाया था कि प्रकाशक के लिए विषय उतना महत्त्व नहीं रखता जितना की उसकी बिक्री। जो विषय ज्यादा बिकता है, वह छपता है। मैं फिर भी बिना व्यथित हुए छः महीने तक इंतजार करता रहा और इस बीच दूसरी किताब ‘क्रेक द शेल देट कवर्स यू’ लिख डाली।

इंकार के बाद अगर मैं हताश हो जाता तो आप तक वह किताब नहीं पहुँच पाती। आप एक दृढ़ निश्चयी व्यक्ति तभी कहे जा सकते हैं। जब आप विपरीत हालात में भी लक्ष्य की ओर बढ़ते रहें बाधाओं को पार करने पर ही कामयाबी हासिल होती है।

आपके आस-पास के लोग कभी-कभार आपके कार्यों को संदेह के नजर से देख सकते हैं। अगर आपको लगता है कि आपने ठीक समय पर उस चीज को क्लिक नहीं किया तो उसकी समीक्षा करो। अधिकांशतया आपको लोगों की आलोचना सुनते समय बहरा बन जाना चाहिए। जो ऐसा करके आपको पीछे की ओर खींचना चाहते हैं। दूसरों की बजाय स्वयं अपना आकलन ज्यादा उचित है। मैंने अपनी लिखी चीजें जब एक ऐसे मित्र को दिखाई जो अक्सर दूसरों का काम छपवाते रहते थे। उन्होंने मुझसे कहा कि लेखन आपके बस की बात नहीं, आप कुछ और कीजिए। लेकिन मैंने भी यह ठान लिया था कि मुझे किताब छपवानी ही है। प्रकाशक से मेरी बात तय हो गई और मैंने भाषागत सुधार की बात स्वीकार ली पर विचारों की पुनरावृत्ति न हो, ऐसा उनसे कहा। हालाँकि, मुझे इसके लिए काफी

इंतजार करना पड़ा। लेकिन उसके बाद से मैंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। यह मेरी पांचवीं किताब है। अगर मेरी किताबें कामयाब नहीं होती तो प्रकाशक कैसे उसे छाप रहे हैं। इतना ही नहीं वे उसे अनुवादित करके अन्य भाषाओं में भी छाप रहे हैं। अपनी गतिविधियों के प्रति दृढ़निश्चयी रहिए। फिर देखिए, सबकुछ आपकी योजना के अनुसार ही होगा।

6.2 वफादारी

अक्सर लोग किसी भी शब्द का अर्थ अपने मतलब और समय के हिसाब से अलग-अलग निकालते हैं लेकिन उस शब्द का वास्तविक अर्थ सदैव एक समान ही होता है। वफादारी किसी संस्था के लिए प्रति व्यक्ति की वह प्रतिबद्धता है जिसके लिए वह वेतन प्राप्त करता है। मान लें, आप किसी संस्थान में काम करते हैं और वह संस्थान बाजार मूल्य के हिसाब से आपको भुगतान करता है। अगर किसी समय किसी भी कारण से आप उस संस्थान से अलग हो जाते हैं तो आपको कभी भी उस संस्थान के खिलाफ नहीं बोलना चाहिए। ऐसा करना वफादारी या स्वामीभक्ति के खिलाफ माना जाता है। अगर आप ऐसा करते हैं तो माना जाएगा कि वर्तमान संस्थान के साथ भी आप का रवैया ऐसा ही रहेगा।

आपको अपनी ब्रांडिंग के प्रति सजग रहना होगा। एक इंसान जो दूसरों पर विश्वास नहीं कर सकता वह स्वयं के प्रति भी विश्वास कायम नहीं रख सकता है।

मैंने शहर के एक नामी संस्थान से इस्तीफा देकर उसी शहर के दूसरे संस्थान में ज्वाइन किया। मेरा लक्ष्य संस्था को एक नाम दिलाना था। तीन साल के भीतर मैं अपनी टीम के साथ इस मुकाम पर पहुंच गया कि हमने संस्थान को शहर के पांच प्रमुख संस्थानों में शुमार कर दिया। अच्छे कर्मचारियों के निष्ठा व लगन से किये गये कार्य का नतीजा था कि हम इस उपलब्धि को हासिल कर पाए। इसी बीच मेरे पूर्व संस्थान में लोगों ने उसके प्रबंधकीय व प्रशासन विभाग के खिलाफ अभियान चला रखा था। वास्तव में, जहां मैं पहले था वहां हर तीन साल पर चुनाव होता था। चूंकि वह संस्थान सोसाइटी द्वारा चलाया जाता था। दो समूह के लोग बारी-बारी से पावर में आते थे। मुझे कुछ आपत्तिजनक चीजों के बारे में बताया गया लेकिन मैंने उस पर कोई स्टेप लेने से मना कर दिया। आखिर कुछ सालों

का कार्यकाल है हमारा, तो उस दौरान हम एकदूसरे पर विश्वास रखकर काम करते रहे और दोस्तों की तरह ही अलग भी हुए।

अपने संस्थान से जाते समय कभी भी उसकी आलोचना नहीं करनी चाहिए। ऐसा केवल नेता ही कर सकते हैं। टिकट न मिलने पर वे दूसरी पार्टी ज्वाइन कर लेते हैं और पूर्व की पार्टी को अमानवीय करार देते हैं व नई को मानवीय। आप जहां भी रहें, उस संस्था या व्यक्ति के लिए वफादारी का भाव दर्शाना जरूरी है, अन्यथा कोई भी आप पर विश्वास नहीं करेगा।

एक कंपनी एकजीक्यूटिव के पास दो पालतू कुत्ते थे। जब वह उन्हें घर लाया था तो वे दोनों एक महीने के थे। वे साथ-साथ पले-बढ़े लेकिन उनकी आदतें अलग-तरह की थीं। एकजीक्यूटिव के दफ्तर से लौटने पर पहला कुत्ता उससे लिपटकर प्यार जताता लेकिन दूसरा कोने में ही बैठा रहता था। एक दिन मालिक के घर आते ही शाम को दूसरा कुत्ता उससे आकर प्यार जताने लगा तो एकजीक्यूटिव कुछ समझ न सका। उसकी पत्नी ने बताया कि पहले कुत्ते के साथ कोई दुर्घटना हो गई है।

एक सप्ताह में पहला कुत्ता ठीक हो गया और मालिक के प्रति प्यार जताने लगा। एक दिन मालिक शाम को दफ्तर से घर आया तो पहले कुत्ते को अकेले प्यार जताने की आदत थी, तो वह थोड़ा व्यथित होकर मालिक को काटने को दौड़ा। इतने में दूसरा कुत्ता जो अब तक चुपचाप बैठा हुआ था, आकर उससे लड़ने लगा।

स्वामीभक्ति का स्वभाव केवल मनुष्यों में ही नहीं, जानवरों में भी होता है और समय आने पर वे इसे साबित भी करना चाहते हैं। हम जानवर तो पालते हैं पर उनसे कोई सीख नहीं लेते। हम समझते हैं कि स्वामीभक्ति दर्शाना कमजोरों का स्वभाव होता है हम समझते हैं कि ऐसे आदमी परिवर्तन नहीं ला सकते। जबकि संस्थान में ऐसे लोगों को पुरस्कार देना होगा जो संस्थान के प्रति समर्पित होते हैं, भले ही वे ज्यादा काम न करें पर इससे जनता में संस्थान की अच्छी छवि बनती है।

अगर आप ईमानदार नहीं हैं तो आप अपने इर्द-गिर्द के ऐसे लोगों को अपने साथ नहीं जोड़ सकते। स्वयं के प्रति ईमानदार बनने पर ही आप अपनी मजबूती व कमजोरियों को पूरी तरह से समझ पाएंगे। बिना ईमानदार बने आप

सही तरीके से अपनी शक्ति, कमजोरी, अवसरों और चुनौतियों का आकलन नहीं कर सकते। अन्यथा आप स्वयं को सही तौर पर नहीं समझ पाएंगे।

ऐसा व्यक्ति ही वास्तव में समझ पाता है और अपनी असफलता का ईमानदारी से आकलन करके उसे दोबारा नहीं दोहराते। असफलता का दोहराव तब होता है जब हम अपनी क्षमता नहीं समझ पाते। इस धरती पर हम अपनी सार्थकता साबित करने के लिए ही आए हैं। लेकिन हममें से कुछ लोग ही उसे साबित कर पाते हैं। हम अपनी क्षमताओं को जानकर भी कई बार सही तरीके से अपने लक्ष्य की ओर नहीं बढ़ पाते। यह सच है कि हर आदमी सबकुछ हासिल नहीं कर सकता, क्योंकि सबकी कार्य करने की योग्यता और क्षमता अलग-अलग होती है।

स्वामीभक्ति कुछ खास लोगों की विशेषता होती है। कुछ समय पहले आपने अखबारों में पढ़ा होगा कि हमारे देश के एक प्रतिष्ठित वैज्ञानिक ने 'पोखरण टेस्ट' को असफल करार दिया है और वह भी इन हालात में जब हमें पड़ोसी देशों से चुनौती मिल रही है। मैं इस मामले की तह में नहीं जाना चाहता लेकिन अपनी 60 साल की सेवा के बाद सेवा विस्तार न मिलने पर वह व्यक्ति देश की रक्षा व्यवस्था पर ऐसी टिप्पणी करता है। ऐसा केवल भारत में ही हो सकता है अन्यथा दूसरे देशों में खासकर हमारे ही एक निकटतम पड़ोसी देश में अगर ऐसा होता तो वह आदमी अगले दिन का सूरज नहीं देख पाता। मुझे अब तक यह समझ में नहीं आ रहा कि इस टिप्पणी से उसे क्या हासिल हुआ होगा। एक ऐसा व्यक्ति जो अपनी जन्मभूमि के प्रति निष्ठा नहीं रखता हो वह अपने परिवार के लिए निष्ठावान नहीं हो सकता। हर आदमी को कम से कम अपने देश के प्रति तो राष्ट्रभक्त होना ही चाहिए।

6.3 आपसी सहयोग की भावना

समुद्र में क्रेब प्रजाति का एक जीव पाया जाता है, जिसे 'हरमित क्रेब' कहा जाता है। क्रेब अपने भोजन का इंतजाम स्वयं से नहीं कर पाते। समुद्र में एक दूसरा जीव पाया जाता है जिसका नाम है 'एडमेशिया'। यह हिल-डुल नहीं पाता। इसलिए यह भी खुद से खाने का इंतजाम नहीं कर पाता। हरमित क्रेब एडमेशिया को अपना सहारा देता है और वह भोजन का इंतजाम करता है। जिससे दोनों की जिंदगी कटती है। कैसा प्राकृतिक

गठजोड़ है यह! एक दूसरे के सहयोग से दोनों अपना जीवन यापन करते हैं। आपने आदमियों में इस तरह का संगठन देखा है? मुझे तो नहीं लगता। इससे हमें यह संदेश मिलता है कि लक्ष्य निर्धारण में हमें एक-दूसरे की मदद करनी चाहिए।

कामयाबी की दौड़ में हजारों लोग शामिल होते हैं। लेकिन कुछ लोगों को यह हासिल हो पाती है। एकदूसरे की मदद करने और लेने से मंजिल तय करना आसान हो जाता है। आप ईमानदारी से अपनी मंजिल तय करते हैं और दूसरे भी उसी तरह आसानी से अपनी मंजिल तय करने में सक्षम हो सकते हैं। दूसरों को इतना समय नहीं कि वे आपकी राह में बाधा खड़ी कर सकें।

आपने कई लोगों के मुंह से सुना होगा कि शिखर पर पहुंचने के बाद सीढ़ी को हटा देना चाहिए ताकि कोई दूसरा वहां तक न पहुंच सके। यह उचित व ईमानदार विचार नहीं है। हर आदमी को कामयाब होने का अवसर मिलना चाहिए। दूसरों की कामयाबी की भी आपको दुआ करनी चाहिए। यह एक मानवीय दौड़ है, न कि चूहा दौड़। याद रखिए कि दौड़ में जीतने के बाद भी चूहा, चूहा ही रहता है। आप चूहा क्यों बनना चाहते हैं?

इस धरती पर जन्म लेने वाला कोई भी व्यक्ति अक्षम नहीं होता। जब वह कुछ करता है तो कई बार लोग उस पर ध्यान देते हैं, तो कई बार नहीं भी देते। आगे दी जा रही कहानी द्वारा आप इसे बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। इस कहानी में यह बताया गया है कि आप अपनी ऊर्जा को सकारात्मक रूप से उपयोग में लाते हैं तो वह कभी व्यर्थ नहीं जाती।

उड़ीसा में एक कोल आदिवासी एक डंडे में दो बड़े बर्तनों को बांधकर गांव से दूर बहते झरने से अपने कंधों पर पानी लाता था। उसमें से एक बर्तन में छोटा सा छेद था। उस बर्तन में वह पानी भरता तो पूरा था, पर मालिक के घर तक पहुंचते-पहुंचते उसका आधा पानी रास्ते में टपक-टपक कर गिर जाता था। आधा पानी ही घर तक आता था। दो साल तक यह सिलसिला चलता रहा।

उस लीक हुए बर्तन को खुद पर बड़ा दुःख होता था कि मेरी वजह से इसका आधा पानी रास्ते में टपक जाता है। एक दिन उस बर्तन ने कोल से इसके लिए क्षमा मांगते हुए कहा, 'मैं बहुत दुःखी हूँ।' कोल ने पूछा, 'क्यों दुःखी हो?'

बर्तन ने जवाब दिया। 'पिछले दो साल से तुम पानी तो भर कर ला रहे हो पर आधा पानी रास्ते में ही टपक जाता है, जिससे तुम्हारा इतना परिश्रम व्यर्थ हो जाता है।'

कोल ने कहा, 'कोई बात नहीं, शायद तुमने गौर नहीं किया होगा। जिस रास्ते से आते वक्त तुम्हारा पानी टपकता है, उसके किनारे मैंने फूलों के बीज बोए थे। मैं तुम्हें हर दिन एक ही कंधे पर रखता हूँ। उस पानी के टपकने से फूलों के पौधे बड़े हो गए हैं। अब मैं उन पौधों से हर रोज फूल लाकर मालिक को दे रहा हूँ। मैं जानता था कि तुम्हारा पानी टपकता है, इसीलिए मैंने ऐसा किया था।'

आप अपनी जानकारी के मुताबिक सदैव ही कम से कम गलतियां करना चाहते हैं। सफलता पाने के लिए इस किताब में दी गई सलाह से आप अपने अनुसार ढूँढ़ कर आगे बढ़ सकते हैं। आपको अपने लक्ष्य को हासिल करने के दौरान मिलने वाले किसी भी मौके को नहीं छोड़ना चाहिए।

आपने सम्राट अकबर की वो कहानी जरूर सुनी होगी, जिसमें उन्होंने जमीन पर एक रेखा खींच कर कहा कि बिना कोई छेड़छाड़ किए इस रेखा को कैसे छोटा किया जा सकता है हर व्यक्ति असफल हो गया लेकिन बीरबल ऐसा करने में सफल रहा। उसने कुछ खास नहीं किया बस उस रेखा की बगल में एक बड़ी रेखा खींच दी। आप जो भी समय या ऊर्जा खर्च करते हैं उसे हमेशा सकारात्मक दिशा में ही खर्चें।

स्वयं में बहुत-सी कमियों के बावजूद अगर मैं स्वयं से प्रेम कर सकता हूँ तो फिर दूसरों में थोड़ी बहुत कमियों की वजह से उनसे घृणा कैसे कर सकता हूँ - स्वामी विवेकानंद

अपने आस-पास घटित नकारात्मक चीजों को आप मत देखिए। यह आपके व्यक्तित्व को प्रभावित करता है और इस पर सोच-विचार करने में आपकी कीमती ऊर्जा नष्ट होगी। कभी-कभी मन में नकारात्मक विचार आने पर उसकी प्रतिक्रिया बढ़ती जाती है। एक बार अगर आपके मन में नकारात्मक विचार पैदा हो जाएंगे तो फिर उसका चक्र बार-बार मन में चलता रहेगा।

हमें दूसरों की भावनाओं व उपलब्धियों को निश्चित रूप से देखना चाहिए। ऐसा करने से हम कुछ खोने की बजाय कुछ हासिल ही करते हैं। इससे हमारे अंदर स्वयं में सुधार करने की ललक पैदा होती है। स्वयं को एक ब्रांड के तौर पर स्थापित कीजिए। कामयाब आदमी हर समय लोगों से हंस कर मिलते हैं और कोई भी आलोचना उन्हें विचलित नहीं करती। क्योंकि वे अपनी क्षमताओं पर विश्वास करते हैं और जानते हैं कि एक न एक दिन वे जरूर विजेता बनेंगे।

6.4 परिवर्तन

परिवर्तन जीवन एक मसाला है, उसका स्वाद है। यह एक प्राकृतिक प्रक्रिया है और यह होता रहता है, आप चाहें या न चाहें। कल रात को टीवी के चैनल बदलते समय अचानक मेरी नजर 'स्टार वन' के एक कार्यक्रम 'द परफैक्ट ब्राइड' पर पड़ी। मैं टीवी तो अक्सर ही देखता हूँ पर ज्यादातर न्यूज चैनल्स ही देखता हूँ। जिस कार्यक्रम की यहां मैं चर्चा कर रहा हूँ। उसने मेरी आंखें खोल दीं। मुझे इस पर टिप्पणी का कोई अधिकार नहीं लेकिन व्यक्तिगत तौर पर एक चीज जो मैंने महसूस की वह है उसमें होने वाला परिवर्तन। चूंकि ऐसे कार्यक्रमों को मैं पसंद नहीं करता। इसलिए मैं उन पर पाबंदी लगाने की बात करता था।

दरअसल, उसमें कोई योजनाबद्ध परिवर्तन नहीं था। योजनाबद्ध तरीके से किए जाने वाले परिवर्तनों के पीछे कोई उद्देश्य छिपा होता है। रिवाजों में परिवर्तन कष्टप्रद और सामाजिक नियमों के खिलाफ माना जाता है। इस तरह के परिवर्तनों को पचाना थोड़ा मुश्किल होता है।

हम परिवर्तन को इसलिए रोकना चाहते हैं क्योंकि हम सोचते हैं कि वर्तमान परिस्थिति ही आरामदायक है। घरों में भी हम देखते हैं कि पुरुषों को तो परिवर्तन करने का (नियम भंग का) अधिकार होता है, लेकिन महिलाओं को नहीं होता।

एक बार एक घर में पति व पत्नी में कुछ नोकझोंक हो गई। वे दोनों मौन रहने लगे। अगली सुबह पति को पांच बजे उठना था। उसने मौन को भंग नहीं करना चाहा। उसने एक कागज पर यह बात लिख दी। कृपया मुझे सुबह पांच बजे जगा देना और उसे उसके तकिए के नीचे रख दिया। सुबह जब वह उठा तो नौ बजे रहे थे। उसे कहीं जाना था और अब बहुत देर हो

चुकी थी। उसने अपनी पत्नी की ओर गुस्सा से देखा और तभी उसे बेड पर एक कागज पड़ा हुआ मिला। उस कागज पर उसकी पत्नी ने लिख कर रख दिया था, “पांच बज गए हैं, उठ जाइए।”

जिंदगी बदलते हुए मौसमों की तरह है। आप मौसम को नहीं बदल सकते लेकिन आप खुद को बदल सकते हैं।

भले ही आप परिवर्तन चाहते हों या न चाहते हों लेकिन आपको इसे स्वीकार करना पड़ता है। आप समय के अनुसार खुद को परिवर्तित नहीं करेंगे और उसका प्रतिरोध करेंगे तो भी बाहरी ताकतें जरूर आपको परिवर्तित करने का प्रयास करेंगी। शुरुआती दौर में किसी परिवर्तित चीज को समझना आसान होता है। ऐसा नजरिया रखने पर आने वाले दिनों में आप और ज्यादा कामयाबी की ओर बढ़ सकते हैं।

हम ऐसा मानते हैं कि केवल कमजोर इंसान ही परिवर्तन को तेजी से अपनाते हैं लेकिन हकीकत इसके विपरीत है।

मजबूत इरादों वाला इंसान परिवर्तन को जल्दी अपनाता है, बजाय कमजोर इंसान के। प्रारंभ में तो परिवर्तन कष्टकारी होता है, लेकिन बाद में इससे काफी आसानी होती है। ज्यादातर समय हम अपनी ऊर्जा को यही सोचने में नष्ट करते हैं कि नई परिस्थितियों में अगर हम खुद को नहीं ढाल पाए तो कहीं हम असफल न हो जाएं।

यहां तक कि लक्ष्य हासिल करने के बाद भी यदि हम बदली परिस्थितियों के अनुरूप खुद को ढालेंगे तो उससे हमें ही फायदा होगा। हमें परिवर्तन को स्वीकार करना चाहिए। कई बार बदले माहौल में ढलने के लिए हमें कठिन परिश्रम की भी जरूरत पड़ती है।

बदलाव से जूझने में शिक्षा सबसे बड़ा हथियार है, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि केवल शिक्षित व्यक्ति ही बदलाव को आसानी से अपना सकते हैं। स्वयं को अपडेट रखिए ताकि होने वाले बदलावों को आप आसानी से समझ सकें। ऐसा करने से हमें बदलाव को महसूस करने में आसानी होगी, जिससे हम बेहतर नतीजे हासिल कर सकते हैं।

आधुनिक साधनों के उपयोग से आपके जीवन की राह आसान होगी और ये आपके लक्ष्य प्राप्ति में सहायक होंगे। आप बिना इन साधनों के इस्तेमाल के कामयाब नहीं हो पाएंगे। एक बार आपने विजेता बनना ठान लिया तो फिर बेहतर

यही है कि आप आलोचनाओं में अपनी ऊर्जा खपाने की बजाय इस तरह के परिवर्तनों को आगे बढ़कर स्वीकार करें। स्वयं को इन बदलावों में ढालने के लिए मानसिक रूप से तैयार करें। एक बार इन्हें अपना लेने पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तौर पर वह आपको मंजिल तय करने में मददगार साबित होगा।

6.5 क्रियाएं

स्वाभाविक तौर पर मनुष्य कार्योमुखी होता है। यही कारण है कि बॉलीवुड की एक्शन फिल्में ज्यादा लोकप्रिय रही हैं। अपने लक्ष्य के प्रति स्पष्ट कार्योन्मुख हुए बिना आप कामयाब नहीं हो सकते। कामयाबी पाने के लिए आपका पहला कदम यह होना चाहिए कि अपनी क्षमताओं को जानकर अपने माहौल के मुताबिक योजनाबद्ध ढंग से एक्शन प्लान बनाकर लक्ष्य का निर्धारण करें। इनमें से किसी भी चीज की अनदेखी होने पर लक्ष्य तक पहुंचने के लिए आपको ज्यादा ऊर्जा लगानी पड़ेगी।

एक कामयाब इंसान के लिए स्पष्ट कार्य योजना का होना बुनियादी जरूरत है। आप अपनी योजनाओं को निर्धारित अंतराल पर नहीं बदल सकते; इससे आपके विचारों व क्रियात्मकता में बाधा पैदा हो सकती है।

एक युवा और सफल मैनेजर अपने घर के समीप वाली सड़क से कार द्वारा तेजी से गुजर रहा था कि उसने एक बच्चे को वहां खड़ा पाया। इतने में उसकी कार पर एक पत्थर आकर लगा। पत्थर से कार को नुकसान पहुंचा और उसने कार वहीं रोक दी। नीचे उतरकर वह आदमी उस बच्चे को डांटने पहुंचा। क्रोध में उसने बच्चे से कहा। “तुमने कार का कितना नुकसान किया, पता है तुम्हें?” बच्चे ने उससे विनती की, “प्लीज, सर... मैं माफी चाहता हूं लेकिन कोई उपाय न देख मुझे ऐसा करना पड़ा। कोई यहां रुक नहीं रहा था। इसलिए मैंने ऐसा किया।” उस बच्चे की आंखों से आंसू छलकने लगे। वह बोला, “पास में मेरा विकलांग भाई अपने व्हीलचेयर से गिर पड़ा है। मैं उसे चेयर पर नहीं बैठा पा रहा हूं। वह गिरा पड़ा है। प्लीज, आप मेरी थोड़ी मदद कर दें।”

इतना सुनने के बाद वह कार वाला युवक शांत हो गया और उस विकलांग बच्चे को उठाकर व्हीलचेयर पर बैठा दिया। फिर अपनी जेब

से रूमाल निकाल उसके जख्मों को साफ किया। बिना कुछ बोले उस बच्चे को उसके घर तक छोड़ आया।

इस जगह कोई दूसरा आदमी भी होता तो वह भी यही करता, जो उसने किया। उसके योजनाबद्ध कार्य में बाधा आने पर जिस तरह की प्रतिक्रिया शुरू में उसने की, वैसा ही दूसरे भी करते। आपको अपनी तय योजना को निश्चित तौर पर जारी रखना चाहिए लेकिन आपातकालीन अवस्था में आपको रुकना होगा।

अपने प्रोजेक्ट पर काम करने के दौरान एक बार एक इंटरनेशनल स्कूल के लिए महज दो-तीन दिन में एक रिपोर्ट तैयार करने को मुझे कहा गया। मेरे साथ थोड़ा खराब वक्त चल रहा था, मेरी पत्नी गंभीर रूप से बीमार थी। मेरी बेटी को भी उस समय मेरी विशेष जरूरत थी। जिस आदमी ने मुझे वह प्रोजेक्ट करने को दिया था उसे मेरे हालात के बारे में उस समय पता था और यह भी पता था कि प्रोजेक्ट में कितना समय लग सकता है। लेकिन मैंने तय वक्त में प्रोजेक्ट पूरा कर दिया। जब मैं उसे जमा कराने गया तो मैं यह जानकर हैरान रह गया कि मुझे अभी एक हफ्ते का इंतजार करना होगा क्योंकि बाँस अभी किसी दूसरे कार्य में व्यस्त हैं।

मैं काफी व्यथित हो गया और मुझे लगा कि मेरी क्षमताओं को परखने के लिए ही शायद ऐसा किया गया है कि मैं समय पर चुनौती-भरे प्रोजेक्ट को पूरा कर पाऊंगा या नहीं। कामयाब इंसान कभी भी काम को टालता नहीं है। किसी भी व्यक्ति की क्षमता को महज परखने के लिए कोई चुनौती नहीं दी जानी चाहिए। अन्यथा एक समय के पश्चात् ऐसा होता है कि वह व्यक्ति दी गई चुनौती को गंभीरता से नहीं लेता है। यह बिल्कुल वैसा ही है जैसा भेड़िए की कहानी है कि भेड़िया आया... भेड़िया आया... और जब वाकई में भेड़िया आ गया तो कोई भी गडरिये को बचाने आगे नहीं आया। लोगों ने सोचा कि हो सकता है वह आज भी पहले की तरह ही झूठ बोल रहा हो और किसी ने उस पर ध्यान ही नहीं दिया।

कभी भी परखने के ख्याल से किसी को नहीं जांचना चाहिए। कोई भी व्यक्ति या परिस्थिति बुरी नहीं होती। यह आपकी गलती है कि आप उस व्यक्ति या परिस्थिति का सही आकलन नहीं कर पाते। एक कामयाब इंसान अपनी कार्य योजना के मुताबिक परिस्थितियों को उपयोग में लाता है और

ऐसे ही लोगों में यह क्षमता होती है कि विपरीत हालात को भी वे अपनी अनुकूल बना लेते हैं।

बुरी से बुरी स्थिति में भी कुछ सकारात्मक जरूर होता है। यहां तक कि एक बंद पड़ी हुई घड़ी भी दिन में कम से कम दो बार सही समय दर्शाती है। ●

अध्याय-7

सफलता के लक्षण

सफलता एक बहुत ही निजी खेल की तरह है, जैसे हर खेल में प्रत्येक खिलाड़ी में एक खास हुनर होता है ठीक उसी तरह यहां भी है। सफलता हुनर के प्रति आवेग न होकर इंसान का जुनून है। कोई ऐसा नहीं कह सकता कि कामयाब होने के लिए आपमें निम्नांकित गुण होने जरूरी हैं। आपको इस तरह के ढेरों उदाहरण आस-पास मिल जाएंगे। मेरे लिए कामयाबी का मतलब है समाज में अपनी उपस्थिति दर्ज कराना। एक बार लोगों ने आपकी नकल या आलोचना शुरू कर दी तो जान जाइए कि आप कामयाब इंसान हैं।

आप कह सकते हैं कि आतंकवादी भी समाज में अपनी उपस्थिति दर्ज कराना चाहते हैं। हां, कौन कहता है कि वे कामयाब नहीं? हर स्थिति के दो पहलू होते हैं-सकारात्मक और नकारात्मक। नकारात्मक चीजें भी किसी स्थिति में उतनी ही महत्ता रखती हैं जितनी कि सकारात्मक। अगर रावण नहीं होता तो राम को कौन याद करता? अगर आप प्रकाश को नहीं देख पाते तो अंधेरे की बुराई नहीं करते। बिना असफलता के कामयाबी का कोई मतलब नहीं।

एक बार कहीं जाते समय एक व्यक्ति को रास्ते में एक दैत्य मिल गया। वह दैत्य उस व्यक्ति के घर में उसके साथ रहना चाहता था। पहले तो वह थोड़ा डर गया लेकिन दैत्य ने आश्वासन दिया कि वह उसे किसी तरह का कोई नुकसान नहीं पहुंचाएगा। लेकिन उसके साथ एक समस्या है कि वह कभी बैठा नहीं रह सकता। उसे हमेशा कोई काम चाहिए और उसके लिए दुनिया का कोई भी काम करना मुश्किल नहीं है। उस आदमी ने एक मिनट सोचने के बाद हामी भर दी और दैत्य को अपने साथ ले गया।

घर लौटकर उसने सोचा कि दैत्य को ढेर सारे कामों में उलझा देगा। जैसे ही वे घर पहुंचे, दैत्य ने काम मांगा। दैत्य को व्यस्त रखने के लिए आदमी ने एक बड़ा गड्ढा खोदने को कहा, जो उसने पलक झपकते ही खोद दिया। आदमी सोच रहा था कि जब तक वह गड्ढा खोदेगा तब तक वह अपने बहुत से दैनिक कार्य निबटा लेगा। लेकिन वह दैत्य को काम करता देख हैरान रह गया। अगले आधे घंटे तक वह दैत्य को कुछ न कुछ काम देता रहा, जिसे वह पलक झपकते ही निबटा देता।

अब दैत्य उस आदमी के सिर पर काम माँगने के लिए सवार हो गया और धमकी दी कि काम नहीं दिया तो वह उसे ही मार देगा। उस व्यक्ति की बेटी यह सब घटनाक्रम देख रही थी। उसने पिता को आश्वस्त किया और कहा कि घबराने की कोई जरूरत नहीं है इस दैत्य को काम में उलझाए रखने की एक बहुत अच्छी योजना मेरे पास है।

उसकी बेटी ने दैत्य से कहा कि एक बांस लेकर आओ और उसे जमीन के सहारे टिकाकर खड़ा करो। दैत्य ने उसकी बात मानते हुए काम कर दिया और फिर अगला काम माँगने आ गया। बेटी ने दैत्य से कहा कि जाओ और जब तक तुम्हें अगले काम का आदेश न मिले, तब तक उस बांस पर चढ़ो, फिर उतरो चढ़ो और उतरो। इस प्रकार दोनों बाप-बेटी उसके चंगुल से मुक्त हो गए।

कामयाब लोगों में उपरोक्त कहानी के दैत्य की तरह ही विशेषता होती है। सफल लोग मरते दम तक अपनी कुछ विशेषताओं का त्याग नहीं करते। वे काम के बिना जिंदा नहीं रह सकते। ऐसे लोग परिश्रमी होते हैं और हमेशा अपने लक्ष्य को जल्द से जल्द से हासिल करने की कोशिश में रहते हैं। यह भी सच है कि एक लक्ष्य को तय कर लेने के बाद वे दूसरा लक्ष्य निर्धारित कर लेते हैं।

जैसा कि पहले ही कहा गया है कि सफलता को विस्तृत रूप से तीन श्रेणियों में रखा गया है। स्वयं से हासिल हुई सफलता। अपने आस-पास के लोगों के माध्यम से हासिल सफलता और तीसरी सफलता ऐसी है, जिसमें पहली और दूसरी का संयोजन हो। हर श्रेणी के लिए अलग तरह के पैरामीटर हैं। आप किसी एक की कामयाबी की

तुलना दूसरे व्यक्ति की कामयाबी से नहीं कर सकते हैं। भले ही उनमें बहुत-सी समानताएं क्यों न हों।

पिछले अध्यायों में हमने सफलता के लिए जरूरी गुणों पर चर्चा की, इस अध्याय में हम सफलता के मूलभूत गुणों पर चर्चा करेंगे। एक बात का आपको यहां ध्यान रखना होगा कि हम जिन गुणों की चर्चा करेंगे वह सीखने की प्रक्रिया से आते हैं। सीखने का गुण वह है जिसे हम नियमित अभ्यास से धीरे-धीरे हासिल करते हैं। इसका मतलब होता है कि आपमें कोई खासियत नहीं है, तो भी आप सफलता की इस दौड़ से इतर नहीं हैं। इसके लिए आप अपनी गुणवत्ता का आकलन करिए कि जो आपमें नहीं है, उसे सतत अभ्यास से कैसे हासिल किया जाए।

अधिकतर गुण आप आसानी से सीख सकते हैं। बस, हमारे भीतर ललक होनी चाहिए। मैं आपकी प्रतिबद्धता पर संदेह नहीं कर रहा, क्योंकि अगर ऐसा होता तो आपके हाथ में यह किताब नहीं होती। यह साबित करता है कि आप अपने विचारों और कार्यों की दूरी को कम करना चाहते हैं। अब हम कामयाब लोगों के मूलभूत गुणों की चर्चा करते हैं।

7.1 समय की कीमत

सफलता का यह एक महत्वपूर्ण आधार स्तंभ है। हम बचपन से ही सुनते आ रहे हैं कि समय बड़ा कीमती होता है और इसकी कद्र करनी चाहिए लेकिन वास्तव में हम ऐसा कर नहीं पाते। बहुत-सी चीजों को हम जानते हुए, उनका मूल्य समझते भी नहीं कर पाते हैं। कई बार हम किसी आइडिया पर सोचते तो कई दिनों तक हैं, पर उसे अमल में नहीं लाते।

अधिकतर किसी कार्य के लगभग आधा हो जाने पर हमें महसूस होता है कि यह बेकार है और हम उसे छोड़ देते हैं, जिससे हमारे वक्त की बर्बादी होती है। हम समय की कीमत भूल जाते हैं।

मेरे ट्रेनिंग सत्र के शुरुआती दौर में लोग 30-40 मिनट देरी से आते थे। इनमें से ज्यादातर वरिष्ठ फैकल्टी मेम्बर और शासकीय अधिकारी थे, जो अक्सर समय की कमी बताते थे। हमारे देश में समय से आने वालों की कद्र नहीं होती। देरी से आने वाले सोचते हैं कि वे महत्वपूर्ण हैं। मैंने उनको समय पर आने की सलाह दी पर नतीजा सिफर रहा। यह उतना आसान नहीं था, समय की सख्ती के चलते मुझे कई बार अपना बिजनेस खोना पड़ा था।

मैंने अपने परिवार में समय पालन का सख्त निर्देश जारी कर रखा है। हम अपने घर आने वाले मेहमानों से भी यही अपेक्षा करते हैं। हम उन्हें स्पष्ट कहते हैं कि देरी से आने पर खाना आपको अकेले खाना पड़ सकता है। इस सख्ती के बावजूद सभी लोग न सही पर हमारे कुछ नजदीकी मित्र इस बात पर अमल करते हैं।

महान कार्य हमेशा समय की कद्र करने से ही संभव होते हैं। हर काम समय पर करने से आप समय के गुलाम तो जरूर होंगे लेकिन आप समय की कीमत समझ जाएंगे। एक साधारण कहावत है कि समय को खोना जिंदगी को खोने के समान है। मेरे साथ काम करने वाले लोग समय की कद्र करना सीख जाते हैं। कई बार मैं उनकी परेशानियों को समझ नहीं पाता तो मैं उन्हें बताता हूँ कि एक समय में हाथ में ढेरों काम होने के बावजूद भी मैं कभी लेट नहीं होता।

समय=जिंदगी; इसलिए, समय व्यर्थ गंवाओगे तो जिंदगी को व्यर्थ गंवाओगे, या समय के मालिक बने तो जिंदगी के मालिक बनोगे।

अगर एक बार आप प्रतिबद्ध हो गए तो समय की कीमत को आकना आप सीख जाएंगे। इसमें प्रमुख चीज कार्यों को योजनाबद्ध तरीके से करना है। ऑफिस में देर तक बैठने वाले लोग दो तरह के होते हैं। एक तो वे जिन्हें यह नहीं पता होता कि उन्हें करना क्या है और दूसरे वे जिन्हें यह नहीं पता कि जिस के लिए वे यहां हैं, वह उन्हें कैसे करना है। आज तक मैं अपने ऑफिस में एक निश्चित अवधि से ज्यादा कभी भी नहीं बैठा। समय की कद्र करके ही मैंने अपनी एक किताब 'व्हाट इफ यू डार्ड टुमारो?' लिखने में कामयाबी पाई। मैं आपसे वह किताब पढ़ने का आग्रह करूंगा।

एक बार याद रखिए कि अगर आप करना नहीं चाहेंगे तो दूसरा जबरदस्ती काम नहीं करा सकता। हर कामयाब कहानी में समय सबसे महत्वपूर्ण फैक्टर होता है। रेस के दौरान समय ही वह फैक्टर है जो किसी को विजेता बनाता है। अन्यथा अंतिम बिंदु तक पहुंचने की क्षमता हर प्रतिभागी में होती है। कहा जाता है कि समय और तरंग किसी का इंतजार नहीं करते। समय पर काम निबटाने वाले लोग हमेशा फायदे में

रहते हैं। यह आपकी कार्य के प्रति दिलचस्पी ही होती है कि जो आपने सोचा उसे आप कितनी जल्दी अमल में लाते हैं। अवसर आपके पास आकर दस्तक दे यह जरूरी नहीं, लेकिन अगर ऐसा नहीं होता तो आप उसकी प्रतीक्षा न करें।

7.2 सफलता का अध्यवसाय

हम मानते हैं कि किसी भी क्षेत्र में नियमित परिश्रम करने से परिणाम अच्छे आते हैं लेकिन जैसे ही उसमें कोई कठिन मोड़ आता है तो हम अपने कदम वापस खींच लेते हैं। हमें पुरानी कहावतों पर भी ध्यान देना चाहिए। जरूरी नहीं कि जिन परिस्थितियों ने किसी आदमी को कामयाब बनाया वैसी परिस्थितियां आपको भी कामयाब बनाएं; या जिन हालात ने किसी को असफलता के गर्त में पहुंचाया है तो, यदि आप भी उस राह पर आगे बढ़ें तो आप भी असफल होंगे।

अध्यवसाय एक दृढ़ कदम है, जिसमें आप अपनी पूरी ताकत व क्षमताओं को झोंक देते हैं। सामान्य अर्थों में, बिना रुके लगातार कार्यरत रहना ही अध्यवसाय है।

समान मेहनत के बावजूद हर आदमी को उसका नतीजा एक समान नहीं मिल पाता। कुछ ही लोग इच्छित परिणाम मिलने तक अपने लक्ष्य की ओर कदम बढ़ाते रहते हैं। अगर हम दृढ़निश्चयी होकर कार्य जारी रखें तो निश्चित ही मंजिल हासिल होगी।

ठंडे दिमाग से सोचकर आगे बढ़ने पर ही आप अपना सटीक मूल्यांकन कर सकते हैं। अगर हम छोटी-छोटी समस्याओं को सुलझाने का स्टेमिना (शक्ति) खो देते हैं तो बड़ी समस्याओं को कैसे सुलझा पाएंगे। हमारा अंतिम उद्देश्य यही होना चाहिए कि हम वही योजना बनाएं, जिस पर अमल करना हमारे लिए संभव हो।

सफलता... एक परिणाम है, लक्ष्य नहीं।

हम अपनी प्रतिबद्धता के प्रति ज्यादा देर नहीं टिक पाते। ऐसा होना स्वाभाविक है। लेकिन नियमित अभ्यास से हम अपने कार्यों के प्रति प्रतिबद्ध हो सकते हैं। एक साथ कई काम हाथ में होने और उनका समय पर सही नतीजा न निकलने पर हम हताश हो जाते हैं, इसके लिए हमें यह पहले

जानना जरूरी हो जाता है कि किस काम को शीघ्र करना है और कौन-सा बाद में।

यह कोई अप्राकृतिक व्यवहार नहीं है, फिर भी हम बच्चों की तरह अपनी आदतें जाहिर करते हैं। एक बच्चा अपने पास कई खिलौने रखता है और उनमें से आप एक भी खिलौना निकाल लें तो वह रोने लगता है। एक काम खत्म होने पर हम भी यह नहीं समझ पाते कि प्राथमिकता के आधार पर अब हमें क्या करना चाहिए।

एक समय में कई कार्यों को मैनेज करना कामयाब व्यक्तियों की खासियत है लेकिन आपको मंजिल तय करते समय ऐसा नहीं करना चाहिए। अपने लिए निर्धारित मंजिल को आपको स्वयं अपनी दृढ़ता से तय करना है। आपको राह में कई बाधाएं मिलेंगी लेकिन आपकी दृढ़ता आपको भटकने नहीं देगी।

सोचने और करने में फर्क है। हम सोचते तो बहुत कुछ हैं लेकिन करते ज्यादातर वही है जो करना हमें अच्छा लगता है। अपने विचारों पर दूसरों को मत हावी होने दें। दूसरों की सलाह लेना अच्छी बात है लेकिन बिना आकलन के उसे अपना मूर्खता है। दूसरों की नकल करने से कामयाबी हासिल न होने के पीछे अध्यवसाय का ही अभाव है। वे अपने कार्य के प्रति समर्पित होते हैं पर सफल नहीं हो पाते।

7.3 कार्य का आनंद

काम करना मनुष्य की नियति है और बिना काम के कोई आदमी सामान्य जिंदगी नहीं जी सकता। हम केवल अपनी जरूरतों को ही पूरा करने के लिए काम नहीं करते बल्कि स्वयं को उत्पादक और फिट रखने के लिए भी करते हैं। काम करने से हमें आनंद और संतुष्टि मिलने के साथ नए विचार मिलते हैं जिससे दिमाग ज्यादा उर्वर बनता है। काम का मतलब है समाज में कुछ योगदान करना।

हममें से कम ही लोग काम का मजा लेते हैं। ज्यादातर लोग काम को एक बोझ समझते हैं। ऐसे लोग महज अपने परिवार का भरण-पोषण के लिए काम करते हैं तथा सामाजिक उत्थान के कार्यों में अपना योगदान नहीं देते। वे नहीं जानते कि काम करने के दौरान कैसे उसका आनंद लिया जाए।

ऐसा तभी होता है जब हम अपनी पसंद का काम नहीं चुनते। हमें यह समझना होगा कि जब हम अपनी पसंद का काम नहीं चुन सकते तो जो

कर रहे हैं उसी में आनंद खोजें। हम अक्सर काम को बदलने की सोचते रहते हैं।

दुनिया में ऐसा कोई काम नहीं जिसमें हम अपनी योग्यता नहीं साबित कर सकें। ऐसे लोगों को मुंबई के डब्बावालों की कहानी पढ़नी चाहिए। वे अपने काम को इतने सलीके से करते हैं कि उसमें असफलता की गुंजाइश 0.01 प्रतिशत से भी कम रहती है, जबकि ज्यादातर उसमें अनपढ़ लोग ही हैं। वे अपने काम का मजा लेते हैं, इसलिए सफल हैं। उनकी वितरण प्रणाली को न केवल भारत बल्कि विदेशों में टॉप मैनेजमेंट संस्थानों में पढ़ाया जाता है। उन्होंने साबित कर दिखाया कि कोई भी काम छोटा नहीं होता है। आपको अपने आस-पास भी ऐसे कई उदाहरण मिल जाएंगे।

मैं कभी भी एक बार में दो प्रोजेक्ट हाथ में नहीं लेता। इससे मुझे उसे समझने और गुणवत्तायुक्त समय देने में आसानी होती है। लोग मुझसे पूछते हैं, तो मैं उन्हें कहता हूँ कि मैं पैसे से ज्यादा अपनी संतुष्टि और आनंद के लिए काम करता हूँ। पैसे के लिए काम करना और काम करते हुए उसका आनंद लेना, दो अलग चीजें हैं।

एक बार एक कारखाने का प्रबंधन निर्देशक (एम.डी.) कारखाने में श्रमिकों का निरीक्षण कर रहा था। उसने देखा कि दीवार के पास एक युवक आराम से खड़ा है। उसके पास जाकर उसने पूछा, “तुम्हें कितना वेतन मिलता है?”

वह युवक पहले तो थोड़ा हैरान हुआ कि ऐसा उससे क्यों पूछा जा रहा है। फिर उसने जवाब दिया, “दस हजार रुपए महीना, सर! लेकिन क्यों?” एम.डी. ने बिना उत्तर दिए अपनी जेब से तीस हजार रुपए निकाल उसे देते हुए कहा, “मैं यहां लोगों को काम करने के पैसे देता हूँ, खड़े होकर सुंदरता निहारने के लिए नहीं। ये लो तुम तीन महीने की सैलरी और दफा हो जाओ। यहां से...” वह युवक तेजी से वहां से खिसक लिया।

दूसरे कर्मचारियों को उसकी ओर आश्चर्य से देखते हुए पाकर एम.डी. ने गुस्से के साथ उन सभी को ताकीद की, कि इस कंपनी में हर आदमी के साथ यही नियम लागू होगा। फिर एम.डी. ने एक कर्मचारी से पूछा, “वह युवक कौन था, जिसे अभी बाहर किया है?”

जो जवाब उसे मिला उसे सुनकर वह हैरान रह गया, “वह पिज्जा डिलीवरी करने वाला लड़का था, सर!”

मैं नहीं जानता कि आप उस एम.डी. को किस कैटेगरी में रखेंगे पर इतना तय है कि ज्यादातर लोग यह समझ नहीं पाते कि वे क्या करने जा रहे हैं। मैंने खुद ट्रेनिंग, प्रोजेक्ट बनाने, एडमिनिस्ट्रेशन और शिक्षण आदि कई तरह के काम किए हैं लेकिन हर काम में मैंने आनंद खोज लिया था। मैंने कभी नहीं कहा कि मुझ पर काम का बोझ है। मुझे याद नहीं कि किसी काम को समय पर न कर पाने के लिए मैंने कभी क्षमा मांगी हो, जबकि मैं अक्सर अपनी पारिवारिक व पेशेगत जिम्मेदारियों के अलावा सामाजिक कार्यों में भी शामिल होता हूँ। ऐसा इसलिए क्योंकि मैं अपने काम का आनंद लेता हूँ और उसे पूरे दिल से करता हूँ।

अपने काम को पूरे दिल से करें तो सफलता आपके कदम चूमेंगी- प्रतिस्पर्धा बहुत थोड़ी है।

अपने काम का आनन्द लेना ही सफलता का मूलमंत्र है। आपको तब तक सफलता हासिल नहीं हो सकती जब तक आप अपने काम का आनंद नहीं लेंगे। जब आप जीवन में कुछ हासिल करेंगे तो आपके आस-पास के लोग आपको प्रेरित करेंगे, जिससे आपको लोगों से अलग होने का एहसास होगा। यही वजह है कि भारत के प्रसिद्ध प्रेरक प्रशिक्षक, शिव खेड़ा ने कहा कि विजेता कोई अलग काम नहीं करते लेकिन वे अलग तरीके से काम करते हैं।

अपने काम को एंज्वाय करने के लिए आपको उसके हिसाब से एडजस्ट होना होगा। कोई दूसरा आपको यह नहीं सिखा सकता। दूसरों की मदद का इंतजार भी न करें। अगर आपको सफल होना है व विजेता बनना है तो यह आपकी सोच यह होनी चाहिए कि आप सर्वोत्तम हैं। याद रखें कि हर काम में सर्वोत्तम किया जा सकता है।

7.4 सादगी का सम्मान

उदारीकरण, निजीकरण और ग्लोबलाइज़ेशन के दौर में आज हर आदमी स्कैनर के अंदर है। आप अपने लैपटॉप पर गूगल में अपना घर देख सकते हैं। इसने हमारी जिंदगी को और ज्यादा उलझा दिया है और हम इस बड़े बाजार

में खो-से गए हैं। सादगी और सहजता किसी सफल इंसान की बहुत बड़ी खासियत होती है। ज्यादातर लोग इसमें विश्वास करते हैं। दुनिया के धनी व्यक्ति वारेन बफे आज भी अपने पुराने घर में रहते हैं और पुरानी कार पर चलते हैं, जबकि वह करोड़ों रुपए हर साल दान करते हैं। बिल गेट्स ने अपने बेटे को डिजाइनर लैपटॉप का इस्तेमाल करने की अनुमति नहीं दी।

सादगी का मतलब कमजोरी से कतरई नहीं लगाया जा सकता बल्कि यह आपके चरित्र को और निष्ठा को दर्शाती है। सादा व सरल व्यक्ति न केवल अपने, बल्कि दूसरों के लिए भी आदर्श प्रस्तुत करता है। उसके आचरण से दूसरे भी प्रेरित होते हैं।

एक पुरुष व महिला एक खिड़की के पास बैठे थे। महिला उस पुरुष से बोली, “मैं तुमसे प्रेम करती हूँ। तुम दिखने में सुंदर हो, धनी हो और हमेशा अच्छे कपड़े पहनते हों।”

बदले में पुरुष ने भी कहा, “मैं भी तुमसे प्रेम करता हूँ। तुम बहुत खूबसूरत हो, ईश्वर ने फुरसत से बनाया है तुम्हें, तुम मेरे सपनों का संगीत हो।” महिला का चेहरा गुस्से से लाल हो गया। वह बोली, “कृपया, आप मुझे अकेला छोड़ दें। मैं कोई दृश्य नहीं जो आपके सपनों में आऊँ। मैं एक महिला हूँ और एक पत्नी की तरह आपसे प्रेम चाहती हूँ।” इसके बाद दोनों जुदा हो गए।

पुरुष ने स्वयं से कहा, “चलो, दूसरा सपना देखते हैं” महिला ने क्रोधित होते हुए कहा—“मैं ऐसे इंसान को पसंद नहीं करती जो मुझे सपनों और खूबसूरत दृश्य की तरह देखता हो।”

ज्यादा सरल और सादा होना भी मुसीबत पैदा करता है। इस कहानी में दोनों सौम्य हैं पर व्यावहारिक बिल्कुल नहीं। आपको ऐसी स्थितियों से बचना चाहिए। एक समय आता है जब आपको कोई न कोई फैसला जरूर लेना पड़ता। आपको कभी भी कर्कश शब्दों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए लेकिन अपने कार्य के प्रति समर्पित रहना चाहिए। इंसान दृढ़ फैसला नहीं लेता बल्कि मजबूत फैसले ही इंसान को दृढ़ बनाते हैं।

सफल लोग जिंदगी को वरदान की तरह जीते हैं। वे हर सैकेंड जिंदगी का लुत्फ उठाते हैं। वे हर हाल में खुश रहना जानते हैं। व्यर्थ की बातों में वे समय नहीं गंवाते। वे अपने विचारों पर स्वयं तो अडिग रहते ही हैं। साथ

ही दूसरों को भी नये विचारों से लाभ उठाने की सलाह देते हैं।

हमेशा हंसते-मुस्कराते हुए, प्रेम के साथ अच्छी जिंदगी बिताते हुए उन्होंने सफलता हासिल की।

किसी भी आदमी को सफल बनाने में उसका व्यवहार बहुत मायने रखता है। एक तनावग्रस्त आदमी को सफलता देरी से मिलती है जबकि सरल व सहज रहने की स्थिति में सफलता जल्द मिलने की उम्मीद होती है। यह उसके सकारात्मक नजरिए को दर्शाता है।

इस शहर के एक बड़े संस्थान से इस्तीफा देने के बाद मैंने जो दूसरा संस्थान ज्वाइन की, वह पहले वाले से काफी छोटा था। काम भी बहुत कम था। एक महीने के भीतर खुद को सैटल करते हुए मैंने नतीजा देना शुरू कर दिया। अब मैं अक्सर अपने मेल चेक करने के अलावा बाकी समय में खाली बैठा रहता। समय का सदुपयोग करना अब समस्या बन रही थी। मैं कभी खाली नहीं बैठा रह सकता।

मैंने खाली समय को उपयोग में लाने का एक सटीक तरीका खोज निकाला। मैंने अपने तजुबों और विचारों को लिखकर एक किताब की शक्ल दी लेकिन शुरुआत में मैंने कभी प्रकाशन कार्य के बारे में नहीं सोचा था। मेरी पहली किताब “क्रैक द शेल दैट कवर्स यू” को पूरा करने में मुझे एक साल लग गया, यद्यपि मेरी दूसरी किताब, “व्हाट इफ यू डाई टुमारो” पहले प्रकाशित हुई। मेरी तीसरी किताब “सक्सेस इज नाट बाई चांस” जो हिन्दी व इंग्लिश दोनों में प्रकाशित हुई, ने मुझमें सकारात्मक मूल्यों का संचार किया, जो सौम्यता से हमारे आस-पास विद्यमान है। आप यकीन मानिए, जब मेरी एक भी किताब नहीं छपी थी तब भी मैं निराश नहीं था। आज मेरी लिखी पांचवीं किताब आपके हाथ में है और मैं हर उस व्यक्ति का शुक्रिया अदा करना चाहूंगा। जिसने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तौर पर मुझे सफल बनाने में योगदान दिया है। सफलता की राहें कभी बंद नहीं होती। लेकिन आपको परिवर्तन के लिए बिल्कुल तैयार रहना होगा। यही नियम है।

7.5 चरित्र का मूल्य

आपका चरित्र लोगों को बताता है कि आप क्या हैं। आपका चरित्र ही आपका व्यक्तित्व बताता है। आपको कई बार ऐसे लोग मिले होंगे जो अपने

बारे में हांकते तो ज्यादा हैं पर वास्तविकता कुछ और होती है। आपने वह कहावत भी जरूर सुनी होगी कि कुछ देर के लिए तो आप किसी को बेवकूफ बना सकते हैं पर ज्यादा समय तक आप कोई भी सच्चाई छिपा नहीं सकते। सफल होने और विजेता बनने के लिए किसी असाधारण गुण की नहीं बल्कि साधारण गुणों के होने की ही जरूरत होगी, जो हम और आप में हैं। परन्तु केवल गुण नहीं बल्कि आप जो चाहते हैं, उसके प्रति आपमें समर्पण कितना है, वह सफलता की निशानी है।

समय बीतता गया और लोग जुड़ते गए। मैं छात्रों को भी सहूलियत प्रदान करना चाहता था और इस क्रम में दाखिले से पहले व्यक्तिगत तौर पर छात्रों से मिलकर उनका दाखिला उसी क्लास में करता, जिसके लिए वे योग्य होते। मैं प्रतिभा के अलावा दूसरी चीजों को तरजीह देकर दाखिला देने के पक्ष में नहीं रहता। मैंने संचालकों को स्पष्ट बता दिया कि स्कूल के कुछ मानक बनाए रखने के लिए एक सीमा से ज्यादा दाखिला नहीं लिए जा सकते।

कुछ समय के बाद मुझे इन मूल्यों के साथ थोड़ा समझौता करने के लिए कहा गया तो मैंने यह कहते हुए काम छोड़ दिया कि इससे गुणवत्ता प्रभावित होगी। मैंने बड़ी विनम्रता से उन्हें समझाया, क्योंकि कभी भी आपको दृढ़ता अपने शब्दों में नहीं बल्कि अपने कार्यों में दर्शानी चाहिए।

हर इंसान में कुछ खासियतें होती हैं और यही खूबियां उसके चरित्र को इंगित करती हैं। आप ऐसा नहीं सोच सकते कि आपसे पहले व्यक्ति ने यह किया था इसलिए मैं भी ऐसा कर रहा हूं। चरित्र की तुलना करने से नतीजे नहीं हासिल किए जा सकते। अगर चरित्र की नकल करने से व्यक्ति सफल होता तो हर राजनेता नेहरू या पटेल और हर शिक्षक राधाकृष्णन, सर अब्दुल कलाम की तरह बन जाता। यहां तक कि जुड़वां बच्चों में भी आपस में चारित्रिक फर्क होता है। ईश्वर ने आपको कुछ खूबियां प्रदान की हैं और आपको उस चरित्र के आधार पर आगे बढ़ना चाहिए।

आप किसी महापुरुष की आत्मकथा पढ़िए, आपको दूसरे के मुकाबले उनके चरित्र में कोई समानता नहीं मिलेगी।

हिटलर का छोटा कद सेना और देश पर शासन में कभी आड़े नहीं आया। अकबर को 'महान' साबित करने में शिक्षा आड़े नहीं आई। वर्तमान में, आईएएस के नतीजे आने पर आप देखते हैं कि बहुत-से गरीब व मध्यवर्गीय परिवारों के छात्र उसमें चुने जाते हैं। यह उनकी चारित्रिक

विशेषता होती है कि वे अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़निश्चयी बने रहते हैं। सभी तरह की नकारात्मकता के बावजूद धीरूभाई ने वह हासिल किया, जो उन्होंने चाहा। आप कह सकते हैं कि एक दशक में कितने ही लोगों ने इस कहानी को दोहराया होगा लेकिन हर दोहरायी गई कहानी धीरूभाई अंबानी की याद नहीं दिलाएगी।

सफल लोग नई राह प्रदर्शित करते हैं, उसी राह पर चलते हुए आप सारे फैक्टर्स समान रहने के बावजूद सफलता की उस कहानी को दोहरा नहीं सकते। आपको अपनी राह स्वयं से प्रदर्शित करनी होगी। आपके चरित्र में आपकी हकीकत झलकनी चाहिए। आप जिसे बतौर उदाहरण लेते हैं उनमें जो क्षमता है, आपमें भी उससे कोई कम क्षमता नहीं है। आप जब किसी आदर्श व्यक्ति के चरित्र का पोस्टमार्टम करेंगे तो आप यह जानकर हैरान होंगे कि आपमें उनसे ज्यादा व्यक्तिगत गुण हैं। मुख्य बात यह है कि आपने कभी अपना समालोचक के तौर पर विश्लेषण नहीं किया है, अन्यथा आपकी भी विजेता बनने की यात्रा आरंभ हो गई होती। अभी भी कोई देरी नहीं हुआ है, आप खुद को विजुअलाइज करिए और आगे बढ़िए।

कामयाब होने के लिए अपना कार्यक्षेत्र बदलने की भी जरूरत नहीं है। हर क्षेत्र में कामयाब लोगों की लिस्ट काफी होती है। कौन जानता था कि बिहार से आए एक साधारण आदमी डा. बिन्देश्वरी पाठक एक ऐसे क्षेत्र में कामयाबी हासिल कर लेंगे, जिसकी आम आदमी सार्वजनिक तौर पर चर्चा नहीं करना चाहता। "सुलभ शौचालय" के रूप में उन्होंने एक आंदोलन चलाया और देखिए आज परिस्थितियां कहां पहुंच गईं और वे कितने कामयाब इंसान हैं। आपको इस तरह के और भी बहुत सारे उदाहरण मिल जाएंगे। केवल एक चीज, जिसे हम खो रहे हैं, वह है अपने चरित्र की कीमत का आकलन हम नहीं कर पाते।

किसी भी व्यक्ति की सफलता या असफलता का मुख्य कारक उसका अपना चरित्र ही होता है।

इस मोड़ पर समय को गंवाना आपको सफलता की यात्रा से दूर धकेल देगा। असफल और नाकामयाब लोग वही हैं जो केवल सोचते हैं, लेकिन कभी शुरुआत नहीं करते। कोई भय मत करो। ईश्वर तुम्हारे भीतर है। ईश्वर ने आपको मुनष्य के रूप में जन्म दिया है और वह सदैव आपको सहारा प्रदान

करेगा। बस जरूरत है तो शुरुआत करने की, वह आपका साथ हर मोड़ पर देगा। अपने भीतर कभी भी ऐसी सोच न पैदा होने दें कि आप समस्याओं को सुलझाने में कामयाब नहीं हो सकते, आपमें वह क्षमता है जो हर आने वाली समस्या का सामना कर सकती है। सोचने में ज्यादा समय न गंवाएं। आपका समय अब शुरू हो चुका है और आप अपने अवसर को पकड़िए। यह आपका अंतिम चांस है, अब नहीं तो कभी नहीं। फैसला आपका है।

7.6 दया भावना की शक्ति

दया भावना इंसान की एक ऐसी खूबी है जो उसे स्वतः अच्छाईयों की ओर ले जाती है। इसमें किसी को क्षमा करने की भावना आपको ऐसी प्रवृत्ति की ओर ले जाती है कि नुकसान पहुंचाने वाले को भी आप क्षमा कर सकें। आप महसूस कर सकते हैं कि ऐसा कहना तो आसान है पर व्यावहारिक रूप में लाना मुश्किल। आपका कहना सही है, लेकिन आप कुछ विशेष हैं, इसलिए आप ऐसा कर सकते हैं।

‘रामायण’ में भी इसी बात की चर्चा है। इस धर्मग्रंथ में भी क्षमा को महान बताया गया है। क्षमा करने वाला महान होता है। कई बार जब आपके पास पद व शक्ति होती है तो आप लोगों को क्षमा करना से इंकार कर देते हैं। आप सोचते हैं कमजोर आपके अधीन हैं। वास्तव में, ऐसा करने से आप में और दूसरों में फिर क्या फर्क रह पाएगा। आप अपने विचार स्वयं बनाएं और कभी भी दूसरों की टिप्पणियों से व्यथित न हों।

दयालुता एक क्रिया है और संपूर्ण जानवर प्रजाति केवल दयालुता की भाषा को समझती है। यहां तक कि दयालुता दिखाने पर जंगल का राजा शेर भी सर्कस में रिंग मास्टर के साथ काम करने को तैयार हो जाता है। आप किसी पर भी दयालुता प्रकट करके उसे अपना वफादार बना सकते हैं लेकिन आपको इससे बदले में कुछ हासिल करने के बारे में नहीं सोचना चाहिए। “चूहा और शेर” की प्रसिद्ध कहानी में शेर चूहे की मदद की बात सुनकर हंस कर उसे छोड़ तो देता है पर उसे विश्वास नहीं होता कि एक चूहा उसकी मदद कर सकता है, परन्तु प्रकृति उसे समझा देती है। जब शिकारी शेर पर जाल फेंककर उसे पकड़ लेता है। तब चूहा ही शेर का जाल काटकर उसकी जान बचाता है। ऐसी परिस्थितियां कई बार हमारे साथ भी होती हैं लेकिन हम उन पर ध्यान नहीं दे पाते।

मैंने सामने से एक लड़के को आते देखा, उसके पीछे एक भेड़ दौड़ती चली आ रही थी। “कोई आश्चर्य नहीं है कि भेड़ निरंतर तुम्हारे पीछे-पीछे चल रही है।” भेड़ की ओर इशारा करते हुए मैंने आगे कहा— “तुमने उसके गले में रस्सी बांधकर उसे खुद से जोड़ रखा है।” लड़का हंसा और उसने भेड़ के गले से रस्सी खोल दी। और फिर चल दिया।

जैसे ही लड़के ने आगे बढ़ने के लिए कदम बढ़ाया भेड़ उसके बिल्कुल नजदीक आ गई और फिर उसके पीछे-पीछे चलने लगी। वह नवयुवक हंसा और भेड़ को थोड़े जौ दिये और बोला “आप ठीक कह रहे हैं। लेकिन जैसा कि आप देख रहे हैं, इसे मेरे पीछे चलाने वाली रस्सी का नाम है ‘दयालुता’।”

दया भावना आपके कार्यों में झलकनी चाहिए। यही आपके चरित्र की पहचान है। यह आपके व्यक्तित्व को मजबूती प्रदान करती है। कभी ऐसा न सोचें कि जरूरत पड़ने पर वह व्यक्ति आपकी कोई मदद नहीं करेगा, और न ही कभी मन में बदले की भावना पालें। ऐसा करने से आप अपनी कीमती ऊर्जा को बेकार की चीजों में उलझाए रखेंगे। ऐसा सोचने की बजाय बदले की भावना को जल्द से जल्द अपने मन से निकाल फेंकें।

हम विश्वास करते हैं कि दया दिखाना और दानशीलता अच्छी बात है लेकिन समय आने पर परिस्थिति का विश्लेषण करके इन अच्छे कामों को कुछ समय के लिए रोक दें। ऐसा केवल आपके साथ ही नहीं, हम सबके साथ होता है। हम में से कुछ लोग जल्द ही ऐसी स्थितियों पर काबू पा लेते हैं तो कुछ देरी से। कुछ लोग किसी भिखारी को कुछ भीख देना और इसी तरीह की दूसरी क्रियाओं को ही दयालुता समझते हैं लेकिन ऐसे कार्य दयालुता की श्रेणी में नहीं आते। आप ऐसा स्वर्ग में अपना स्थान सुरक्षित करने के लिए करते हैं।

दयालुता में विश्वास करने वाले लोग खास नहीं होते, बस उनमें खास तरह की सोच होती है। वे इस बात में आस्था रखते हैं कि जैसे प्रकृति ने हमें बदले में बिना कुछ वापस मिलने की उम्मीद के बहुत कुछ दिया है। वैसे ही हमें भी दूसरों पर दया दिखानी चाहिए। एक बार अगर आपमें यह गुण पैदा हो गया तो यह आपका चरित्र बदल देगा और आपको अपने अंदर

एक अज्ञात शक्ति महसूस होगी। आप अपनी क्रियाओं से प्रोत्साहित होकर स्वयं मजबूत बन जाएंगे।

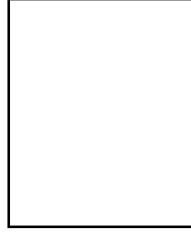
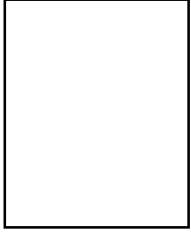
आपने हिंदी फिल्मों में देखा होगा कि बचपन में जब एक अभिनेता या उसके परिवार के साथ कुछ बुरा घटना है तो वह उसके जीवन को उथल-पुथल कर देता है। और अभिनेता बिना अपने भविष्य की परवाह किए हुए किसी भी कीमत पर विलेन से मुठभेड़ जारी रखता है। इसमें कोई शक नहीं कि हीरो का कार्य उसके दृढ़निश्चय और जुनून को दर्शाता है लेकिन यह नकारात्मक भी है। अगर वह अपनी ऊर्जा का सकारात्मक इस्तेमाल करता तो वे विलेन को अच्छाई का पाठ पढ़ा सकता था। मैं आपको डरपोक बनने की सलाह नहीं दे रहा हूँ, लेकिन दयालुता से यह आप जीत सकते हैं। यहां तक कि हारी हुई लड़ाई भी। इसका सबसे बड़ा उदाहरण “राष्ट्रपिता” महात्मा गांधी हैं, जिन्होंने अंग्रेजों को भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया। उन्होंने दयालुता के आशीर्वाद और अहिंसा के बलबूते यह सब किया। यह अलग मुद्दा है कि हम भारतीय गांधीजी के कई कार्यों की आलोचना करने से नहीं चूकते।

आज सफलता का मतलब केवल धनी व संपन्न होने से लगाया जाने लगा है चाहे आप कैसे भी उस संपत्ति कमा रहे हों, ऐसे में दया भावना जैसे गुण पीछे छूट रहे हैं। लेकिन जो लोग वास्तव में सफलता की ओर अग्रसर हैं वे इस गुण में विश्वास रखते हैं। भले ही आम लोग न करें। अगर आप स्थायी सफलता चाहते हैं तो फिर आपको यह गुण अपनाना होगा। उस आदमी को कभी मत भूलें, जिसने आपके प्रति कृपा दिखायी हो।

कृपा करने की भावना आप केवल बाहरी लोगों के प्रति ही नहीं, बल्कि अपने परिवार में भी दिखा सकते हैं। आपको थोड़ा अजीब लगेगा पर आपको इसे प्रदर्शित करने के कई मौके मिलते हैं। जब आपके बच्चे को आपकी जरूरत होती है और आप अपने ऑफिस या बिजनेस के सिलसिले में घर से बाहर होते हैं तो उसे यह एहसास दिलाते हैं कि उसी के लिए आप ऐसा कर रहे हैं। क्या आप सोचते हैं कि यह न्यायोचित है? नहीं, किसी भी कीमत पर नहीं, आपको निश्चित तौर पर अपने बुजुर्ग माता-पिता पर कृपा दर्शानी चाहिए और उनके साथ कुछ समय बैठकर उनका कुशल-क्षेम पूछना चाहिए।

ये सभी क्रियाएं आपके चरित्र को महान बनाएंगी और एक समय आएगा जब आप किसी भी तरह की समस्या से घिरे होने पर उसका समाधान खोज लेंगे। मैं मानता हूँ कि आपमें यह खासियत है लेकिन अगर ऐसा नहीं है तो आज ही से ऐसा करना, दयालुता प्रदर्शित करना शुरू कर दीजिए। ●

लेखकों के बारे में



सन् 1965 में जन्मीं श्रीमति इंदु पांडेय एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं, जिन्होंने अपने स्वर्गीय ससुर श्री एस.पांडेय की स्मृति में वर्ष 1995 में गुणवत्तायुक्त शिक्षा के क्षेत्र में पांडेय एजुकेशन ट्रस्ट की स्थापना की अवधारणा तैयार की। श्री एस. ए. पांडेय जाने माने शिक्षाविद व सामाजिक कार्यकर्ता रह चुके हैं। सन् 1956 में जन्में पेशे से शैक्षिक प्रशासक डा. एस. के. पांडेय, पांडेय एजुकेशन ट्रस्ट के सीईओ हैं। डॉ. पांडेय शिक्षकों को प्रेरणाप्रद प्रशिक्षण मुहैया कराते हैं और अब तक उन्होंने 2000 से ज्यादा शिक्षकों को अपनी सेवा प्रदान की है। जाने-माने जर्नल्स में उनके 35 से ज्यादा शोधपत्र छप चुके हैं। इंटरनेशनल स्कूल ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट, ज्ञान विहार यूनिवर्स, जयपुर में वे बतौर विजिटिंग फ़ैकल्टी और डाल्मिया शिक्षा समिति, चिरावा राजस्थान के सचिव हैं। श्रीमति पांडेय को मानव संसाधन में महारत हासिल है और वे अपनी सेवाएं लेने वालों को उनकी जरूरत के मुताबिक बेहतर कार्य योजना तैयार करने में सहयोग प्रदान करती हैं। किसी भी तरह की कार्य योजना को हैंडल करने की उनकी योग्यता है।

इस किताब में किसी भी तरह के सुधार की आपसे अपेक्षा की जा रही है। आप हमसे किसी भी शैक्षिक प्रशिक्षण व प्रोजेक्ट्स के लिए edustrust@rediffmail.com पर संपर्क कर सकते हैं। हम अपनी ओर से जल्द जवाब भेजने की कोशिश करेंगे।

लेखक की अन्य पुस्तकें : व्हाट इफ यू डाई टुमारो? क्रेक द शैल दैट कवर्स यू और सक्सेस इज नॉट बाई चांस (इंग्लिश), जिद करो और सफलता पाओ (हिंदी में)।